लेखक की अन्य कृतियाँ

- कर्तव्य
- हर्ष
- प्रकाश
- सिद्धान्त स्वातन्त्र्य
- स्पर्द्धा
- नाट्य कला मीमासा

सप्त-रश्मि

[सात एकांकी नाटकों का एक संग्रह]

लेखक

गोविन्ददास

किताबिस्तान

इलाहाबाद

प्राक्कथन

प्राचीन काल में एकांकी

पूर्व मे जहाँ सबसे पहले नाटक का विकास हुआ उस भारतीय साहित्य और रगमच के लिये एकाकी नाटक कोई नई चीज नही है। सस्कृत के साहित्यज्ञो ने रूपक के दो भेद किये थे—एक रूपक और दूसरा उपरूपक। रूपक के दस और उपरूपक के अठारह भेद किये गये थे। रूपक के दस भेदो मे निम्नलिखित तीन भेद एकाकी नाटक के थे—

(१) व्यायोग, (२) अक, (३) वीथी।

व्यायोग मे वीररस को प्रधानता रहती थी। उसमे स्त्री पात्र या तो बिलकुल नही रहते थे या बहुत कम। इस नाटक का एक अक होता था। एक विचार (आइ-डिया) पर सारा कार्य चलता था और नाटक की सारी घटना का समय भी एक ही दिन होता था।

अक मे करुणरस प्रधान होता था। इसमे प्राय. स्त्रियो के शोक का वर्णन रहता था। उसमे भी एक ही अक होता था, एक ही विचार पर नाटक की सृष्टि होती थी और घटना का समय भो एक ही दिन रहता था।

वीथी श्रृगार रस प्रधान रहता था। यह भी एकाकी होता था और एक ही विचार का विकास होकर नाटक की सारी घटनाएँ एक ही दिन में समाप्त हो जाती थी।

उपरूपको के अठारह भेदो मे से निम्नलिखित दस भेद एकाकी नाटक के थे—

(१) गोष्ठी, (२) नाट्य रासक, (३) उल्लाप्य, (४) काव्य, (५) रासक, (६) प्रेखण, (७) श्री गादित, (८) विलासिका या विनायका, (९) हल्लीश और (१०) भाणिका।

प्राचीन सस्कृत साहित्य में एकाकी यथेष्ट संख्या में मिलते है। कुछ प्रसिद्ध नाम यहाँ दिये जाते हैं—'सौगन्धिका हरण' (व्यायोग), 'सर्मिष्ठा ययाति.' (अक), 'रैवत मदनिका' (गोष्ठी), 'विलासवती' (नाट्य रासक), 'देवी महादेवं' (उल्लाप्य), 'मेनिकाहित' (रासक), 'बालिवध.' (प्रेंखण), 'क्रीडा रसातल' (श्री गादित), 'विन्दुमती' (विलासिका), 'केलिरैवतक' (हल्लीश), 'कामदत्ता' (भाणिका)।

पश्चिम मे नाटक का सबसे पहले यूनान मे विकास हुआ था। यूनान में नाटकों का विश्लेषण उस बारीकी से नही किया गया था जैसा भारतीय साहित्य में। अरस्तू ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ—'पोइटिक्स' में नाटक के दो भेद किये थे—'ट्रेजिडी' और 'कामेडी' अर्थात् वियोगान्त और संयोगान्त नाटक। यूनान के सर्व प्रथम प्रधान नाटककार

एसचीलस के नाटको को हम देखे तो जान पडता है कि उसके सभी नाटक एकाकी हैं। एसचीलस के बाद सोफो क्लीज के नाटक भी एकाकी ही कहे जा सकते हैं। बात यह है कि यूनान के नाटको की रचना 'सकलनत्रय' या 'समक' (यूनिटीज) की चहारदीवारी के अन्दर होती थी अर्थात् वहाँ के साहित्यज्ञो ने यह नियम बनाया था कि आरभ से अन्त तक सारे नाटक की रचना इस प्रकार होना चाहिए जिससे यह जान पडे कि वह नाटक किसी एक ही स्थान पर हो रहा है, उसकी अवधि भी एक ही दिन की घटना तक परिमित है और वह एक ही कृत्य के सबंध मे है। इसे साहित्यज्ञो ने 'सकलनत्रय' या 'समक' (यूनिटीज) नाम दिया था। फिर वहाँ के नाटको मे भारतीय नाटको के सदृश्य अक तथा विष्कभक, प्रवेशक आदि विभाजन भी न थे। अतः अको मे विभाजित न किये हुए तथा सकलनत्रय से बँधे हुए नाटक को, चाहे वह बडा हो या छोटा, एकाकी नाटक ही कहा जा सकता है।

एकांकियों का अर्वाचीन विकास

अर्वाचीन एकाकी नाटको का विकास पश्चिम मे आरभ हुआ। पहले इन्हे 'कर्टन राइजर' कहते थे। पूरे नाटक के आरभ मे एक छोटा सा एकाकी नाटक खेला जाता था। प्रायः यह हास्यरस का होता था। इसका मिलान हमारे

यहाँ की पारसी कपनिया अपने पूरे नाटक के अन्त मे जो 'नकल' नाम से हास्यरस के छोटे छोटे नाटक खेलती थी, उनसे किया जा सकता है। पश्चिम मे एकाकी नाटक का सच्चा विकास गत योरपीय महायुद्ध के बाद सन् १९१८ से हुआ। ग्रेट ब्रिटेन मे इस विकास का सच्चा आरभ सन् १९२४ मे मि० जे० एस० मेरियट ने किया। उसने अंग्रेज़ी नाट्य जगत के विकास के लिये जो कुछ किया वह वहाँ के आधुनिक एकाकी नाटको के विकास और प्रचार की नीव थी। फिर तो धीरे धीरे वहाँ एकाकी नाटको की रचना और प्रचार की बाढ सी आ गई। वर्तमान युद्ध के कुछ समय पहले मैने पढा था कि ब्रिटिश ड्रामा लीग ने नाटको की एक होड (कापिटीशन) कराई थी। इस एक होड मे वहाँ की ६०० मडलियो ने भाग लिया था और इनमे से अधिकाश ने एकाकी नाटक खेले थे। पश्चिम में एकाकी नाटको पर छोटे छोटे सिनेमा-फिल्म भी बनाये जाने लगे है, जो पूरे फिल्म के पहले दिखाये जाते है।

वहाँ के एकाकी नाटको के तीन भेद किये गये है—'वन ऐक्ट प्ले', 'स्कैच' और 'रेडियो ड्रामा'। तीनो मे बहुत थोडा अन्तर है और तीनों की लेखनशैली (टैकनीक) प्रायः एक ही सी है।

पराधीनता के कारण हम तो हर बात मे पश्चिम के पीछे चलते है। पश्चिम का अनुकरण कर हमारे देश मे भी

एकाकी नाटको की रचना हो रही है। बगाली, मराठी, गुजराती और हिन्दी सभी भापाओ मे इस समय एकाकी नाटक लिखे जा रहे है।

इस विकास के कारण

इस समय ससार मे सभी जगह एकाकी नाटको की इस भरमार के दो प्रधान कारण हैं—(१) जनता को अन्य कामों के कारण मनोरजन के लिये बहुत कम अवकाश है। इसीसे अमेरिका मे एकाकी नाटक बहुत प्रिय है। (२) रेडियो का प्रचार बहुत बढ गया है और बढ रहा है। रेडियो के लिये एकाकी नाटक बहुत उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

एकांकी की लेखन पद्धति (टैकनीक)

उपन्यास और कहानी की लेखन पद्धति (टकनीक) मे जो अन्तर है वही फर्क पूरे नाटक और एकाकी की लेखन पद्धति मे है।

पूरे नाटक के लिये 'सकलनत्रय', जो नाटयकला के विकास की दृष्टि से बड़ा भारी अवरोध है, वही 'सकलनत्रय' कुछ फेर फार के साथ एकाकी नाटक के लिये जरूरी चीज है। 'सकलनत्रय' मे 'सकलनद्वय' अर्थात् नाटक एक ही समय की घटना तक परिमित रहना तथा एक ही कृत्य के सबध मे होना तो एकाकी नाटक के लिये अनिवार्य है। जो यह

समझते हैं कि पूरे नाटक और एकाकी नाटक का भेद केवल उसकी बडाई छुटाई है, मेरी दृष्टि से वे भूल करते है। एकाकी नाटक छोटे ही हो, यह जरूरी नही है, वे बडे भी हो सकते है। बडे एकाकी का चाहे रेडियो मे या उसी प्रकार के थोड़े समय के दूसरे आयोजनो मे उपयोग न हो सके, किन्तु बडे होने पर भी वह एकाकी हो सकता है। एकाकी नाटक में एक से अधिक दृश्य भी हो सकते है, पर यह नही हो सकता कि एक दृश्य आज की घटना का हो, दूसरा पन्द्रह दिनो के बाद की घटना का, तीसरा कुछ महीनो के पश्चात् का और चौथा कुछ वर्षों के अनन्तर। यदि किसी एकाकी मे एक से अधिक दृश्य होते है तो वे उसी समय की लगातार होने वाली घटनाओ के सबन्ध में हो सकते है। 'स्थल सकलन' जरूरी नही है, पर 'काल सकलन' होना ही चाहिए। किसी किसी एकाकी नाटक के लिये भी 'काल सकलन' अवरोध हो सकता है। ऐसी अवस्था में 'उपक्रम' या 'उपसहार' की योजना होनी चाहिए। इस सग्रह मे सग्रहीत नाटकों में से कुछ मे मैने 'उपक्रम' और 'उपसहार' दोनो का, तथा किसी में एक का उपयोग किया है। 'उपक्रम' और 'उपसहार' का उपयोग सिर्फ 'काल सकलन' के अवरोध से बचने के लिये ही नही है। कभी कभी 'काल सकलन' रहते हुए भी इनका उपयोग हो सकता है जैसा मैने 'अधिकार लिप्सा' मे किया है। मेरे मत से इस प्रकार के उपयोग से भी नाटक का

सौंदर्य बढ जाता है, पर इस प्रकार का उपयोग अनिवार्य नही। 'काल सकलन' को तोडकर यदि अधिक दृश्य रखना आवश्यक हो तो मेरा मत है कि 'उपक्रम' और 'उपसहार' अनिवार्य है। 'उपक्रम' और 'उपसहार' का उपयोग नाटक के आरभ या अन्त मे ही हो सकता है, अत बीच के दृश्यो मे तो मेरे मतानुसार एकाकी मे 'काल सकलन' रहना ही चाहिए। जो एकाकी रगमच पर खेले जावे उनमें दर्शको को 'उपक्रम' या 'उपसहार' की जानकारी हो जाय इसलिये यवनिका उठते ही एक दूसरे पर्दे पर 'उपक्रम' या 'उपसहार' का लिख देना आवश्यक है और यवनिका के उठने के बाद यह परदा भी उठा दिया जाय। रैडियो मे 'उपक्रम' या 'उपसहार' की सूचना शब्दो में दी जा सकती है। आरभ मे यह प्रथा कुछ विलक्षण सी जान पडेगी, परन्तु धीरे धीरे आंखे और कान इसके लिये अभ्यस्त हो जायँगे। जिस प्रकार यवनिका गिरते समय हम यह जान जाते है कि नाटक का अक समाप्त हो रहा है और दूसरे अक मे सभव है हम कुछ महीनो या कुछ वर्षों के बाद की घटना देखें उसी प्रकार 'उपक्रम' या 'उपसहार' पढते या सुनते ही हमें मालूम हो जायगा कि नाटक की मुख्य घटना और उसके बीच शायद कुछ काल, चाहे वह दिन, महीने या वर्ष हो, बीतने वाला है या बीत गया है। जिन एकांकी नाटको के सिनेमा-फिल्म बने उनमें तो 'उपक्रम' और 'उपसहार' सहज

मे लिखा जा सकता है, क्योकि फिल्मों मे तो अक्षरो मे लिखी हुई चीज़ को पढने के लिये हमारी आँखे अभ्यस्त हो गई है। मैंने अब तक 'उपक्रम' और 'उपसहार' का इस प्रकार का उपयोग पश्चिमी या भारतीय नाटको मे नही देखा। किसी नाटक को पढते समय 'उपक्रम' और 'उपसहार' खटक भी नही सकते। खेलने के समय इनका उपयोग एक विवाद ग्रस्त प्रश्न हो सकता है, परन्तु मेरे मत से खेलते समय भी उपर्युक्त पद्धति से इनका उपयोग किया जा सकता है। मैं जानता हूँ कि यह विषय विवाद ग्रस्त है, परन्तु बहुत कुछ सोचने विचारने के बाद मैंने इसे विद्वानो के सम्मुख रखने का साहस किया है। 'काल सकलन' को एकाकी के लिए अनिवार्य मानने के कारण तथा वह एकाकी कला के विकास के लिए अवरोध भी न हो, इसलिए मैं इस उपाय को विद्वानो के सम्मुख रख रहा हूँ। अपने एक पूरे नाटक 'प्रकाश' मे भी मैंने 'उपक्रम' और 'उप-सहार' का उपयोग किया था। उस उपयोग पर अनेक साहि-त्यज्ञो से मुझे बधाइयाँ मिली थी, परन्तु वह उपयोग 'सामजस्य' या 'सादृश्य' (सिबालिज़िम) के लिए किया गया था। उस उपयोग मे और इस सग्रह के एकाकी नाटको मे 'उपक्रम' और 'उपसहार' का जो उपयोग हुआ है, उसमे बहुत अन्तर है। मै 'उपक्रम' और 'उपसहार' का उपयोग अपने एकाकियो मे सफलता पूर्वक कर सका हूँ या नही इसपर कुछ भी कहने का मुझे कोई अधिकार नही है।

इस प्रकार के 'सकलनत्रय' की चहारदीवारी से घिरे हुए एकाकी नाटक मे कुछ अन्य बातो पर भी ध्यान रखने की आवश्यकता है ।

एक ही 'विचार' (आइडिया) पर एकाकी नाटक की रचना हो सकती है। विचार के विकास के लिये जो 'सघर्ष' (कॉनफ्लिक्ट) अनिवार्य है, उस सघर्ष के पूरे नाटक मे कई पहलू दिखाये जा सकते है, पर एकाकी मे सिर्फ एक पहलू। इस विचार और सघर्ष की सबद्धता और मनोरजकता के लिए जिस 'कथा' की सृष्टि होती है उस कथा के भी पूरे नाटक मे अनेक पहलू प्रदर्शित किये जा सकते है, यहाँ तक कि उपकथाओ के द्वारा, जिन्हे नाटच शास्त्र मे 'पताका' और 'प्रकरी' कहते है, मुख्य कथा को सहायता दी जा सकती है, परन्तु एकाकी मे कथा के एक ही पहलू को लिया जा सकता है, उपकथाओ 'पताका' और 'प्रकरी' का एकाकी मे उपयोग नही किया जा सकता। कथा बिना पात्रो के नही हो सकती अत पात्रो का प्रादुर्भाव और उनका चरित्र चित्रण होता है। पूरे नाटक मे भी जितने कम चरित्र होगे उतना ही स्पष्ट और विशद चरित्र चित्रण होगा। हॉ, पूरे नाटक मे कुछ गौण पात्र मुख्य पात्रो के चरित्र चित्रण मे सहायक अवश्य हो सकते है। एकाकी मे तो मुख्य और गौण दोनो ही पात्रो की सख्या बहुत ही परिमित रहनी चाहिए। चूँकि नाटक की कथा लेखक के द्वारा नही कही जा सकती इसलिये पात्रो की

कृति और कथोपकथन ही उस कथा के कथन के साधन हैं। कथोपकथन को जितना महत्त्व पूरे नाटक में है उतना ही एकाकी में भी।

जिस एकाकी मे जितना बड़ा विचार होगा, उस विचार के विकास के लिये जितना स्पष्ट और तीव्र संघर्ष होगा, इस विचार और सघर्ष के लिये जितनी स्पष्ट और मनोरजक कथा होगी, जितने कम चरित्र और उन चरित्रो का जितना स्पष्ट और विशद चरित्र चित्रण होगा तथा जितनी स्वाभाविक कृति एव कथोपकथन होगे वह उतना ही सफल होगा।

रेडियो ड्रामा लिखते समय एक बात पर और ध्यान रखना आवश्यक है। रेडियो ड्रामा सिर्फ़ कान के लिए है, कम से कम अब तक जब तक टैलीविज़न का व्यापक उपयोग नही हो जाता। इसलिए ख़याल रखना चाहिए कि सुनने का जो प्रभाव हृदय पर पडता है वही उसमें मुख्य चीज़ है।

एकाकी नाटक के लिए जिन अन्य बातों पर ध्यान रखना ज़रूरी है वे सब प्राय. वे ही है जिन पर पूरे नाटक लिखते समय ध्यान रखना आवश्यक है। इनका कुछ विवेचन मैंने अपने 'तीन नाटक' के प्राक्कथन मे किया था। यह प्राक्कथन 'नाटचकला मीमासा' के नाम से पृथक् पुस्तिका के रूप मे भी छपा है। इन बातो मे सबसे प्रधान बात है—

स्वाभाविकता। नाटक के प्रदर्शन के कारण उसमे थोडी सी अस्वाभाविकता भी अक्षम्य है। 'अश्राव्य' (सॉलीलॉकी) और 'नियतश्राव्य' (एसाइड) दोनो प्रकार के स्वगत कथनो को एकाकी मे कोई स्थान नही मिल सकता। पद्य, कविता और नृत्य की भरमार भी एकाकी मे नही की जा सकती। इसका यह मतलब नही है कि पद्य, कविता या नृत्य का एकाकी मे स्थान ही नही है। पूरे नाटक के सदृश एकाकी मे भी ये कही स्वाभाविक रीति से आ सकते हो तो रखे जा सकते है, यद्यपि इस सग्रह के एक भी नाटक मे पद्य, कविता या नृत्य को स्थान नही मिल सका है। एकाकी को सर्वथा स्वाभाविक बनाने का हरेक प्रयत्न होना आवश्यक है।

श्रेष्ठ एकांकी किसे कह सकते हैं?

कौन कलाजन्य वस्तु श्रेष्ठ कही जा सकती है, इस सबन्ध मे मैने अपने 'तीन नाटक' के प्राक्कथन मे कुछ विवेचन किया था। इस विषय मे उस समय मेरा जैसा मत था, वैसा ही आज भी है। जो कसौटी अन्य कलाजन्य वस्तु की हो सकती है वही एकाकी नाटक की भी। इस कसौटी का दिग्दर्शन मैने इग्लैण्ड के एक प्रसिद्ध तत्त्ववेत्ता जॉन रास्किन के एक कथन को उद्धृत कर किया था। चूँकि इस सबन्ध मे उस दिन के और आज के मेरे मत मे कोई परिवर्तन नही

हुआ है, इसलिए उसी कथन को मै आज यहाँ भी उद्धृत करता हूँ। मेरा मत है कि जो एकांकी नाटक इस परिभाषा की कसौटी पर कसने से खरा उतरता है वही श्रेष्ठ एकाकी है। जॉन रास्किन लिखते हैं —

"अब मैं उत्तम कलाजन्य वस्तु की व्याख्या इतने व्यापक रूप से करना चाहता हूँ कि उसके अन्तर्गत उसके समस्त विभाग और उद्देश आ जावे। इसीलिए मैं यह नही कहता कि वही कलाजन्य वस्तु सर्वोत्तम है जो सबसे अधिक आनन्द देवे, क्योंकि किसी वस्तु का उद्देश कदाचित् शिक्षा देना हो और आनन्द देना न हो। मै यह भी नही कहता कि कलाजन्य वही वस्तु सर्वश्रेष्ठ है जो सबसे अधिक शिक्षा देवे, क्योकि किसी वस्तु का उद्देश कदाचित् आनन्द देना ही हो और शिक्षा देना न हो। मै यह भी नही कहना चाहता कि कलाजन्य वही वस्तु सबसे अच्छी है जिसमे सबसे अधिक अनुकरण किया गया हो, क्योकि कदाचित् कोई वस्तु ऐसी हो जिसका उद्देश नवीनता का निर्माण करना हो और अनुकरण करना न हो। और मैं यह भी न कहूँगा कि कलाजन्य वही वस्तु सर्वोत्कृष्ट है जिसमें सबसे अधिक नवीनता हो, क्योंकि कदाचित् कोई वस्तु ऐसी हो जिसका उद्देश अनुकरण करना हो और नवीनता का निर्माण नही। मै तो उस वस्तु को कला की सबसे महान् वस्तु मानता हूँ जो किसी

भी मार्ग-द्वारा हृदय मे सबसे अधिक और सबसे महान् विचारो को उत्पन्न कर सके ।"

जबलपुर
तिलक-जयन्ती
१ अगस्त, १९४०

गोविन्ददास

सूची

धोखेबाज़

पात्र, स्थान

मुख्य पात्र—

(१) दानमल—एक व्यापारी
(२) रूपचन्द—दानमल का मुनीम
(३) कैलाशचन्द्र—एक खान वाला
(४) नीलरतन—एक राइस मिल वाला
(५) मुमताजुद्दीन—एक मकान वाला
(६) लखमीदास } दानमल के मित्र
(७) कालीचरण }

स्थान—कलकत्ता

धोखेबाज़

पहला दृश्य

स्थान—दानमल का आफिस

समय—प्रात काल

[तीनों तरफ़ लकड़ी के पार्टीशन की दीवालें है जिनमें ऊपर की तरफ़ कॉच लगे है। पीछे की दीवाल में कोई दरवाज़ा नही है। आसपास की दीवालो के सिरों पर एक एक छोटा सा एक पल्ले का दरवाज़ा है जो बन्द है। इन दरवाज़ों में भी ऊपर की तरफ कॉच लगे है। कमरे के बीच में एक उसी तरह की पार्टीशन की दीवाल और है जिससे एक कमरे के यथार्थ में दो कमरे हो गये है। दोनो कमरो के बीच की पार्टीशन की दीवाल के बीच में भी एक दरवाज़ा है। यह भी बन्द है। दोनों कमरो के बीचों बीच एक एक बड़ी आफ़िस टेबिल रखी है। इन आफिस टेबिलो के ऊपरी भाग कॉच के तख़्ते से पटे है। उन पर लिखने पढ़ने का बेशकीमती सामान और स्टेशनरी सजे है। एक एक टाइमपीस घड़ी और एक एक घटी भी रखी है। दाहिनी तरफ़ के कमरे की

आफिस टेबिल पर छै टेलीफ़ोन एक लाइन में रखे हैं और बाईं ओर के कमरे की आफ़िस टेबिल पर सिर्फ एक टेली-फ़ोन है। हरेक आफिस टेबिल के पीछे की तरफ़ गद्दीदार आफ़िस चेअर है,—जिसका मुँह सामने की तरफ है। हरेक आफ़िस टेबिल के सामने की ओर चार चार गद्दीदार साधारण कुर्सियाँ रखी हैं, इनके मुँह आफ़िस चेअर की तरफ़ हैं। बाई ओर का कमरा खाली है दाहिने तरफ के कमरे में आफ़िस चेअर पर रूपचंद बैठा हुआ है। रूपचंद की उम्र करीब ४० साल की है। वह साँवले रंग और साधारण शरीर का व्यक्ति है। बाल कुछ कुछ सफेद हो चले हैं। सिर पर मारवाडी पगड़ी बाँधे और शरीर पर सफेद कुरता और धोती पहने है। रूपचन्द चश्मा लगाये हुए कुछ लिख रहा है। पीछे की पार्टीशन की दीवाल के पीछे से टाइप राइटरों की खट-खटाहट की धीमी आवाज आ रही है। दाहनी तरफ के दरवाजे को खोल चपरासी का प्रवेश। चपरासी के आते ही दरवाजा आप से आप बन्द हो जाता है। चपरासी सफेद रंग की वरदी पहने है। कमर में कमरपेटी है जिसपर अंग्रेजी में लिखा है—दानमल कंपनी। चपरासी हाथ में चाँदी की तश्तरी लिये हुए है जिसमें एक विजिटिंग कार्ड रखा है।]

रूपचन्द—(तश्तरी का कार्ड उठाकर उसे देख) भेज दो।

[चपरासी का उसी दरवाज़े से प्रस्थान। उसी दरवाज़े को खोल कैलाशचन्द्र का प्रवेश। कैलाशचन्द्र गोरे रंग का ऊँचा पूरा, मोटा ताजा आदमी है। उम्र है करीब पचास वर्ष। बाल आधे सफ़ेद हो गये है। काले रग की शेरवानी और चूड़ीदार पाजामा पहने है। सिर पर फ़ैल्ट कैप लगाये है। कैलाशचन्द्र को देखकर रूपचन्द खडे हो उससे हाथ मिलाता है। रूपचन्द अपनी कुर्सी पर और कैलाशचन्द्र सामने की एक कुरसी पर बैठता है।]

रूपचन्द—(टाइमपीस घड़ी देखते हुए मुस्करा कर) आप ठीक टाइम पर आये।

कैलाशचन्द्र—कलकत्ते मे टाइम कितनी बहुमूल्य वस्तु है इसे मै जानता हूँ, मुनीम जी।

रूपचन्द—मैने सेठ साहब से बाते कर ली है।

कैलाशचन्द्र—बहुत अच्छा।

रूपचन्द—उन्होने आपकी माइन्स लेना स्वीकार कर लिया है।

कैलाशचन्द्र—(अत्यन्त प्रसन्नता से) यह आपकी कृपा के कारण।

रूपचन्द—नही, कैलाशचन्द्र जी, एक तो वे यो ही उदार हृदय के मनुष्य है, दूसरे लडाई की इस तेजी मे उन्होने इतना रुपया कमाया है कि उनकी समझ मे नही आता कि उसे कहाँ लगावे।

कैलाशचन्द्र—मैंने आपसे एक प्रार्थना और की थी कि मुझे इस समय रुपये की अत्यधिक आवश्यकता है।

रूपचन्द—हाँ, उसके सबन्ध मे भी मैंने उनसे निवेदन कर दिया है। आप माइन्स उनके नाम ट्रान्सफर करने की उचित काररवाई कीजिए आपको पन्द्रह दिनों का एक लाख रुपये का पोस्टडेटेड चैक आज दे दिया जायगा।

कैलाशचन्द्र—**(अत्यन्त प्रसन्न होकर)** मै किन शब्दो मे आपको धन्यवाद दूँ, यह मेरी समझ मे नही आता, मुनीम जी। **(जेब से हजार रुपये के पाँच नोट निकाल कर टेबिल पर रखता है।)**

रूपचन्द—इसकी इस समय आवश्यकता नही है।

कैलाशचन्द्र—आप मुझे एक लाख रुपये का पोस्ट-डेटेड चैक दिलावे और मै यह छोटी सी सेवा भी न करूँ। दस हजार चैक सिकरने पर भेट करूँगा।

रूपचन्द—**(नोट उठाकर जेब में रखते हुए)** इच्छा आपकी। **(कुछ रुककर)** क्यो, कैलाशचन्द्र जी, माइन्स के ओर मे जितना परसैन्ट ताँबा, चाँदी और सोना रिपोर्ट्स मे लिखा है, वह तो बराबर है न ?

कैलाशचन्द्र—एक्सपर्ट्स की सारी रिपोर्ट्स आप देख चुके है। हिन्दुस्थान के ही नही विलायत तक के एक्सपर्ट्स की रिपोर्टें हैं।

रूपचन्द—**(मुस्कराकर)** एक्सपर्ट्स की रिपोर्ट!

कैलाशचन्द्र जी, ये रिपोर्टें कैसे मिल जाती हैं, यह तो आप और मै दोनो अच्छी तरह जानते है।

[रूपचन्द जोर से हँसता है। कैलाशचन्द्र भी हँसने में साथ देता है। चपरासी का तश्तरी में दूसरा विज़िटिंग कार्ड लिये हुए प्रवेश।]

रूपचन्द—(कार्ड को देखकर) विज़िटर्स रूम में बैठाओ। मै अभी मिलूँगा।

[चपरासी का प्रस्थान।]

रूपचन्द—अच्छा, आप विज़िटर्स रूम मे ठहरिये। सेठ साहब मार्केट खुलने के कुछ पहले अवश्य आ जाते हैं। उनके आते ही मैं आपका चैक दिला दूँगा।

कैलाशचन्द्र—(खड़े होते हुए) बहुत अच्छा। अनेक धन्यवाद। **(प्रस्थान।)**

[रूपचन्द घंटी बजाता है। चपरासी का प्रवेश।]

रूपचन्द—नीलरतन बाबू को भेज दो।

[चपरासी का प्रस्थान। नीलरतन का प्रवेश। नीलरतन करीब ६० वर्ष का काले रंग का बहुत ठिंगना पर अत्यन्त मोटा और कुरूप बंगाली है। सिर और मूँछो के बाल सफ़ेद हो गये हैं। वह कुरता और धोती पहने है तथा कुरते पर एक शाल ओढ़े है। रूपचन्द खड़े होकर नीलरतन से हाथ मिलाता है। रूपचन्द अपनी कुर्सी पर और नीलरतन उसके सामने की कुरसी पर बैठता है।]

रूपचन्द—बाबू, हॅमने ऑपका मॉमला मे सेठ से बॉत किया। ऊनको ऑपका रॉइस मिल लेना मजूर है।

नीलरतन—(**अत्यन्त प्रसन्नता से**) धॅन्यवॉद, मुनीम, बॅहोत बॅहोत धॅन्यवॉद। मूल्य ठो ठीक कॅर लिया?

रूपचन्द—हॉ, सॉठ सॅहस्र टॉका, बाबू।

नीलरतन—(**और भी प्रसन्नता से**) बॅहोत ठीक, बॅहोत ठीक।

रूपचन्द—ऑप सेलडीड का प्रॉबन्ध कॅरिये। पन्द्रा दीन मे सॅब हो जाय। ऑज ऑपका पॅन्द्रा दीन का पोस्टडेटेड चैक मील जॉयगा।

नीलरतन—पोस्टडेटेड चैक! बॅहोत, बॅहोत धॅन्यवॉद, मनीम, बॅहोत बॅहोत धॅन्यवॉद।

रूपचन्द—(**धीरे से**) अॅब हॅमारा हॅक्क?

नीलरतन—(**दो हज़ार के नोट टेबिल पर रखते हुए**) हॅम घॅर से लेकर चॅला था। पॉच शॅहस्र चैक का रुपिया मिलने पॅर देगा।

रूपचन्द—(**नोट उठाकर जेब में रखते हुए**) धॅन्यवॉद बाबू। (**कुछ रुककर**) ऑपका कारखाना चॉलीस बॅरस से जॉदा पूराना तो नई न?

नीलरतन—चॉलीस बॅरष से एक ठो मॅहीना बी जॉदा हो तो टॉका वापीश।

रूपचन्द—और मॅशीन सॅब वॅकिंग आर्डर मे है न?

नीलरतन—बीलकूल ठो वर्किग ऑर्डर मे ।

[चपरासी का फिर तश्तरी में एक विजिटिंग कार्ड लेकर प्रवेश। रूपचन्द कार्ड देखता है।]

रूपचन्द—विज़िटर्स रूम मे बैठाओ। मै अभी मिलूँगा।

[चपरासी का प्रस्थान।]

रूपचन्द—ऑछा, ऑप ऑबी विजिटर्स रूम मे बैठिये। सेठ मॉर्केट खूलने का पेले ऑ जाता है। ऊसकी ऑता ही ऑपको चैक मील जॉयगा।

नीलरतन—बॅहोत ऑच्छा, मुनीम, बॅहोत ऑच्छा। (प्रस्थान)

[रूपचन्द घटी बजाता है। चपरासी का प्रवेश।]

रूपचन्द—मुमताजुद्दीन साहब को भेज दो।

[चपरासी का प्रस्थान। मुमताजुद्दीन का प्रवेश। मुमताजुद्दीन करीब ३५ वर्ष का गेहुएँ रग का मनुष्य है। वह बहुत ऊँचा है, पर बहुत दुबला है। सिर और दाढ़ी-मूछो के बाल काले है। वह शेरवानी और ढीला पाजामा पहने है। सिर पर लाल तुर्की टोपी लगाये है। रूपचन्द खड़े होकर उससे हाथ मिलाता है। रूपचन्द अपनी कुरसी पर और मुमताजुद्दीन उसके सामने की कुरसी पर बैठता है।]

रूपचन्द—आपके मकान का सौदा पट जायगा, जनाब।

मुमताजुद्दीन—नवाज़िश है, हुजूर की। सेठ साहब से गुफ्तगू हो गई ?

रूपचन्द—जी हाँ, सारा मामला तय हो गया। कीमत अस्सी हजार आपको मजूर है न?

मुमताजुद्दीन—हालाँ कि जायदाद इससे कही ज्यादा की है, लेकिन . . . .

रूपचन्द—(**बीच ही में त्योरी बदल कर**) क्या कहा, जायदाद ज्यादा .

मुमताजुद्दीन—(**एकदम नरमी से**) गुस्ताखी मुआफ फरमाइए। मुझे अस्सी हजार मजूर है।

रूपचन्द—मकान तो वही चीतपुर रोड के कोने वाला ही है न?

मुमताजुद्दीन—जी हाँ, आपने तो शायद देखा भी है?

रूपचन्द—हाँ, देखा है, शायद, ईस्ट इडिया कपनी के वक्त का बना हुआ है।

मुमताजुद्दीन—क्या फर्मा रहे है, सरकार, अभी पचास साल पुराना भी न होगा।

रूपचन्द—खैर। बयाने का दस हजार का चैक आपको आज दे दिया जायगा।

मुमताजुद्दीन—(**प्रसन्नता से**) मै अज़हद शुक्रगुज़ार हूँ।

रूपचन्द—(**कुछ विचारते हुए**) पन्द्रह रोज़ मे तो मकान का नक्शा वगैरह बनकर बयनामा लिखा जा सकता है न?

मुमताजुद्दीन—बडी खुशी से।

रूपचन्द—तो देखिये, बाकी रुपये का पन्द्रह दिन का पोस्टडेटेड चैक भी आपको आज ही दिया जा सकता है, बशर्ते .... (चुप हो जाता है।)

मुमताजुद्दीन—बशर्ते हुजूर ?

रूपचन्द—(त्योरी बदल कर) आप तो अजीबो गरीब आदमी मालूम होते है। बिज़नेस किस चिडिया का नाम है यह भी शायद नही जानते ।

मुमताजुद्दीन—(सिटफिटाकर) हुजूर . हुजूर .

रूपचन्द—अजी हुजूर, हुजूर क्या ? दो सौ साल पुराना मकान, बीस हज़ार का भी न होगा, बिक रहा है, अस्सी हज़ार मे। दस हज़ार बयाने मे मिल रहे है और बाकी रकम का पोस्टडेटेड चैक। और फिर भी आप कुछ नही समझते।

मुमताजुद्दीन—ओ ! मै सरकार की हर तरह से खिदमत करने को ...

रूपचन्द—ज़रा धीरे बोलिये, जनाब ।

मुमताजुद्दीन—(डरते डरते) खता मुआफ ।

रूपचन्द—(धीरे धीरे) देखिये, ये दस हजार रुपये जो बयाने मे मिल रहे है कुल के कुल आपको मुझे देने होगे।

मुमताजुद्दीन—(घबड़ाकर) हुजूर .. ..

रूपचन्द—आप तो ऐसे घबडा गये, जैसे मै जबर्दस्ती आपको लूट रहा होऊँ। आपको मजूर न हो तो यह मामला तय नही पा सकता।

मुमताजुद्दीन—(**और भी घबड़ाकर**) नही, नही, सरकार, जो भी हुजूर हुक्म देगे, बन्दा सर आँखो से उसकी तामील करेगा।

रूपचन्द—अच्छी बात है। दस हज़ार का चैक आपको आज की तारीख का मिलेगा और सत्तर हज़ार का पन्द्रह दिनो का पोस्टडेटेड। आज चैक का रुपया मिलते ही रात को मेरे घर पर यह रुपया पहुँच जाय। आज यह रुपया न पहुँचा तो पन्द्रह दिनो के बाद के चैक का पेमेन्ट न होगा। और चैक का पेमेन्ट होने के बाद बीस हजार रुपया उसमे से आपको देना होगा।

मुमताजुद्दीन—जो हुक्म। (**कुछ रुक कर डरते डरते**) एक अर्ज करूँ?

रूपचन्द—(**एकदम रुखाई से**) फर्माइए।

मुमताजुद्दीन—(**डरते हुए धीरे धीरे**) आज के रुपये मे से अगर आधा . . .

रूपचन्द—(**क्रोध से खड़े होते हुए**) आपका सौदा नही हो सकता। आदाब अर्ज़।

मुमताजुद्दीन—(**मिन्नत से**) मुआफ कीजिए, मुआफ कीजिए।

रूपचन्द—जनाब, आप तो कुँजडों की भटा भाजी का सा सौदा कर रहे है।

मुमताजुद्दीन—मुआफी, हुजूर, मुआफी दीजिए। मुझे सब मजूर है।

रूपचन्द—(बैठते हुए) अच्छी बात है। आप विज़िटर्स रूम मे तशरीफ रखिये। सेठ साहब के आने पर आपको चैक मिल जायँगे।

मुमताजुद्दीन—(खड़े होते हुए) बहुत खूब।

[चपरासी का तश्तरी में एक काग़ज लिये हुए प्रवेश। रूपचन्द काग़ज देखता है।]

रूपचन्द—(मुँह बिगाड़कर) इन चन्दे मॉगने वालो के मारे तो नाको दम है। (चपरासी से) अच्छा, भेज दो, उन लोगो को।

[मुमताजुद्दीन और चपरासी का प्रस्थान। रूपचन्द टेबिल की दराज से चैक बुक निकालकर चैक लिखना शुरू करता है। तीन गुजरातियों का प्रवेश। एक वृद्ध है, एक अधेड़ और एक युवक। वृद्ध गुजराती ढंग की पगड़ी लगाये है और सफेद कोट तथा धोती पहने है। अधेड़ काली टोपी लगाये है और कोट तथा धोती पहने है। युवक अंग्रेजी ढंग के कपड़ो में है। तीनो गेहुँए रंग के है। वृद्ध कुछ मोटा तथा ठिंगना है, शेष साधारण क़द और शरीर के है। तीनो व्यक्ति रूपचन्द का अभिवादन करते है, पर रूपचन्द अभिवादन का उत्तर भी नही देता, चैक लिखता रहता है। तीनों आदमी सामने की कुर्सियों पर बैठ जाते है और

रूपचन्द की तरफ़ देखते रहते हैं। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

वृद्ध गुजराती—हम कल साँझ कूँ भी आया होता, पर आपका मुलाकात नही हुआ।

[रूपचन्द कोई उत्तर न देकर लिखने में संलग्न रहता है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

वृद्ध गुजराती—आज रात कूँ मेल से हम मबई कूँ जाना चाता।

रूपचन्द—**(बिना सिर उठाये हुए लिखते लिखते बड़े रूखे स्वर में)** आप रात कूँ मेल से मबई कूँ जा सकता है।

वृद्ध—पण, मुनीम जी, हमारा जाना तो आपका शेठ पर निर्भर था? उनकूँ मिलने का वास्ते हम मबई से आया।

रूपचन्द—**(उसी प्रकार)** आपसे मिलने का वास्ते हम शेठ कूँ पूछा, पण उनकूँ इस बखत बीलकुल टाइम नई।

अधेड़—मुनीम जी, मुनीम जी!

रूपचन्द—**(लिखना रोककर सिर उठा)** देखो, शेठ, आप सरखा चन्दा माँगने वाला का रोज बरात आता हे, बरात! समजा? इस तरा सब कूँ चन्दा दिया जाय तो भुगतान में देने कूँ रुप्या नई बचे। समजा?

युवक—क्या केते हो, मुनीम जी। इस लड़ाई में कलकत्ता ने रुप्या कमाया हे, कलकत्ता ने। मबई से

मिलियन्स कलकत्ता आया हे। आपका शेठ ने कीतना कमाया हे ? उनके लिये फाइब टैन थाउजन्ड क्या है ?

रूपचन्द—(फिर से उसी तरह लिखते हुए) कलकत्ता ने रुप्या कमाया हे इसलिये मबई वाला कलकत्ता वाला पर बलता हे, क्यूँ ?

वृद्ध—नई, नई।

रूपचन्द—(लिखना रोककर सिर उठा जोर से) कलकत्ता वाला मे अक्कल होती, समजा, अक्कल होती, ईसलिए कमाया। कलकत्ता वाला मे बल होता, समजा, बल होता, ईसलिए मबई से कलकत्ता कूँ रुप्या आया हे। मबई वाला ने कलकत्ता वाला पर कोई भला कीवा हे।

वृद्ध—नई, नई।

[बाईं तरफ के कमरे में, बाईं तरफ की दीवाल का दरवाजा खोलकर दानमल का प्रवेश। दानमल की अवस्था करीब ३० वर्ष की है। वह गौर वर्ण का सुन्दर युवक है। मुख पर अत्यधिक प्रसन्नता और प्राफुल्य दृष्टिगोचर होता है। क़द में वह लबा है। शरीर न बहुत दुबला है, न बहुत मोटा। छोटी छोटी मूँछें है। खादी का कुरता और धोती पहने है। सिर पर गान्धी टोपी है।]

रूपचन्द—(फिर से लिखते हुए) सुनो, शेठ, आप फोकट अपना टाइम गमाते हो, और मेरा बी। आ बखत आपकूँ चन्दा नई मिल सकता।

दानमल—(बाईं ओर के कमरे से जरा जोर से) कौन है, रूपचन्द ?

रूपचन्द—(अपने कमरे में से ही कुछ जोर से) यों ही कुछ फालतू लोग बबई से चन्दा माँगने आ गये हैं।

[दानमल दोनो कमरो के बीच का दरवाजा खोल रूपचन्द के कमरे में आता है। उसे देखकर रूपचन्द खड़ा हो अपनी कुरसी से हटता है। तीनो गुजराती भी खड़े हो जाते हैं। दानमल रूपचन्द की कुरसी पर बैठता है। तीनो गुजराती दानमल का अभिवादन कर अपनी अपनी कुर्सियों पर बैठते हैं। दानमल नम्रता-पूर्वक अभिवादन का उत्तर देता है। रूपचन्द सामने की चौथी कुरसी पर बैठ जाता है।]

दानमल—(गुजरातियों से) आप लोग बबई से आये हैं ?

वृद्ध—जी, शेठ, मबई की ह्यूमैनटेरियन लीग ने हमारा डेपुटेशन आपका पास भेजा है।

दानमल—इतनी दूर से पधारने का आपने कष्ट उठाया ?

वृद्ध—कष्ट की तो कोई बात ई नई, शेठ !

दानमल—कब आप लोगो का आना हुआ ?

वृद्ध—चार दिवस हो गया, शेठ !

दानमल—चार दिन !

वृद्ध—जी, शेठ !

दानमल—यहाँ और किसी ने कुछ दिया ?

वृद्ध—एक आदमी से हजार रुप्या मिला, शेठ, बाकी

सब केता हे आप कूँ मिले। आपके देने पीछे बाकी लोग देगा।

दानमल—अच्छा, मेरे लिये आपका काम रुका है?

वृद्ध—जी, शेठ!

दानमल—मुझसे आप कितना चाहते हैं?

वृद्ध—**(नम्रता से मुस्कराकर)** हम लोग तो बोत उम्मेद से आया हे, शेठ, आपका जितना रजा हो।

दानमल—फिर भी, अपनी इच्छा तो बताइए।

[वृद्ध अपने साथियो की ओर देखता है।]

अधेड़—कमसे कम दस हजार तो दो, शेठ!

दानमल—(मुस्कराकर) कमसे कम दस हजार!

युवक—**(मुस्कराकर)** जी, शेठ।

दानमल—**(रूपचन्द से)** मुनीम जी, इनको ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह का चैक लिख दीजिये।

वृद्ध—**(प्रसन्न होकर)** धन्यवाद शेठ, धन्यवाद।

अधेड़—**(प्रसन्नता से)** बोत बोत, धन्यवाद।

युवक—**(प्रसन्नता से)** मैनी मैनी थेंक्स।

दानमल—(खड़े होते हुए) और कोई आज्ञा?

[सब लोग खड़े हो जाते हैं।]

वृद्ध—आपने सब कुछ कर दिया, शेठ।

[दानमल अपने कमरे में जाकर अपनी आफिस चेअर पर बैठता है। रूपचन्द अपने कमरे में अपनी कुरसी पर

बैठता है। तीनों गुजराती अपनी अपनी कुरसियों पर बैठ जाते हैं।]

रूपचन्द—(रुखाई से) आप लोग विजिटर्स रूम में ठेरिए। थोडा देर में चेक आप कूँ पोंच जायगा।

वृद्ध—बोत अच्छा।

[तीनो खड़े होते हैं और अभिवादन कर दाहिनी तरफ के दरवाज़े से बाहर जाते हैं। इस बार रूपचन्द इनके अभिवादन का उत्तर देता है। रूपचन्द चैक बुक में एक चैक और लिखकर दानमल के कमरे में जाता है और दानमल के सामने की एक कुरसी पर बैठता है।]

दानमल—क्या भाव बन्द हुआ, पाट?

रूपचन्द—साढे बानवे।

दानमल—और हैसियन?

रूपचन्द—पोने अठारह।

दानमल—सवेरे कुछ सौदा किया?

रूपचन्द—हाँ, दस हजार गाठ पाट की ली और पाँच लाख हैसियन।

दानमल—क्यो, कोई खबर मिली क्या?

रूपचन्द—पक्की खबर।

दानमल—क्या खबर मिली?

रूपचन्द—नीचे के भाव इस सप्ताह में अवश्य बँध जायँगे।

दानमल—यह खबर तो बहुत दिन से उड रही है।

रूपचन्द—आज तो मै खुद उनसे मिलकर आया हूँ।

दानमल—खुद से ?

रूपचन्द—हाँ, हाँ, खुद से।

दानमल—क्या भाव बँधेगे ?

रूपचन्द—पाट का पच्चानवे और हैसियन का अठारह।

दानमल—पक्का ?

रूपचन्द—बिलकुल। आज उस पार्टी ने बहुत गाँठे पोते की है, हैसियन भी बहुत लिया है।

दानमल—अब अपने यहाँ कितनी गाँठे पाट और कितना हैसियन पोते है ?

रूपचन्द—**(विचारते हुए)** कोई पचास हजार गाँठ पाट और तीन करोड हैसियन होगा। लडाई मे तो तेजी को ही रुजगार कहना चाहिये। लडाई—मतलब तेजी। पिछली लडाई मे एकदम से इतनी तेजी नही आई थी जितनी इस लडाई मे आई। आज जिससे मै मिलने गया था, वह कहता था कि पाट का भाव डेढ सौ हो जायगा और हैसियन का चालीस।

दानमल—हाँ, सवा सौ पाट और पच्चीस हैसियन तो हो ही गया था। बात यह है कि जूट की हिन्दुस्थान को मनापली है। हवाई लडाई मे वार बेग के बिना काम नही चल सकता। जब तक लडाई चलेगी तब तक सरकार को वार

बेग लेना ही पडेगा। बीच बीच मे रीएक्शन बहुत से आयेंगे, पर अन्त मे तेजी ही रहेगी।

[कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

दानमल—चन्दा का चैक लिख लिया ?

रूपचन्द—हाँ, पर आपने चन्दा बहुत दिया। जो भी माँगने आता है हरेक को आप यो ही देते है।

दानमल—भगवान ने धन और किस लिये दिया है, रूपचन्द ?

रूपचन्द—यह तो ठीक है, पर देखकर चलना चाहिये।

दानमल—जो देखकर चलता है उसके पास यह धन क्या सदा रहता है ? रूपचन्द, मै तो लडाई के कारण इस धन्धे मे पडा। दो महीने मे ही इतना कमाया कि समझ मे नही आता कि कहाँ लगाऊँ और इतनी कमाई क्यो हो रही है जानते हो ?

रूपचन्द—क्यो ?

दानमल—मै स्वय के लिये नही कमाना चाहता। मै चाहता हूँ कि इस कमाई से देश की सेवा करूँ। आपस वालो की, गरीबो की भलाई करूँ। इसलिये जो सस्था भी माँगती है, जी खोल कर उसीको देता हूँ। आपस वालो की भलाई करने की भी सोच रहा हूँ। रोज गरीबों को भी जो हो सकता है, बाँटता हूँ। (**कुछ रुककर**) रूपचन्द, मै साध्य को प्रधान चीज़ मानता हूँ, साधन को

गौण वस्तु। मेरा साध्य देश सेवा और गरीबो का उपकार है। लडाई के कारण मैंने फाटके को साधन बनाया है। और फिर, रूपचन्द, आज कलकत्ता और बबई मे जो बडे बडे दानी है, दानवीर कहे जाते है, सब फाटके ही से तो बने है।

रूपचन्द—सब फाटके से, और गई लडाई मे ही अधिकाश बने।

दानमल—रूपचन्द, आज तो तुम्हे तीन चैक और लिखना पडेगे।

रूपचन्द—किसके लिये ?

दानमल—लखमीदास, कमलाचरण और तुम्हारे लिये।

रूपचन्द—मेरे लिये भी ?

दानमल—हॉ तुम्हारे लिये भी। तुम्हारे लिये चार हज़ार का। एक नई मोटर ख़रीदो। लखमीदास और कमलाचरण मेरे स्कूल और कॉलेज के सहपाठी है। मै दो महीने मे इतना बडा आदमी हो गया पर वे बिचारे जैसे थे वैसे ही है। मैने लखमीदास को एक बाडी देने कहा था और कमलाचरण को एक बगीचा।

रूपचन्द—सेठ जी !

दानमल—बोलो मत। मित्रो के गरीब रहते मुझे धन से आनन्द ही नही आता। लखमीदास ने पचपन हज़ार मे बाडी का सौदा किया है और कमलाचरण ने पैतालीस हज़ार मे बगीचे का।

रूपचन्द—पर इतने रुपये अभी बैंक मे नही है।

दानमल—दोनो प्रापर्टी के सौदे मे पॉच पॉच हजार एडवान्स मनी के देना है। एडवान्स मनी के चेक आज के दे दो और बाकी के रुपये के पोस्टडेटेड।

रूपचन्द—पर आज और भी कुछ चैक देने है।

दानमल—किनको ?

रूपचन्द—ताँबे की माइन्स का सौदा हो गया। राइस मिल का सौदा भी पट गया। और चीतपुर रोड का मकान भी ले लिया।

दानमल—किसी तरह से प्रबन्ध करो। **(मुस्कराकर)** मै जानता हूँ, तुम सब कर लोगे।

रूपचन्द—**(विचार करते हुए)** करना ही पडेगा।

दानमल—**(प्रसन्नता से)** हिअर स्पीक्स रूपचन्द एजेन्ट आफ दानमल कपनी !

[रूपचन्द खड़े होकर टेबिल पर चैक बुक रख चार चैक और लिखता है। और फिर चैक बुक दानमल के सामने दस्तख़त के लिये रखता है।]

दानमल—**(एक चैक पर दस्तख़त कर)** यह तॉबे की माइन्स का ?

रूपचन्द—जी। पन्द्रह दिनो का पोस्टडेटेड। इतने दिनों मे कैलाशचन्द्र माइन ट्रान्सफर करने की सारी व्यवस्था कर लेगा।

दानमल—(**दूसरे चैक पर दस्तख़त कर**) यह राइस मिल का ?

रूपचन्द—यह भी पन्द्रह दिनो का पोस्टडेटेड है। इतने दिनो मे लिखापढी इत्यादि सब हो जायगी।

दानमल—(**तीसरे चैक पर दस्तख़त कर**) यह चीतपुर रोड के मकान का ?

रूपचन्द—जी, मकान के एडवान्स मनी का, दूसरा सत्तर हजार का चैक और है।

दानमल—(**चौथे चैक पर दस्तख़त कर**) यह ?

रूपचन्द—जी, यह भी पन्द्रह दिनो का पोस्टडेटेड है। इस म्याद के भीतर नक्शा वगैरह बनकर सेल डीड लिख जायगा। (**कुछ रुककर**) पोस्टडेटेड चैक इसलिये दिये जाते है कि बेचने वाले मानते नही और चीज़े सब आधे दामो से भी कम मूल्य मे मिली है। ईश्वर की दया से पन्द्रह दिनो मे अपने यहाँ बहुत रुपया आ जायगा।

दानमल—ठीक, (**पाँचवें चैक पर दस्तख़त करते हुए**) यह चन्दे का ?

रूपचन्द—जी।

दानमल—(**चार चैकों पर और दस्तख़त करके**) ये लखमीदास और कमलाचरण के ?

रूपचन्द—जी।

दानमल—और तुम्हारा ?

रूपचन्द—उसकी अभी आवश्यकता नहीं। (चैक बुक उठाता है।)

दानमल—लाओ, चैक बुक मुझे दो।

[रूपचन्द चैक बुक नहीं देता। दानमल मुस्कराते हुए खड़ा होता है और चैक बुक रूपचन्द के हाथ से छीन फिर अपनी कुरसी पर बैठ चार हज़ार का चैक रूपचन्द के नाम लिखता है। रूपचंद के कमरे में टेलीफोन की घंटी बजती है।]

रूपचन्द—(दानमल की टेबिल की घड़ी देखते हुए) ग्यारह बजे। बाज़ार खुल गया। (जल्दी से अपने कमरा में जाता है।)

रूपचन्द—(अपनी कुरसी पर बैठ कर टेलीफोन का रिसीवर दाहने हाथ में उठा दाहने कान में लगा कर) पाट खुल गयो? .. के भाव खुल्यो?. .के. ... इक्कानवे। (दूसरे फोन की घंटी बजती है। उसका रिसीवर बायें हाथ से उठाकर बायें कान में लगाकर) हैसियन खुल गयो? ....के भाव ....सत्तरा चौदा आना।....(तीसरे फ़ोन की घंटी बजती है। बायें कान में लगे हुए रिसीवर को गर्दन टेढ़ी कर चेहरे और कन्धे के बीच में इस तरह रख लेता है जिससे रिसीवर गिरता नहीं तथा रिसीवर में सुनने की जगह कान के नज़दीक और बोलने की जगह मुंह के नज़दीक आ

जाती है पर हाथ खाली हो जाता है। उस हाथ में तीसरा रिसीवर उठाकर बायें कान में लगा) कौन? . .कौन? . ..रुक्मणी रमण जी, हजार गाँठ बेच दूँ।.. ... अच्छा। भाव इक्यानवे है। ... इक्यानवे मे ही बेच दूँ ....बजार भाव बेच दूँ। .(दाहने कान में लगे हुए रिसीवर में) बेच......रुक्मणी रमण जी री हजार गाँठाँ बेच . .कसने बेच। (बॉयें कान में लगे हुए रिसीवर में) कह दिया बेचने को। (दाहने कान में लगे हुए रिसीवर में) बेची?.. साढे नव्वे मे? इतरी नीची! (बायें कान में लगे हुए रिसीवर में) साढे नव्वे मे हजार गाँठ बेची। (उस रिसीवर को रख देता है। गर्दन में दबे हुए रिसीवर को बॉयें हाथ से बॉयें कान में लगाकर) के भाव...के भाव .साढ़े सत्तरा। कुण बेचू ~~शे है? ...खुदरा.. खुदरा. । (उस रिसीवर को रख देता है। दाहने कान में लगे हुए रिसीवर में) के भाव .नव्वे। के बात है? कुण बेचे है? पजाब पचानन? सगमरमर सदन? सगमूसा महल?...के भाव?...के भाव? ...साढ़े नुवासी। (रिसीवर रख देता है।)

[कुछ देर निस्तब्धता रहती है। फिर घटी बजती है।]

रूपचन्द—(दाहने हाथ से रिसीवर उठाकर दाहने कान में लगाकर) के भाव...के भाव....(आश्चर्य से)

अठासी. . .के हुयो? वार बैग कैंसिल हो गयो। (दूसरे फोन की घन्टी बजती है। उसका रिसीवर बॉयें हाथ से उठाकर बॉयें कान में लगाते हुए) के भाव. . .के भाव (आश्चर्य से) साढी सोला!

[दानमल घबड़ाकर अपने कमरे से रूपचन्द के कमरे में आता है।]

रूपचन्द—के हुयो? वार बैग कैंसिल हो गयो? . . . . कैसे हो सके है? . . . हुयो है? . . .कुण बेचू . . कुण बेचू? . . .सगला बेचू? (दाहने कान के रिसीवर में) के भाव? . . .छियासी! . कोई लेऊई नई चाले? . . . भूकंप हो गयो। . . .हुयो के? . . .वार बैग कैंसिल हो गयो?

दानमल—(एकदम घबड़ाकर) क्या हुआ, रूपचन्द?

रूपचन्द—वार बैग कैंसिल हो गया! सब बाजार बेचू! कोई लेऊ नही।

दानमल—(बहुत ज्यादा घबराहट से) मै पाट के बाडे मे जाता हूँ। (शीघ्रता से दाहनी ओर के दरवाजे से प्रस्थान।)

[तीसरे फ़ोन की घन्टी बजती है। रूपचन्द फिर तीनों रिसीवर उसी तरह ले लेता है जैसे पहले लिये थे।]

रूपचन्द—कौन . . .कौन. . . .माधोप्रसादजी . . . पाँच हजार गाँठ बेचूँ? . . . . (दाहने कान वाले रिसीवर में)

बेच, पाँच हजार गाँठाँ माधोपरसाद री.....कस ने बेच। ....(**चौथे फोन की घन्टी बजती है। तीसरे फ़ोन का रिसीवर रखकर चौथे फोन का रिसीवर उठा**) कौन कौन....अबाप्रसाद जी, बीस लाख हैसियन बेचूँ? (**बाँयें तरफ़ के रिसीवर में**) बेच अबापरसाद री बीस लाख हैसियन...(**पाँचवें फोन की घन्टी बजती है। चौथे फ़ोन का रिसीवर रखकर पाँचवें फोन का रिसीवर उठाकर**) कौन कौन .मोतीलाल जी . दो हजार गाँठ बेचूँ ?. (**दाहनी तरफ़ के रिसीवर में**) बेच, मोतीलाल री दो हजार गाँठाँ ? . .(**दाहने रिसीवर में**) . के ? .. के ?... कोई लेऊ नईं....(**बाँयें रिसीवर में**) के ....कोई लेऊ नईं ? . ..भाव. . के भाव. .साढे पन्द्रा... (**दाहने रिसीवर में**) के भाव ?. .पोनी चोरासी......

यवनिका-पतन

दूसरा दृश्य

स्थान—पाट का बाडा

समय—दोपहर

[**सारा स्थान गन्दा है। बड़ा सा हॉल है। पीछे और दाहनी तरफ़ क़तार में छोटी छोटी कोठरियाँ दिखती है**

जिनमें से कुछ में छोटे छोटे तख्त बिछे हैं और कुछ में भद्दी सी कुर्सियां और टेबिलें रखी हैं। तख्तों पर मैली सी बिछावन है। कई कोठरियों में तख्तों और टेबिलों पर टेलीफ़ोन भी रखे हैं। कई कमरों के तख्तों और कुर्सियों पर कुछ आदमी बैठे हैं। कोई कोई फोन का रिसीवर उठाकर कान में लगाये हैं। कोई सुन रहा है। कोई बोल रहा है। इन दोनों क़तारों के सामने चौड़ा सा रास्ता छोड़कर लकड़ी का कटहरा लगा है। कटहरे के भीतर हॉल में काफ़ी जगह है। कटहरे के भीतर बाईं तरफ कई बेंचें हैं। इन बेंचों पर बहुत से आदमी खड़े हुए हैं और बेंचों के नीचे कटहरे के भीतर की ख़ाली जमीन पर भी बहुत भीड़ है। कोठरियों में बैठे हुए और हॉल में खड़े हुए आदमियों में ९९ फी सदी मारवाड़ी हैं। कोई मारवाड़ी पगड़ी लगाये है, कोई टोपी और कोई नगे सिर भी है। शरीर पर अधिकांश व्यक्ति कुरता और धोती पहने हैं। कोई कोई कोट भी पहने हैं और कोई कोई सिर्फ बनयान ही। किसी व्यक्ति की पगड़ी के पेंच खुल गये हैं। किसी की टोपी अस्त व्यस्त है। जो नंगे सिर हैं उनमें से कई के बाल फैले हुए हैं। कोठरियों में बैठने वाले व्यक्तियों में कई हॉल में आते हैं और हॉल में खड़े हुए लोगों में से कई कोठरियों में जाते हैं। यह आवागमन बराबर जारी है। बाड़े के भीतर का एक भी मनुष्य पूरे होश में नहीं जान पड़ता। सभी नशेलचियों के सदृश दीख पड़ते हैं। किसी भी व्यक्ति

में धैर्य का लवलेश नहीं है। सबके हर व्यवहार में, चाहे वह बोलना हो, चिल्लाना हो, या आना जाना हो, अत्यधिक शीघ्रता और महान उद्विग्नता दृष्टिगोचर होती है। सारे बाड़े में जोर का ही हल्ला मचा हुआ है। बोलते और चिल्लाते सब है, पर सुनने वाले बहुत कम दिखते है। बेंचो पर खड़े हुए व्यक्ति, जो पाट के बाड़े में 'रंगबाज' के विशेष नाम से पुकारे जाते है, विचित्र जीव दीख पड़ते है। उनकी बोली, उनकी चिल्लाहट, उनकी हलचल, उनके सारे व्यवहार से वे मनुष्य तो नहीं कहे जा सकते। उनमें जो पगड़ी बाँधे है, उनमें से अधिकांश की पगडियाँ अत्यधिक मैली है तथा खुल-सी गई है और उनके पेच उनके कन्धो पर इधर उधर फैले हुए है। उनमें जो टोपी लगाये है, उनमें से अधिकांश की टोपियाँ दाँये, बाँयें, आगे, पीछे इस तरह सरक गई है कि उनके गिरने में थोड़ी ही कसर है। जो नंगे सिर है उनमें से अधिकांश के बाल बेतरह फैले है। कई के बालो ने तो फैलकर उनकी आँखें ही ढक ली है। चिल्लाने के सिवा देखने की शायद इन्हें जरूरत ही नहीं है। शरीर पर के कपड़े सभी के मैले है और पूरे बटन तो किसी के कोट या कुरते में नहीं है। किसी किसी के कोट में तो एक ही बटन बचा है, जिससे किसी तरह कोट शरीर पर अटका सा है। कुरतो में तो किसी किसी के एक भी बटन नही रहा है। रंगबाज बेंचों पर लंगूरों के सदृश उछल उछल कर उन्ही के सदृश किटकिटा कर

चिल्ला रहे हैं। उनके दाहने हाथ हर उछाल में सबसे अधिक उछलते हैं और अँगूठे को छोड़ चारों उँगलियो में से कभी चार, कभी तीन, कभी दो और कभी एक के द्वारा पाट के भाव का विचित्र संकेत होता है। रंगबाज पसीने से लतपत हैं और दाहने हाथ के फँसे रहने के कारण बाँयें हाथ से बिना रूमाल के ही बीच बीच में अपना पसीना इस बुरी तरह से पोंछते हैं कि आसपास खड़े हुए व्यक्तियों के मुख और आँखो पर उसके छींटे पड़े बिना नही रहते।]

एक रंगबाज—(दाहने हाथ की चारो उँगलियो को सामने की तरफ़ हिलाते हुए चिल्ला कर) तिरासी, तिरासी, तिरासी, तिरासी, तिरासी !

दूसरा रंगबाज—(दाहने हाथ की तीनो उँगलियों को स्वयं अपनी तरफ़ हिलाते हुए चिल्लाकर) पोनी तिरासी, पोनी तिरासी, पोनी तिरासी, पोनी तिरासी, पोनी तिरासी !

नीचे खड़ा हुए एक व्यक्ति—बेची। ढाई सै। बेची ढाई सै।

दूसरा व्यक्ति—पाँच सै बेची। पाँच सै बेची।

तीसरा व्यक्ति—ली ढाई सै, ली पाँच सै, पोनी तिरासी मे।

तीसरा
चौथा
पाँचवाँ
छठवाँ } (एक साथ चिल्लाकर) हज़ार बेची। दो हज़ार बेची। साढ़ी ब्यासी मे।

सातवाँ
आठवाँ } (एक साथ) ली तीन हज़ार साढ़ी ब्यासी में।

एक रंगबाज़
दूसरा रंगबाज़
तीसरा रंगबाज़
चौथा रंगबाज़ } (एक साथ दाहने हाथ की दो उँगलियों को सामने की तरफ़ हिलाते हुए चिल्लाकर) साढ़ी ब्यासी, साढ़ी ब्यासी, साढ़ी, साढ़ी ब्यासी, साढ़ी ब्यासी, साढ़ी ब्यासी।

पाँचवाँ रंगबाज़—(दाहने हाथ की एक उँगली को सामने की तरफ़ हिलाते हुए चिल्लाकर) सवा ब्यासी, सवा ब्यासी, सवा ब्यासी, सवा ब्यासी, सवा ब्यासी।

नीचे खड़ा हुआ एक व्यक्ति—(चिल्लाकर) बेची ब्यासी में, हज़ार गाँठों। (और चिल्लाकर) बेची इक्यासी में दो हज़ार गाँठों। (और चिल्लाकर) बेची अस्सी में चार हज़ार गाँठों।

दूसरा व्यक्ति—ली, ली, ली, बाज़ार भाव छै हज़ार गाठों।

अगणित आदमी—(एक साथ चिल्लाकर) अस्सी का बेचू! अस्सी का बेचू! अस्सी का बेचू! अस्सी का बेचू! अस्सी का बेचू!

[दानमल का शीघ्रता से प्रवेश। वह दाहनी तरफ़ की कोठरियों की क़तार में से सबसे पहली कोठरी में जाता है। अन्य कोठरियों की अपेक्षा यह कोठरी अधिक साफ सुथरी है। इसकी टेबिल कुर्सियाँ आदि भी दूसरी कोठरियों से

अच्छी है। एक कुरसी पर एक अधेड़ अवस्था का काला सा व्यक्ति, जो टोपी लगाये और कुरता तथा धोती पहने है, बैठा हुआ फोन में बात कर रहा है। दानमल को देखकर वह खड़ा हो जाता है और फोन में "अस्सी का बेचू, अस्सी का बेचू!" कहकर फ़ोन का रिसीवर रख देता है। दानमल और वह दोनो बैठ जाते हैं और दोनो में बात चीत होना शुरू होती है। बाडे में वैसा ही हल्ला रहता है, परन्तु दानमल की कोठरी बहुत नजदीक होने के कारण इस हल्ले में भी इन लोगों की बातचीत सुन पड़ती है।]

दानमल—(घबड़ाहट से) रामलाल, यह क्या हुआ?

रामलाल—वार बैग जो अप्रेल, मई, जून मे डिलेवरी होने वाला था, उसकी डिलेवरी सितबर तक बढ गई, सरकार।

दानमल—इतनी सी बात पर यह भूकप! वार बैग कैंसिल तो नही हुआ?

रामलाल—कैंसिल तो नही हुआ, सरकार, पर लोग तो नये वार बैग के आर्डर की उम्मीद मे थे और इसीका डिलेवरी लेना बढ गया।

दानमल—फिर भी, रामलाल, इतनी सी बात पर ऐसा कुलैप्स तो नही होना चाहिए था?

रामलाल—यह तो फाटका है, सरकार। साइकलॉजी का बजार है।

दानमल—और घटेगा ?

रामलाल—फाटका बिगडने के बाद भाव का सवाल ही नही रहता। तेजी मे कितना भी बढ़ सकता है, मदी मे कितना भी घट।

दानमल—(**और भी घबड़ाकर**) फिर अपना माल ?

रामलाल—मेरी समझ मे तो सब बेच देना चाहिए। नुकसान मे सौदा रखना ठीक नही, काट देना चाहिए।

ज़ोर की आवाज़ें—इठत्तर का बेचू ! इठत्तर का बेचू ! इठत्तर का बेचू ! इठत्तर का बेचू !

दानमल—(**एकदम घबड़ाकर**) रामलाल !

रामलाल—(**ज़ोर से**) बेचिए, सरकार ! बेचिए।

दानमल—इस भाव मे ?

रामलाल—(**घबड़ाकर जल्दी से**) फाटका मे भाव नही देखा जाता, सरकार।

ज़ोर की आवाज़ें—छियत्तर का बेचू। छियत्तर का बेचू। छियत्तर का बेचू। छियत्तर का बेचू।

दानमल—(**पागलों के सदृश**) रामलाल ! रामलाल !

रामलाल—बेचिए, सरकार, बेचिए।

दानमल—(**उसी प्रकार के स्वर में**) कर ! जो तुझे दिखे सो कर।

[रामलाल दौड़ते हुए कटहरे के भीतर पहुँचता है। दानमल कुरसी पर लेट सा जाता है।]

एक रंगबाज—(दाहने हाथ की चारो उँगली सामने की तरफ हिलाते हुए) छियत्तर, छियत्तर, छियत्तर, छियत्तर।

रामलाल—बेची छियत्तर मे पाँच हज़ार।

एक व्यक्ति—ली पाँच हज़ार छियत्तर मे।

दूसरा रंगबाज **तीसरा रंगबाज** **चौथा रंगबाज** **पाँचवाँ रंगबाज**	(दाहने हाथ की एक साथ चारो उँगली सामने की तरफ़ हिलाते हुए) पिचत्तर, पिचत्तर, पिचत्तर, पिचत्तर, पिचत्तर।

रामलाल—बेची दस हज़ार गाँठ पिचत्तर मे।

एक व्यक्ति—ली दस हज़ार पिचत्तर मे।

बहुत से रंगबाज—(एक साथ दाहने हाथ की चारों उँगली सामने की तरफ़ हिलाते हुए) चोत्तर, चोत्तर, चोत्तर, चोत्तर, चोत्तर!

रामलाल—बेची दस हज़ार चोत्तर मे।

बहुत से रंगबाज—(एक साथ दाहने हाथ की चारों उँगली सामने की तरफ़ हिलाते हुए) तेत्तर, तेत्तर। बात्तर, बात्तर।

अगणित आदमी—(एक साथ ज़ोर से) बात्तर का बेचू! बात्तर का बेचू!

कुछ आदमी—(एक साथ) दानमल बेचू! दानमल बेचू!

[बड़ा कोलाहल होता है। कुछ समझ में नहीं आता।]

यवनिका-पतन

उपसंहार

स्थान—कलकत्ते की फौजदारी कोर्ट
समय—दोपहर

[कोर्ट के कमरे की तीन तरफ़ की दीवालें दिखती हैं, जिनमें कई दरवाजे और खिड़कियाँ हैं। पीछे की दीवाल पर बादशाह की एक बड़ी सी तस्वीर लगी है। तस्वीर के नीचे एक घड़ी है। पीछे की दीवाल से लगा हुआ एक ऊँचा प्लेटफार्म है। उस पर दरी और दरी पर क़ालीन। उस पर मजिस्ट्रेट की ऊँची कुरसी है। कुरसी के सामने राईटिंग टेबिल है, जिसपर लिखने पढ़ने का सामान, स्टेशनरी और कई फाइल रखे हैं। ऊँचे प्लेटफार्म के नीचे एक और प्लेटफार्म है, उस पर मेजें लगी हैं। मेजों के एक तरफ सिरिश्तेदार और दूसरी ओर अदालत के और अहलकारों की कुर्सियाँ हैं। कुर्सियों के सामने टेबिलें हैं और इन टेबिलों पर भी लिखने पढ़ने का सामान, स्टेशनरी और कई फ़ाइलें रखी हैं। सिरिश्तेदार के प्लेटफ़ार्म के सामने लकड़ी का कटहरा है। इस कटहरे के बाँई तरफ़ मुलजिम के खड़े होने की जगह है। यह चारों ओर से लकड़ी के कटहरे से घिरी हुई है। इस कटहरे के सामने कुर्सियों की कतारें और कुर्सियों के पीछे फिर कटहरा है। कटहरे के पीछे बेंचों की कई क़तारें हैं। इन कुर्सियों और

बेंचों के मुँह मजिस्ट्रेट की बैठक की ओर हैं। परदा खुलते समय कुछ चपरासियो को छोडकर कमरे में और कोई नही है। ये चपरासी फ़ाइल इत्यादि ठीक कर रहे हैं। रूपचन्द, कैलाशचन्द्र, नीलरतन, मुमताजुद्दीन, लखमीदास और कमलाचरण का प्रवेश। लखमीदास और कमलाचरण दोनों की उम्र करीब ३० साल की है। लखमीदास साँवले और कमलाचरण गेहुएँ रंग का है। दोनों साधारण ऊँचाई और शरीर के मनुष्य हैं। दोनों के छोटी छोटी मूँछें हैं। दोनों काली टोपी, कोट और धोती पहने हुए हैं। सब लोग आपस में बात करते हुए आ रहे हैं।]

रूपचन्द—बिलकुल नियत बिगाड ली, बिलकुल।

[सब लोग बेंचों पर बैठ जाते हैं।]

रूपचन्द—दानमल इस तरह नियत न बिगाडता तो मै आप लोगो को फ़ौजदारी मे नालिश करने की कभी सलाह न देता।

लखमीदास—दरा बारह लाख के लिये दानमल अपनी सात पीढ़ियो का नाम इस प्रकार डुबो देगा, यह मै सोच ही नही सकता था।

कमलाचरण—फिर जब रुपया आया था, उस समय कैसी जल्दी जल्दी बैंक मे रख लिया, जब गया तो उसी तरह निकालना भी था।

कैलाशचन्द्र—और यहाँ नही बचा था, तो देश से मँगाता।

नीलरतन—हाँ, हँमने शुना इन दो मॉस मे ऊशने बोत ठो रुपिया देश भेजा।

मुमताजुद्दीन—मैं गरीब तो बेमौत मर गया। रूपचन्द साहब के कहने से मैंने अपना मकान सत्तर हज़ार मे रहन कर पेमेन्ट के लिये उसे रुपया दिया। उसका पोस्टडेटेड चैक! कभी कोई ख्वाब मे भी सोच सकता था कि दानमल कपनी का चैक डिसआनर होगा।

लखमीदास—अरे, भाई, आपही का क्या, सबका यही हाल है। मैंने कानपुर मे अपना मकान रहन कर उसे पेतालीस हज़ार रुप्या भुगतान के लिये दिया था। मैंने भी यही सोचा था कि उसका पोस्टडेटेड चैक न सिकरे यह असभव बात है।

कमलाचरण—इसी पोस्टडेटेड चैक के भरोसे पर तो मैंने भी अपना बनारस का बगीचा रहन कर उसे चालीस हज़ार दिया था।

कैलाशचन्द्र—और, भाई, मैंने तो इस पोस्टडेटेड चैक के इत्मीनान पर एक लाख रुपये मे अपनी पत्नी के जेवर रहन रखे थे।

नीलरतन—(**रूमाल से अपनी आँखो के आँसू पोंछते हुए**) और हँम! हँम तो मँर गया हूँ, बीलकूल मँर गॅया हूँ। मील, धॉन, चॉवल शब पर शॉठ शहस्र टॉका ऋन लेकर दॉनमॅल शेट को पोस्टडेटेड चैक पर दीया है।

रूपचन्द—ठीक, भाई, आप क्या सब मेरे भरोसे पर मरे है। सबने दानमल की इज़्जत बचाने के लिये, ठीक टाइम पर उसका भुगतान हो जाय, इस उद्देश से, उसे एक सच्चा, ईमानदार, आदमी समझकर रुपया दिया। उसे तो मै दो ही महीने से जानता हूँ, पर उसका कुटुम्ब प्रसिद्ध कुटुम्ब था। वह भी अच्छा आदमी दिखता था। क्यो लखमीदास जी, कमलाचरण जी, आप लोग तो उसे बहुत दिनो से जानते है ?

लखमीदास—(**बेपरवाही से**) बहुत थोडा। जोधपुर के स्कूल मे कुछ दिन साथ रहा था।

कमलाचरण—और मेरा जयपुर के कॉलेज मे।

रूपचन्द—यहाँ भी उसने आरभ मे अच्छा काम किया।

कैलाशचन्द्र—कमाया था, इसलिए।

लखमीदास—और क्या ?

कमलाचरण—इसमे क्या सन्देह है ?

रूपचन्द—भुगतान न करता तो न करता, दिवालिया हो जाता, पर जिन गरीबो से उनकी जायदादे रहन कराकर क़र्ज लिया उन्हे तो पटा देता।

[नीलरतन फूट फूट कर रोने लगता है। मुमताजुद्दीन रूमाल से आँखें पोंछता है।]

रूपचन्द—ओ ! यह आप लोग क्या करते है ! मुझे देखिये, मेरी तरफ देखिये। मुझे देखकर तो हिम्मत रखिये।

बैरिस्टर—ऑफ कोर्स ।

सिरिश्तेदार—लेकिन वह तो कुछ कह ही नही रहा है। उसने कोई कौन्सिल भी एन्गेज नही किया ।

रूपचन्द—कहेगा वह क्या ? चैक्स पर उसके दस्तखत है, इससे क्या वह इकार कर सकता है ? फिर (**सबकी तरफ़ इशारा कर**) इन सब ने मेरे सामने उसे कैश रुपया दिया है ।

सिरिश्तेदार—हाँ, यह तो आपने अपनी गवाही मे कहा ही है।

रूपचन्द—मुझे तो यकीन है, सिरिश्तेदार साहब, कि वह फौजदारी मे कभी जेल जाना मजूर न करेगा और इन सब चैक्स का पेमेन्ट अपने मुल्क से रुपया मँगाकर करेगा।

सिरिश्तेदार—पर पेमेन्ट करने से क्या होता है, जनाब, चैक्स के पेमेन्ट करने पर भी उसे जेल तो जाना ही पडेगा ।

लखमीदास—यह क्यो ?

सिरिश्तेदार—जनाब, मुकदमा है चीटिंग का। ताजीरात हिन्द्र की दफा ४२० के मुताबिक । उसने आप सबसे रुपया लेकर यह जानते हुए भी कि उसके चैक्स का पेमेन्ट न होगा, आप लोगो को धोखा देकर आपको झूठे पोस्टडेटेड चैक दिये है। क्यो बैरिस्टर साहब ?

बैरिस्टर—ऑफ कोर्स। ऑफ कोर्स।

[नेपथ्य में 'शान्ति शान्ति' आवाज आती है। सिरिश्तेदार और अहलकार जल्दी से अपनी अपनी कुरसी के निकट जाकर खड़े हो जाते हैं। बैरिस्टर, रूपचन्द और उसके साथी अपनी बेंच के सामने अदब से खड़े हो जाते हैं। कोर्ट में अब बहुत से आदमी आ चुके हैं, इनमें कई बैरिस्टर और वकील भी हैं। सर्वसाधारण अन्य बेंचो के सामने तथा बैरिस्टर वकील लोग कुर्सियो के सामने खड़े हो जाते है। पुलिस सार्जेन्ट कमरे के अन्दर आकर रोब से खड़ा हो जाता है। मजिस्ट्रेट का प्रवेश। मजिस्ट्रेट की अवस्था क़रीब ४० वर्ष की है। वह गोरे रंग का ठिगना और मोटा बंगाली है। मूँछें नही हैं। सिर के बाल कुछ कुछ सफ़ेद हो गये हैं। वह काले रंग का बाला बरदार अँगरखा, उस पर काला ही चोगा और पतलून पहने हुए हैं। सिर पर गोल बंगाली पगड़ी है। मजिस्ट्रेट अपनी कुरसी पर बैठता है, सिरिश्तेदार और अहलकार भी अपनी अपनी कुर्सियों पर। रूपचन्द और उसके साथी बेंचो पर बैठते हैं। रूपचन्द का बैरिस्टर आगे बढ़कर अन्य बैरिस्टरों और वकीलों के साथ की कुर्सियों पर बैठता है। बाक़ी के लोगों में कुछ तो बेंचो पर बैठते हैं और कुछ खड़े रहते हैं। कोर्ट में निस्तब्धता छा जाती है। सिरिश्तेदार एक फ़ाइल लेकर मजिस्ट्रेट के सामने रखता है।]

मजिस्ट्रेट—(फाइल देखते हुए) दानमल मुलज़िम को हाज़िर करो !

[चपरासी बाहर जाता है ।]

नेपथ्य में—(ज़ोर से) दानमल मुलजिम हाजिर है ?

[मजिस्ट्रेट फाइल देखता रहता है। कुछ ही देर में दो पुलिस कान्सटेबलो के साथ दानमल का प्रवेश। कान्सटेबलो की वर्दी बंगाल पुलिस के समान है। दानमल का सारा रूप एकदम बदल गया है। उसका सौन्दर्य, प्रसन्नता और प्रफुल्लता न जाने कहाँ चली गई है। वह नंगे सिर है और रूखे बाल फैले हुए है। चेहरे पर हजामत बढ़ गई है। खादी का कुरता और धोती काफी मैले हो गये है। पैरों के जूतों में बहुत कीचड़ लगा हुआ है। उसके एक हाथ में हथकड़ी है, जिसकी चेन एक कान्सटेबल के हाथ में है। दानमल आकर मुलजिम के कटहरे में खड़ा हो अपने अत्यधिक उदास और उतरे हुए मुख को नीचे की तरफ झुका लेता है। दोनों कान्सटेबल उसके इधर उधर कटहरे के बाहर खड़े हो जाते है। जनसमुदाय एक टक उसकी ओर देखने लगता है।]

मजिस्ट्रेट—(दानमल की ओर देखकर) तुम जो कुछ केना चाता उसे इस आनरेबिल कोर्ट का सामने के सकता।

[दानमल कुछ देर उसी तरह सिर झुकाये खड़ा रहता है, कुछ नही कहता, फिर धीरे धीरे बोलना शुरू करता है।]

दानमल—(उसी प्रकार सिर झुकाये हुए मानो अपने आपसे कह रहा है) मुझ पर मुकदमा चला है दफा ४२० के अनुसार। (कुछ रुककर) अर्थात् मैंने चीटिंग किया है, धोखा दिया है, मै चीट हूँ, मै धोखेबाज हूँ। (फिर कुछ ठहरकर एकाएक सिर उठाकर बड़े ऊँचे स्वर में) मैंने धोखा दिया है! मै धोखेबाज़ हूँ! किसे धोखा दिया? (सिर घुमाकर कैलाशचन्द्र इत्यादि की तरफ देखते हुए और जोर से) कैलाशचन्द्र को? नीलरतन को? लखमीदास को? कमलाचरण को? (एकदम आवाज गिर जाती है जैसे थक गया हो) इनके गवाह है रूपचन्द जी! (रुककर लंबी साँस लेता है। लंबी साँस लेते लेते ही उसका सिर फिर झुक जाता है। धीरे धीरे) मैंने धोखा देने का यह रास्ता क्यो पकडा? लडाई के कारण? हाँ, लडाई के कारण। पिछली लडाई मे लोगो ने बहुत धन कमाया था। (फिर एकाएक सिर उठाकर ज़ोर से) इसी कलकत्ते मे न जाने कितने बने थे। (फिर कुछ रुककर एकाएक सिर झुकाकर) सट्टा? फाटका? हाँ, सट्टा फाटका। कितने बने इस सट्टे फाटके मे? इस समय के सभी दानवीर तो। (कुछ रुककर) सट्टा, फाटका? सट्टा, फाटका, याने जुआ। और ये सब जुआड़ी। पर...पर... (एकाएक सिर उठाकर ज़ोर से) सफल जुआडी। (ज़ोर से हँसकर) धनी जुआडी! (कुछ रुककर) कौन इन जुआडियो का मान नही करता? कौन

इन धनवानो की इज्ज़त नही करता ? बड़े बडे धर्माचार्य, बड़े बडे समाज-सेवक, बडे बडे राजनैतिक नेता.... अरे ...सभी तो, सभी तो, इनके चारो ओर घूमते है। इनकी पद-वन्दना करते है। **(फिर एकाएक सिर झुक जाता है। कुछ रुककर धीरे धीरे)** कोई धनवान बनना चाहता है स्वय सुख भोगने, कोई धन कमाने की इच्छा करता है नाम बढाने और कोई धन के सग्रह मे प्रयत्नशील होता है दूसरो की सेवा करने। **(फिर कुछ रुककर)** पहला निकृष्ट, दूसरा मध्यम और तीसरा उत्तम उद्देश्य है। **(फिर कुछ रुककर)** मेरा उद्देश्य तीसरा था। शायद दूसरा भी अन्त करण मे छिपा हो, पर पहला कदापि नही। साधन था जुआ। सफल होता तो तो . पहले सफलता मिली भी. तब तब मेरी पद वन्दना करने वाले भी काफी .काफी से ज्यादा लोग हो गये थे। मेरा मस्तिष्क भी सफलता के नशे से भर गया था। पर नही .. अन्त मे असफल हुआ। **(एकदम रुककर चेहरा एकदम नीचे झुका लेता है। कुछ देर बाद एकाएक सिर उठाकर जोर से)** इन जुआडी—धनवानो ने, इन जुआडी श्रीमानो के पूजक धर्माचारियों, समाज-सेवको, राजनैतिक नेताओ ने मेरे मन मे भी, **(रुककर एकदम धीरे से)** इस छोटे से हृदय मे भी महत्त्वाकाक्षा को, महत्त्वाकाक्षा को उत्पन्न किया। 'महाजनो येनगत स पन्था' के अनुसार मै भी उसी पथ का

पथिक होने चला, जिस पर इतने बडे बड़े जन चले थे। **(कुछ रुककर)** पर. . पर शायद साध्य से साधन को कम महत्त्व नही है। और सफलता ? . . . . सफलता को तो सबसे अधिक। मै बुरे साधन द्वारा भी यदि सफल हो जाता ? . . . पर . . . पर . . . . मै असफल . . . असफल हुआ . . . वह बुरे साधन का उपयोग कर। . . . . **(एकदम ज़ोर से मजिस्ट्रेट की ओर देखकर)** मजिस्ट्रेट साहब, मजिस्ट्रेट साहब, आई प्लीड गिल्टी। मै दोष स्वीकार करता हूँ। मै गुनाह मजूर करता हूँ। मैने चीटिंग किया है। मैने धोखा दिया है। मै चीट हूँ। मै धोखेबाज़ हूँ। **(कैलाशचन्द्र वग़ैरह की ओर देखकर)** मैने कैलाशचन्द्र से एक लाख रुपया लिया है। मैने नीलरतन से साठ सहस्र टाका पाया है। मुमताजुद्दीन ने मुझे सत्तर हज़ार रुपया दिया है। लखमीदास का, मेरे स्कूल के सहपाठी लखमी दास का मुझ पर पेतालीस हज़ार रुपया पावना है। कमलाचरण, मेरे कालेज के साथी कमलाचरण ने भी मुझे चालीस हज़ार रुपये देने की कृपा की है। और **(मजिस्ट्रेट की तरफ़ देख)** और . . मजिस्ट्रेट साहब, यह सब रुपया, जैसा मेरे मुनीम रूपचन्द ने अपनी गवाही मे कहा, उनके सामने . . . . **(थकावट के कारण एकदम धीरे धीरे)** उनके सामने, मुझे कैश मिला है, भुगतान मे देने के लिये। **(और धीरे)** इन सब को धोखा देने के लिये मैने इन्हे, यह जानते हुए भी

कि ये चैक न सिकरेंगे, झूठे पोस्टडेटेड चैक दिये है। (एकदम ज़ोर से मजिस्ट्रेट की तरफ़ देखकर) दीजिए, मजिस्ट्रेट साहब, दीजिए, मुझे ऐसी सख़्त...ऐसी सख़्त... सज़ा दीजिए कि चाहे सारा समाज, धर्माचार्य, समाज-सेवक, और दरिद्रनारायन के झूठे, पर लक्ष्मी नारायण के सच्चे ूजक ये राजनैतिक नेता, रुपये का पूजन करें, श्रीमानो का चरण चुबन करे, पर मेरे मन मे, मेरे छोटे से हृदय मे, इसकी प्राप्ति की अभिलाषा के अवशेष का अवशेष भी शेष न रहे। मजिस्ट्रेट साहब...मजिस्ट्रेट साह....

[दानमल एकाएक कटहरे में गिर पड़ता है। कान्सटेबल दौडकर दानमल को कटहरे से उठाते है। कोर्ट में कुछ हल्ला मचता है।]

चपरासी—शान्ति! शान्ति!

मजिस्ट्रेट—(ज़ोर से) कोई डाक्टर?

[जनसमुदाय में से एक बंगाली युवक डाक्टर, जो अंग्रेज़ी वस्त्रों में है, दानमल की तरफ बढ़ता है। दानमल का शरीर दोनों कान्सटेबलो के हाथों में है। डाक्टर पहले उसकी नब्ज़ देखता है। फिर तेठासकोप से उसका हार्ट।]

डाक्टर—(ज़ोर से) ओ! मूर्छा नेई! हार्ट फेल हो गिया।

[रूपचन्द और उसके साथी एक दूसरे की तरफ

देखते हैं। कोर्ट में एकदम हल्ला मचता है।]

जनसमुदाय में का एक वृद्ध—रुपये की चोट थी।

दूसरा वृद्ध—रुपये की चोट ऐसी ही होती है।

एक युवक—(दोनो वृद्धो को तरफ़ घृणा से देखते हुए) बेवकूफ!

[वह युवक शीघ्रता से दानमल की लाश के पास पहुँचता है। मजिस्ट्रेट का प्रस्थान। कान्सटेबल दानमल की लाश को धीरे धीरे कोर्ट के बाहर ले जाने लगते हैं। भीड़ उसके पीछे पीछे जाने लगती है।]

यवनिका-पतन

समाप्त

कंगाल नहीं

पात्र, स्थान

पात्र

राजमाता—सिलापरी गाँव की मालगुज़ारिन, राजगोंड वंश की राजमाता

बड़े राजा
मँझले राजा
छोटे राजा } राजमाता के तीन पुत्र

बड़ी रानी—बड़े राजा की पत्नी

मँझली रानी—मँझले राजा की पत्नी

राजकुमारी—राजमाता की पुत्री

स्थान—सिलापरी गाँव (ज़िला सागर, मध्यप्रान्त)

नोट—इस नाटक की कथा को मध्य प्रान्त के प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता रायबहादुर हीरालाल ने लेखक को बताई थी। कथा एक सत्य घटना है।

कंगाल नहीं

स्थान—सिलापरी गाँव मे राजमाता का घर

समय—सन्ध्या

[एक तरफ को राजमाता के घर की खपरेल परछी दिखाई देती है, जिसके कई खपरे टूट गये है। परछी में एक ओर घर के भीतर जाने का दरवाजा दिखता है, जिसके किवाड़ो की लकड़ी भी टूट गई है। यह दरवाजा खुला हुआ है और इसके अन्दर घर के छोटे से मैले कुचैले कोठे का एक हिस्सा दिखाई देता है। परछी के सामने मैदान है। मैदान के एक तरफ़ दूर पर गाँव के कुछ झोपड़े दिखते है और दूसरी तरफ खेत का एक हिस्सा, जिसमें छोटी छोटी बिरल सूखी सी फ़सल खड़ी है। परछी में एक फटे से बोरे पर राजमाता बैठी है। उनकी उम्र क़रीब ५० साल की है। रंग साँवला है। मुख और शरीर पर कुछ झुर्रियाँ पड़ गई है। बाल आधे से अधिक सफ़ेद हो गये है। शरीर बहुत दुबला पतला है। शरीर पर वे एक मैली सी लाल बुंदेलखंडी सूती साड़ी पहने है, जो कई जगह से फटी हुई है और जिसमें कई जगह थिगड़े लगे है। राजमाता के पास बड़ी रानी और मँझली रानी जमीन पर ही बैठी हुई है। दोनो साँवले रंग

की है। बड़ी रानी की उम्र करीब पच्चीस वर्ष और मँझली रानी की क़रीब बीस वर्ष की है। दोनों युवतियाँ होते हुए भी कृश है और उनकी आँखों के चारों तरफ के गढ़ो और सूखे ओठो से जान पड़ता है कि उन्हें पेट भर खाने को नही मिलता। दोनो राजमाता के समान ही लाल रंग की साड़ियाँ पहने है, जो कई जगह से फटी हुई और थिगड़ैल भी है। दोनों के हाथों में मोटी मोटी लाख की एक एक चूडी है। तीनों में बातचीत हो रही है। राजमाता की आँखो में आँसू भरे है।]

बड़ी रानी—कहाँ तक रज करोगी, माँ, और रज करने से फायदा ही क्या होगा ?

राजमाता—जानती हूँ, बेटी, पर जानने से क्या होता है, जो बात रज की है, उसपर रज आये बिना नही रहता।

मँझली रानी—पर, माँ, जो बात बस की नही, उसपर रज करना फजूल है।

राजमाता—बिना बस की बात ही तो जादा रज पहुँचाती है।

[घर के भीतर से छोटे राजा और राजकुमारी हाथ में एक एक तस्वीर लिये हुए आते है। छोटे राजा की उम्र क़रीब बारह वर्ष की है। वह साँवले रंग और ठिगने क़द का दुबला पतला लड़का है। एक मैली और फटी सी धोती

पहने है, जो घुटने के ऊपर तक चढ़ी है। ऊपर का बदन नंगा है। राजकुमारी करीब ८ साल की सॉवले रंग की दुबली पतली लड़की है। एक मैली सी लाल रंग की फटी हुई साड़ी पहने है। साड़ी इतनी फट गई है कि उसके शरीर का अधिकाश हिस्सा साड़ी में से दिखता है।]

छोटे राजा—माँ, **(राजकुमारी की ओर इशारा कर)** यह कहती है दुर्गावती ने बावन गढ जीते थे, मै कहता हूँ सग्रामशाह ने। फैसला तुम करो, मै सच्चा हूँ या ये?

राजकुमारी—हाँ, तुम फैसला कर दो, माँ।

राजमाता—बेटी, सग्रामशाह ने बावन गढ़ जीते थे, दुर्गावती ने नही।

छोटे राजा—देखा, मैने पहले ही कहा था, यह बीरता आदमी कर सकता है, औरत नही।

[राजकुमारी उदास हो जाती है।]

राजमाता—(राजकुमारी को उदास देखकर) उदास हो गई, बेटी, पर हमारे कुल मे तो औरते आदमियो से कम बीर नही हुई। सग्रामशाह ने बावन गढ जीते तो क्या हुआ, दुर्गावती उनसे कम बीर नही थी।

बड़ी रानी—हाँ, सग्रामशाह ने बावनगढ जीतकर बीरता दिखाई तो दुर्गावती ने अपने प्रान देकर।

मँझली रानी—हाँ, जीत मे बीरता दिखाना उतना कठन नही, जितना हार मे।

[राजमाता रो पड़ती है ।]

बड़ी रानी—माँ, फिर वही, फिर वही ।

छोटे राजा—**(राजमाता के पास जाकर उनके निकट बैठ कर)** माँ, तुम रोती क्यो हो ? मै सग्रामशाह से भी बडा बीर बनूँगा । उनने बावन गढ जीते थे, मै बावन शहर जीतूँगा ।

राजकुमारी—**(राजमाता के पास जाकर)** और, माँ, मै दुर्गावती से भी बडी बीर बनूँगी ।

छोटे राजा—**(संग्रामशाह की तस्वीर दिखाते हुए)** देखो, माँ, सग्रामशाह से मै कितना मिलता जुलता हूँ । अगर तुम मेरी इस फटी धोती की जगह जैसे कपडे ये पहने है, वैसे पहना दो, मुझे तलवार मँगवा दो, और ऐसा ही घोडा खरीद दो, तो मै अकेला बावन शहर जीत लाऊँ ।

राजकुमारी—और, माँ, देखो, मै दुर्गावती से कितनी मिलती हूँ । अगर तुम मुझे भी दुर्गावती जैसे कपड़े पहना दो, हथियार मँगवा दो, और जैसे हाथी पर ये बैठी है, वैसा हाथी मँगवा दो, तो मै भी दुर्गावती से बडी बीर बन जाऊँ ।

[राजमाता के और अधिक आँसू गिरने लगते है ।]

बड़ी रानी—**(छोटे राजा और राजकुमारी को हाथ पकड़ कर उठाते हुए)** अच्छा, राजा जी, और, बाई जी, मेरे साथ चलो, मै तुम दोनो की सब चीज़े मँगा दूँगी ।

[दोनों को लेकर बड़ी रानी घर के भीतर जाती है। मँझली रानी राजमाता के निकट सरककर अपनी फटी साड़ी से राजमाता के आँसू पोंछती है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

मँझली रानी—माँ, थोड़ा तो धीरज रखो।

राजमाता—बहुत जतन करती हूँ, बेटी, धीरज रखने के बहुत जतन करती हूँ; पर जब इन बच्चो की ऐसी बाते सुनती हूँ, तब तो हिरदे मे ऐसा सूल उठता है जैसा भूखे पेट और नगे तन रहने पर भी नही। **(कुछ ठहर कर)** और, बेटी, एक बात जानती है?

मँझली रानी—क्या, माँ?

राजमाता—ये बच्चे ही इन तस्वीरो को लिये घूमते है और ऐसा सोचते और कहते है, यह नही, तेरे मालक और बड़ी बहू के मालक भी जब छोटे थे तब वे भी इसी तरह इन तस्वीरो को लिये घूमते और यही सब कहते फिरते थे। और वे ही नही, मेरे मालक, उनके बाप, और उनके बाप, और उनके बाप, सब यही सोचते और कहते थे।

मँझली रानी—आह!

[राजमाता लंबी साँस लेती है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

राजमाता—बेटी, सग्रामशाह और दुर्गावती को पीढ़ियाँ बीत गईं। गिरती मे सब ने बढ़ती की सोची। बीती को

सोचा, भवस के लम्बे लम्बे बिचार किये, पर बरतमान किसी ने न देखा और आज.... (कुछ रुककर) आज, बेटी, बावनगढ़ के बिजेता सग्रामशाह के कुल को बावन छदाम भी नसीब नही।

[मँझले राजा का खेत की तरफ़ से प्रवेश। मँझले राजा की उम्र २२, २३ वर्ष की है। रंग साँवला और शरीर दुबला पतला तथा ठिंगना है। एक मैली और फटी सी धोती को छोड़कर और कोई वस्त्र शरीर पर नहीं है। हाथ में थोड़े से गेहूँ के दाने हैं, जो बहुत पतले पड़ गये हैं। उन्हें देखकर मँझली रानी घर के भीतर चली जाती है।]

मँझले राजा—(गेहूँ के दानो को राजमाता के सामने पटक कर भर्राये हुए स्वर में) माँ, सब हार मे झिरी पड गई। बीज निकलना भी कठन है।

राजमाता—(लम्बी साँस लेकर) तब....तब ... तो वसूली भी न होगी।

मँझले राजा—वसूली.....वसूली....माँ, लगान तो इस साल सरकार ने मुल्तबी कर दिया।

राजमाता—(एकदम घबड़ाकर खड़े होते हुए) मुल्तबी हो गई ?

मँझले राजा—हाँ, माँ, आज ही हुकम आया है।

राजमाता—तो सिलापरी गॉव से जो एक सौ बीस रुपया बचते थे, वे भी न आयेंगे ?

मँझले राजा—इस बरस तो नही, माँ।

राजमाता—फिर हम लोग क्या खायँगे, पियेगे?

मँझले राजा—पिनसन के सरकार एक सौ बीस रुपया साल देती है न?

राजमाता—सात जीव एक सौ बीस रुपया साल में गुजर करेगे? महीने में दस रुपये, एक जीव के लिये तीन पैसे रोज?

मँझले राजा—बड़े भाई ने एक उपाय और किया है, माँ!

राजमाता—(उत्सुकता से) क्या, बेटा?

मँझले राजा—तुम धीरज रखकर बैठो तो बताऊँ।

राजमाता—(बैठते हुए) जल्दी बता, बेटा, मेरा कलेजा मुँह को आ रहा है।

मँझले राजा—माँ, अकाल के कारन सरकार ने काम खोला है न?

राजमाता—हाँ, जहाँ कगाल काम करते है।

मँझले राजा—पर जानती हो, माँ, उन्हें क्या मिलता है?

राजमाता—क्या?

मँझले राजा—हमसे बहुत जादा। चार रुपया महीना, एक एक को दो आने रोज।

राजमाता—अच्छा!

मँझले राजा—हम सात है। बड़े भाई ने अरजी दी है

कुल के है, हमारी बडी इज्जत है, हमारा बडा मान है, हमारी आमदनी चाहे तीन पैसा रोज ही हो, पर हमे कगालो की रोजनदारी, दो आना रोज, कैसे मिल सकती है? हमारी भरती कगालों मे कैसे की जा सकती है?

[बड़े राजा ठठाकर हँसते है और लगातार हँसते रहते है। राजमाता के आँसू बहते है और मँझले राजा उद्विग्नता से बड़े राजा की ओर देखते है।]

यवनिका-पतन

समाप्त

वह मरा क्यों ?

पात्र, स्थान

मुख्य पात्र—

हरदत्त—कन्टूनमेन्ट बोर्ड का वाइस प्रेसीडेन्ट

कर्नल सिमसन—मिलिटरी का बडा डाक्टर

कैप्टिन तारासिंह—मिलिटरी का छोटा डाक्टर

स्थान—एक कन्टूनमेन्ट

वह मरा क्यों ?

पहला दृश्य

स्थान—कन्टूनमेन्ट कचहरी का एक कमरा

समय—प्रात काल

[कमरा आधुनिक आफ़िस के ढंग पर सजा हुआ है। राइटिंग टेबिल की आफिस चेअर पर हरदत्त बैठा हुआ है, उसके सामने की दो कुर्सियो पर कर्नल सिमसन और केप्टिन तारासिंह। तीनो अंग्रेज़ी पोशाक पहने है। उम्र के सब अधेड़ है। हरदत्त हिन्दू, सिमसन अंग्रेज और तारासिंह सिख है।]

सिमसन—वो मरा क्यो ?

तारासिंह—हाँ, वह मरा क्यो ?

हरदत्त—सचमुच वह मरा क्यो ?

तारासिंह—गज़ब हो गया, सर !

हरदत्त—सितम हो गया, हुज़ूर !

सिमसन—थर्टी फाइव ईयर्स का एज मे गोरा सोलजर का मरना बेशक एक टाजुब का बाट !

तारासिंह—पोस्ट मारटम मे भी कोई पता नही लगा, सर। बैरैक्स मे कोई एपेडेमिक नही और सेनीटेशन के

इन्तज़ाम की आपने जाँच करा ली।

सिमसन—कल राट टक वो बेशक आचा ठा।

तारासिंह—हाँ, सर, शाम को वैजीटेबिल मारकेट गया, स्वीटमीट शाप्स पर बैठा, और सिनेमा देखा।

सिमसन—इन सब जगा का जाच करना होगा।

हरदत्त—तब अभी चलिए, हजूर, जिससे दोपहर के पहले जाँच खत्म हो जाय।

सिमसन—बेशक और एकडम जाना चाये। जिस टरा कमसरियट का ठेकेदार को हम लोग ने एकडम हवालाट मे बन्ड कर डिया उसी टरा इन सब जगा का जाँच बी एकडम होना चाये।

तारासिंह—बिना ख़बर दिये, सर, जिससे अगर कहीं कुछ गडबड हो तो वहाँ के लोग उसको ठीक न कर सके।

सिमसन—बेशक ठीक।

[तीनों खड़े होते हैं। दृश्य बदलता है।]

दूसरा दृश्य

स्थान—कन्टूनमेन्ट का वैजीटेबिल मारकेट

समय—प्रातःकाल

[मारकेट का कुछ हिस्सा दिखाई देता है जहाँ फल, साग भाजी इत्यादि की दूकानें लगी हैं। कुछ कूँजड़े और

कूँजड़िन दूकानो पर बैठे हुए है। कुछ ख़रीददार इधर उधर आ जा रहे है और कुछ खड़े होकर साग भाजी, फल इत्यादि ख़रीदते है। दूर पर हरदत्त, सिमसन और तारासिंह प्रवेश करते हुए दिखाई पड़ते है। ये लोग एक एक दूकान को ग़ौर से देखते हुए धीरे धीरे नजदीक आ रहे है। इन्हें देखकर दूकानदार खड़े हो होकर झुक झुक कर सलाम करते है और कई ख़रीददार भी। कुछ ख़रीददार इनका रास्ता छोड़कर अलग खड़े हो जाते है। सिमसन निकट की कूँजड़े की एक छोटी सी दूकान पर रुक जाता है। यह कूँजड़ा छोटे छोटे हरे रंग के कुम्हड़े बेच रहा है, जो आधे आधे कटे हुए उल्टे रखे है।]

सिमसन—(तारासिंह को एक तरफ लेकर उन कुम्हड़ो को दिखाकर धीरे से) वो क्या है?

तारासिंह—(उसी तरफ ग़ौर से देखते हुए) वो, सर?

सिमसन—हाँ।

तारासिंह—(कुछ सोचते हुए) कुछ ठीक समझ मे नही आता, सर।

सिमसन—टारटाइज़ हो सकटा।

तारासिंह—टारटाइज़?

सिमसन—ेशक कच्चा टारटाइज़।

[वह कूँजड़ा इन लोगों को इस तरह ग़ौर से अपनी

तरफ़ देखते और बातें करते हुए देखकर जल्दी जल्दी अपने कुम्हड़े बाँध कर वहाँ से उठता है।]

सिमसन—ओ! वो भागटा!

तारासिंह—(जोर से उस कुँजड़े से) ठैरो, तुम्हारे सामान की जाँच करना है।

[कुँजड़ा भागता है। तारासिंह उसके पीछे दौड़ता है। मार्केट में खलबली मच जाती है।]

सिमसन—टारटाइज़, वह बेशक टारटाइज़ है।

हरदत्त—टारटाइज क्या होता है, हुजूर।

सिमसन—वो जो पानी मे रेटा है।

हरदत्त—पानी में.... (रुक जाता है।)

सिमसन—आप समजा नेई। (हाथ की उँगुलियाँ फैला फिर उन्हें सिकोड़ और फिर फैला कर) जो इस टरा अपना नेक् और फीट को बार निकालटा और अन्डर डालटा और फिर बार निकालटा।

हरदत्त—कोई जानवर?

सिमसन—बेशक जानवर। आप अबी बी नेई समजा। टारटाइज़, मिस्टर हरडट्ट, टारटाइज़। और ये डोकानडार बेशक कच्चा टारटाइज़ बेचटा ठा।

हरदत्त—(आश्चर्य से) कच्चा टारटाइज़, हुज़ूर?

सिमसन—बेशक कच्चा टारटाइज़, इसीलिए टो वो भागा और इसी को खाकर वो गोरा मरा।

हरदत्त—इसी को खाकर वह गोरा मरा ?

सिमसन—बेशक इसी को खाकर।

[तारासिंह कुँजड़े को पकड़कर लाता है। कुम्हड़े कुँजड़े के कपड़े में बँधे हैं।]

सिमसन—टुम टारटाइज़ बेचटा ?

कुँजड़ा—(घबड़ाकर डरते हुए) टार. . .टार. . .टार!

सिमसन—(चिल्लाकर) टार टार क्या ? बेशक कच्चा टारटाइज़ बेचटा। टोमने गोरा सोल्जर का ख़ून किया।

कुँजड़ा—(और भी घबड़ाकर) ख़ून !

सिमसन—बेशक ख़ून।

कुँजड़ा—(एकदम घबड़ाकर काँपते हुए) टार . टार. . . .ख़ून।

तारासिंह—टारटाइज़ माने कछुआ, समझा, कच्चा कछुआ।

कुँजड़ा—(हिम्मत से) कछुआ नहीं, हुजूर, मैं तो कुम्हड़ा बेचता हूँ।

सिमसन—टारटाइज़ को हिन्डोस्टानी में कुम्हडा केटा ?

कुँजड़ा—(अपनी गठरी खोलकर कुम्हड़ों को दिखाते हुए) हुजूर ये कछुए नहीं, कुम्हड़े हैं।

[सिमसन एक कुम्हड़े को हाथ में लेकर आश्चर्य से उसे इधर उधर घुमाकर देखता है। कुँजड़ा आँख मिचकाते हुए अपने एक साथी की तरफ़, तारासिंह मुँह फाड़कर सिमसन

की ओर और हरदत्त मुस्कराते हुए मुँह फेर कर एक दूसरे दूकानदार की तरफ़ देखता है। बाज़ार के कई लोग मुँह फेर फेर कर हँसते हैं।]

सिमसन—(गंभीरता से सोचते हुए) तब वो मरा क्यो ?

[दृश्य बदलता है।]

तीसरा दृश्य

स्थान—बाज़ार

समय—प्रात काल

[सड़क के एक तरफ दूकानें दिखाई देती हैं। ज्यादा-तर दूकानें हलवाइयो की है। अपनी अपनी दूकानों पर दूकानदार बैठे हैं। अनेक मनुष्य आ जा रहे हैं। कुछ लोग दूकानों पर खड़े होकर सौदा ख़रीद रहे हैं। दूर पर हरदत्त सिमसन और तारासिंह आते हुए दिखाई देते है। ये लोग ग़ौर से हलवाइयो की दूकानें देखते देखते नज़दीक आ रहे हैं। इन्हें देखकर कई दूकानदार खड़े हो होकर इन्हें सलामें करते है। कई आने जाने वाले भी खड़े हो जाते है और इनमें से भी कई इन्हें सलाम करते है। कुछ निकट आकर तीनों खड़े हो जाते हैं।]

सिमसन—(ज़ोर से) कल शाम को हमारा रेजीमेन्ट

का एक गोरा सोल्जर ने किसका डोकान का मिटाई खाया ?

[दूकानदार चकपका कर एक दूसरे की तरफ़ देखते हैं। सिमसन की बात का कोई उत्तर नही देता।]

सिमसन—(ज़ोर से) टुम लोग अगर नेई बटलायगा टो टुम सबका डोकान बन्ड करा डिया जायगा।

[दूकानदार फिर सब एक दूसरे की तरफ़ देखते है। एक समझदार सा हलवाई अपनी दूकान छोड़कर इन तीनों के पास आता है और सलाम करता है।]

सिमसन—टोमारा डोकान का खाया ?

हलवाई—किस सोल्जर ने हुजूर ?

सिमसन—जो राट को मर गिया ?

हलवाई—यह मै, या हम लोगो मे से कोई भी, कैसे कह सकते है कि उन सोल्जर साहब ने मिठाई खाई या नही और खाई तो किसकी दूकान से ?

सिमसन—क्यूँ ?

हलवाई—हुजूर, हम लोग ख़रीददारो के नाम तो लिखते नही है ?

सिमसन—(आश्चर्य से) नाम नेई लिखटा, टो बिल कैसा बनाटा ?

हलवाई—बिल !

सिमसन—बेशक बिल। चूआ का बिल नेई, खाना का बिल।

तारासिंह—हाँ, भाई, रुक्के पर हिसाब लिख खरीददारो को उसे देकर ही तो रुपया वसूल करते होगे ?

हलवाई—हम लोग कोई बिल नही बनाते, हुजूर।

सिमसन—खाने का बिल नेई बनाटा ?

हलवाई—जी, नही।

सिमसन—टो रुप्या कैसा लेटा ?

हलवाई—सौदा देते है, हुजूर, और हाथ के हाथ रुपया ले लेते है।

सिमसन—ओ ! टुम बेशक जानटा कि उस सोल्जर ने किसका डोकान से मिटाई खाया।

हलवाई—हुजूर, मै बिलकुल नही जानता।

सिमसन—टोमारा डोकान का कल किसी सोल्जर ने मिटाई खाया ?

हलवाई—कई ने हुजूर।

सिमसन—टो जो मर गिया उसने बी बेशक टोमारा डोकान का मिटाई खाया। टोमने उसका खून किया।

हलवाई—**(घबड़ाकर)** खून !

सिमसन—बेशक खून।

हलवाई—**(और भी घबड़ाकर)** हुजूर।

सिमसन—हम टोमारा डोकान का जाँच करेगा।

[सिमसन आगे बढ़कर उस हलवाई की दूकान की

मिठाइयाँ देखता है। तारासिंह भी उसकी मदद करता है। हरदत्त खड़ा रहता है। बहुत से आदमी इधर उधर खड़े हो जाते हैं। बहुत से घबड़ा कर इनकी तरफ़ देखते है।]

सिमसन—(पिश्ते की हरी बरफ़ियों को देखकर) ये सडा मिटाई बेचटा ?

हलवाई—सडी मिठाई !

सिमसन—बेशक सड़ा मिटाई। इसी को खाने के सबब वो गोरा मर गिया।

तारासिह—(सिमसन को एक तरफ़ लेकर धीरे से) सर, वह सडी मिठाई नही है, वह तो बडी बढ़िया हिन्दुस्थानी मिठाई है।

सिमसन—बरिया हिन्डोस्टानी मिटाई ?

तारासिह—हॉ, सर, पिश्ते की बरफी।

सिमसन—(गंभीरता से सोचते हुए) तब वो मरा क्यो ?

[हरदत्त इनके निकट आता है। अधिकांश मनुष्य इनकी तरफ़ देखते हैं। दृश्य बदलता है।]

चौथा दृश्य

स्थान—सिनेमा हाल

समय—प्रात काल

[सिनेमा हाल का कुछ हिस्सा दिखाई देता है। एक तरफ़ के दरवाज़े, उनपर 'वेन्टीलेटर', सीलिंग से लटकते हुए बिजली के कुछ पखे और बैठने की बेंचो की कुछ कतारें दिखती हैं। हरदत्त, सिमसन और तारासिह एक दरवाज़े से प्रवेश करते हैं। उनके साथ सिनेमा का मैनेजर है। वह नौजवान आदमी है और अंग्रेजी ढग की पोशाक पहने है।]

सिमसन—(आगे आकर सिनेमा के मैनेजर से) टो आप नेई के सकटा कि वो सोल्जर किस जगा बेटा ठा ? और उसका चारो टरफ कोन लोग बेटा ठा ?

मैनेजर—मैं तो यह भी नही कह सकता कि वह सिनेमा देखने आया था या नही !

सिमसन—वो बेशक आया ठा, ये हम के सकटा, इसमे आपका नो नेई चल सकटा, नो केने से आपका बचट बी नेई हो सकता।

मैनेजर—बचत का सवाल नही है, कर्नल साहब, सवाल तो यह है कि..........

सिमसन—(बीच ही में ज़ोर से) हम इस मामला पर बेहस नेई करना चाटा, हम ये जानना चाटा कि वो कहाँ बेटा ठा ? और उसका चारो टरफ कोन लोग ठा ?

मैनेजर—मैं इसके सिवाय और कुछ नही कह सकता कि सोल्जर ज़्यादातर आठ आने की सीटो पर बैठते है। वह

आया होगा तो इसी क्लास मे बैठा होगा।

सिमसन—सोल्जर्स के सिवा डूसरा लोग बी इस क्लास मे बेटा ठा ?

मैनेजर—बहुत लोग।

सिमसन—ओ ! टो उसको किसीका कोई इन्फैक्शन लगा।

मैनेजर—इन्फैक्शन, कर्नल साहब ?

सिमसन—बेशक इन्फैक्शन। इन्फैक्शन साँस से लग सकटा। हवा एक का बॉडी को छूकर डोसरा का बॉडी छुए, उससे लग सकटा।

[कुछ देर सब चुप रहते हैं।]

सिमसन—**(कुछ सोचते हुए)** कल बोट भीर ठा ? आप झूठ नेईं बोलेगा, क्यूँकि किटना आडमी ठा, इसका पटा टिकिट का बिकरी से लग जाइगा।

मैनेजर—मै झूठ हरगिज़ नही बोलूँगा, कर्नल साहब, कल काफी भीड़ थी।

सिमसन—टो वो भीर मे सफोकेट हो गिया।

मैनेजर—पर पखे चल रहे थे, कर्नल साहब।

सिमसन—**(पंखो की तरफ देखकर)** सब खा चलटा ठा ?

मैनेजर—जी हाँ।

सिमसन—ज़ोर से ?

मैनेजर—जी हाँ, पूरी स्पीड से।

सिमसन—ओ! टो वो सरडी खा गिया।

मैनेजर—इस गरमी की मौसम मे बिजली के पखो से इतनी सरदी तो किसी को नही लग सकती, कर्नल साहब, कि वह सिनेमा से लौटते ही मर जाय।

सिमसन—ये आप ले मैन क्या समजटा। इन बाटो को हम डाक्टर लोग जानटा, आप नेई जानटा कि बिजली का पखा कबी कबी केटना नोकसान पोचाटा।

[कुछ देर सब लोग चुप रहते हैं।]

सिमसन—(कुछ सोचते हुए) कल का पिक्चर केसा ठा?

मैनेजर—अच्छा था।

सिमसन—सेनसेशनल?

मैनेजर—हाँ, काफी सेनसेशनल था।

सिमसन—टो हार्ट पर उसका बेशक असर हो सकटा, उससे मर सकटा।

मैनेजर—इतना सेनसेशनल नही था, कर्नल साहब, कि एक सोल्जर के हार्ट पर इतना असर हो कि वह सिनेमा से लौटते ही मर जाय।

सिमसन—(कुछ सोचते हुए) अगर पिक्चर डिप्रेसिंग ठा टो उससे बी हार्ट बेशक सिंक हो सकटा।

मैनेजर—(चिढ़कर) मै क्या कहूँ।

सप्त-रश्मि

आप लोगो का तो रुपया ही गया है। मेरी तो इज्ज़त चली गई। मैं बाज़ार मे किसी को मुँह दिखाने योग्य भी नही रहा। ज़िन्दगी मे मैंने बडी बडी जगह काम किया है, बडे बडे कन्सर्न्स को कन्ट्रोल किया है, पर मेरी साख कभी नही गई। 'जाय लाख रहे साख', पर इस दानमल ने तो मेरी साख भी ख़ाक मे मिला दी। क्या करूँ? दो ही रास्ते थे—या तो आत्महत्या कर लेता, या आप लोगो की सहायता कर इस परोपकारी काम से कुछ शान्ति लाभ करता। आत्महत्या करना तो बुज़दिली होती, इसलिये इस परोपकार पर कमर कसी। (कुछ ठहरकर) और देखिये, मुझे विश्वास है कि वह फौजदारी मे कभी जेल जाना स्वीकार न करेगा। इन सब पोस्टडेटेड चैक्स के पेमेन्ट के लिये वह देश से रुपया मँगायेगा, अवश्य .. ..

[एक नवयुवक बैरिस्टर का प्रवेश। उसकी उम्र करीब ३० वर्ष की है। वह साँवले रंग का ऊँचा पूरा इकहरे शरीर का बंगाली है। अंग्रेजी लिबास में है।]

रूपचन्द—(उसे देखकर) ओ! अपने बैरिस्टर साहब आ गये।

[सब लोग उठकर उसके नज़दीक जाते हैं और फिर सब आकर उसी बेंच पर बैठते हैं।]

बैरिस्टर—यू आर श्योर टु विन। यू आर श्योर टु विन।

[सिरिश्तेदार और अहलकारो का प्रवेश। सिरिश्तेदार

की उम्र करीब ५० वर्ष की है। वह सावले वर्ण का ठिगना और दुबला बंगाली मुसलमान है। खिचड़ी बाल और मूछें दाढ़ी है। काले रंग की शेरवानी और ढीला पाजामा पहने है। सिर पर तुर्की टोपी लगाये है।]

सिरिश्तेदार—(रूपचन्दकी तरफ आते हुए) ओ! आप लोग आ गये?

[बैरिस्टर, रूपचन्द और उसके सब साथी खड़े हो जाते और सिरिश्तेदार को झुक झुक कर सलामें करते है। सिरिश्तेदार सलामो का उत्तर देता है।]

रूपचन्द—आज पहले नम्बर पर किसका मुकदमा है, सिरिश्तेदार साहब?

[धीरे धीरे कोर्ट रूम में आदमी आने लगते है। और एक पुलिस सार्जेन्ट भी तमगा लगाये कभी कमरे के अन्दर आता है और कभी बाहर जाता है।]

सिरिश्तेदार—आप ही लोगों का।

मुमताजुद्दीन—आज क्या क्या होगा, सिरिश्तेदार साहब?

सिरिश्तेदार—अब तो बहुत थोडा काम बाकी है। प्रासीक्यूशन की तरफ़ का स्टेटमेन्ट हो ही गया। (रूपचन्द की ओर इशारा कर) इनकी गवाही भी हो गई। आज पहले एक्यूज़्ड का स्टेटमेन्ट होगा और उसने अगर अपने डिफ़ेन्स मे कुछ कहा तो फिर बहस के लिये पेशी मुकर्रर होगी; क्यो बैरिस्टर साहब?

सिमसन—(कुछ सोचते हुए) देखिये, मिस्टर मैनेजर, आप फौरन पिक्चर का ट्रायल दीजिए।

तारासिंह—यह बिलकुल ठीक है, सर।

हरदत्त—हॉ, देखे उससे हम लोगो के दिल पर भी कैसा असर पडता है।

मैनेजर—बहुत अच्छा, मै अभी ट्रायल देता हूँ।

सिमसन—बेशक, आकिर वो मरा क्यो ?

[दृश्य बदलता है।]

पांचवाँ दृश्य

स्थान—कन्टूनमेन्ट कचहरी का एक कमरा

समय—प्रात काल

[कमरा पहले दृश्य वाला कमरा ही है। राइटिंग टेबिल की ऑफ़िस चेअर पर हरदत्त बैठा हुआ है। उसके सामने दस्तख़त के लिये कई काग़ज़ रखे है। उसकी बग़ल में ऑफिस का हेड क्लार्क खड़ा है। क्लार्क की अवस्था करीब ५० वर्ष की है। पोशाक अंग्रेजी ढंग की है।]

हरदत्त—(टेबिल पर रखे हुए एक काग़ज़ को देखते हुए) तो इस आर्डर के मुताबिक मुझे भी चौबीस घन्टे के भीतर अपना मकान ख़ाली करना पडेगा ?

हेड क्लार्क—जी हाँ, सारा कन्टूनमेन्ट खाली होगा, तो आप ही अपने मकान मे कैसे रहेगे ?

हरदत्त—चौबीस घन्टे के अन्दर लोगो को म्यू बीवी बच्चो के कही रहने का इन्तज़ाम करना है। (**बादल की गरज सुनाई पड़ती है**) यह लीजिये, बिना मौसम पानी बरसने वाला है। शायद ओले भी गिरे।

हेड क्लार्क—इससे क्या, सरकार ?

हरदत्त—और सारे कन्टूनमेन्ट को टैक्स पेयर्स के रुपये से डिसइन्फैक्ट किया जायगा, बिना यह जाने कि किस बीमारी के लिये डिसइन्फैक्ट किया जा रहा है। (**एक काग़ज़ पर दस्तख़त करता है, जिसे हेडक्लार्क उठाता है।**)

हेड क्लार्क—कमसरियट के ठेकेदार साहब की गिरफ्तारी क्या यह जानकर की गई है कि उन्होने फलॉ चीज़ बुरी सप्लाई की ?

हरदत्त—(**दूसरे काग़ज़ पर दस्तख़त करते हुए, जिसे हेड क्लार्क उठाता है**) और यह दूसरा आर्डर है मेहतरों को कि पैखाना गाडा न जाय, कचरा जलाया न जाय, क्योकि उस सब की भी जाँच होगी।

हेड क्लार्क—जी हॉ।

हरदत्त—(**तीसरे काग़ज़ पर दस्तख़त करते हुए, जिसे हेड क्लार्क उठाता है**) और यह तीसरा आर्डर है बाज़ार की सारी मिठाई, और सागभाजी की ज़प्ती का, क्योकि

उसकी भी जाँच होगी।

हेड क्लार्क—जी, सरकार।

हरदत्त—(**लंबी साँस लेकर**) तो यह कन्टूनमेंट है, हेड क्लार्क साहब!

हेड क्लार्क—जी हाँ, और यहाँ एक गोरे की जान की कीमत. . . . .

[**तारासिंह का शीघ्रता से प्रवेश।**]

तारासिंह—(**हरदत्त की टेबिल के निकट आते हुए**) वे तीनो आर्डर अभी इश्यू तो नही हुए, वाइस प्रेसीडेन्ट साहब?

हरदत्त—जी नही, पर मैंने अभी दस्तखत कर दिये हैं, और वे इश्यू हो ही रहे हैं।

तारासिंह—(**कुरसी पर बैठते हुए**) पर अब उनकी जरूरत नही है।

हरदत्त—(**आश्चर्य से**) यह क्यो, क्या वह गोरा जी उठा?

तारासिंह—जी नही, लेकिन मालूम हो गया कि वह मरा क्यो!

हरदत्त—(**आश्चर्य से**) अच्छा!

तारासिंह—(**जेब से एक चिट्ठी निकालकर हरदत्त को देते हुए**) कर्नल सिमसन ने आपके नाम यह चिट्ठी दी है। आपको उसे पढकर ताज्जुब होगा कि वह मरा क्यो!

हरदत्त—(चिट्ठी लेते हुए) मैं तो इतनी अंग्रेजी जानता नही, आप ही बताइए, वह मरा क्यो ?

तारासिंह—(कुरसी पर टिकते हुए अत्यन्त गभीरता से) जनाब, वह मरा है अपनी मेम साहिबा की एक खास बीमारी के एक खास इन्फेक्शन से ?

हरदत्त—(आश्चर्य से चिल्लाकर) अपनी मेम साहिबा की एक खास बीमारी के एक खास इन्फैक्शन से ?

हेड क्लार्क—(आश्चर्य से चिल्लाकर) अपनी मेम साहिबा की एक खास बीमारी के एक खास इन्फैक्शन से ?

तारासिंह—जी हाँ, मालूम हो गया कि वह मरा क्यो ?

यवनिका-पतन

समाप्त

अधिकार-लिप्सा

पात्र, स्थान

मुख्य पात्र

राजा अयोध्यासिंह—एक ज़मीदार

कुमार काशीसिंह—अयोध्यासिंह का लडका

दीवान प्रयागसिंह—अयोध्यासिंह का दीवान

डाक्टर घोष—अयोध्यासिंह का फेमिली डाक्टर

राजवैद्य गंगाधर राव आयुर्वेदाचार्य—अयोध्यासिंह का वैद्य

हकीम इब्राहीम हकीमुलमुल्क—अयोध्यासिंह का हकीम

पंडित करुणाशंकर ज्योतिषाचार्य—अयोध्यासिंह का ज्योतिषी

पंडित कामरूप भट्टाचार्य—अयोध्यासिंह का तान्त्रिक

सर्दार निहालसिंह—म्युनिस्पैलटी का प्रेसीडेन्ट

सेठ गिरधारीलाल—नगर का व्यापारी

स्थान—एक नगर

अधिकार-लिप्सा

उपक्रम

स्थान—राजा अयोध्यासिंह के मकान का कमरा

समय—सन्ध्या

[कमरे के तीन तरफ की दीवालें नीलेथूथे के रंग से हल्की नीली रंगी हुई हैं। दीवालों में कई दरवाज़े और खिड़कियाँ हैं, जिनके चौखट और पल्ले पुराने ढग के लकड़ी के बने हुए हैं। इनमें से कुछ बन्द हैं और कुछ खुले। खुले दरवाज़े और खिड़कियों से बाहर के फल के दरख़्तों के बग़ीचे का कुछ हिस्सा दिखाई देता है। कई दरख़्तों में आम फले हुए हैं। बग़ीचे को डूबते हुए सूर्य की किरणें रंग रही हैं। दीवालों पर शेर, चीते, बारहसिंहे, हिरण, रणभेंसे आदि जंगली जानवरो के चमड़े सजा कर लगाये गये हैं। कई चमड़ों में जानवरों के सिर भी हैं। इन चमड़ों के बीच बीच में बन्दूक़ें, तलवारें, भाले इत्यादि हथियार सजा कर टाँगे गये हैं। कमरे की छत से पुराने ढंग के मोमबत्ती के झाड़ और हंडियाँ झूल रहे हैं। बीचोबीच एक हाथ-पंखा टँगा हुआ है जो बाहर से धीरे धीरे खींचा जा रहा है। कमरे की ज़मीन

पर मिरज़ापुरी क़ालीन बिछा है। क़ालीन पर पुराने ढंग की कुर्सियाँ, टेबिल इत्यादि सजी है। एक कुर्सी पर राजा अयोध्यासिंह बैठा हुआ है। अयोध्यासिंह की उम्र क़रीब ६५ वर्ष की है। वह ऊँचा पूरा, मोटा, गेहुएँ रंग का आदमी है। चेहरे पर अभी भी सुर्ख़ी है। सिर और मूछों के छोटे छोटे बाल सफेद हो गये है। वह एक सफेद कुरता और धोती पहने हुए है। सिर नंगा है। उसके पास ही एक चाँदी का हुक़्क़ा रखा हुआ है, जिसकी सुनहरी लंबी सटक अयोध्यासिंह के हाथ में है। अयोध्यासिंह हुक्का पी रहा है। उसकी कुरसी के पास ही एक दूसरी कुरसी पर दीवान प्रयागसिंह बैठा हुआ है। उसकी उम्र भी अयोध्यासिंह के बराबर ही जान पडती है। शरीर में वह ऊँचा है, पर दुबला। रंग में साँवला है। सिर, बड़ी बड़ी मूछें और खसखसी दाढ़ी के बाल सफेद हो गये है। वह काला अँगरखा और सफेद पैजामा पहने हुए है। सिर पर कोसे का साफा बाँधे है।]

अयोध्यासिंह—(हुक़्के का धूआँ छोड़ते हुए) जीते हुए भी मै मरे से बदतर हूँ।

प्रयागसिंह—यह आप क्या कह रहे है, सरकार!

अयोध्यासिंह—बिलकुल ठीक कह रहा हूँ, दीवान जी, मैं सब समझता हूँ। मै बूढ़ा हो गया, मुझे आराम चाहिए, (हुक़्क़ा गुड़गुड़ा कर) ये सब बाते मुझे फुसलाने के लिये, कही जाती है। असल मे इन बहानों को लेकर मुझे कैद मे

रखा गया है, मेरे अख्त्यारात छीने गये है।

प्रयागसिह—लेकिन, हुजूर, इस उम्र से आपको काम की झझटो से अलग कर आराम देना यह कुमार साहब का फर्ज़ है।

अयोध्यासिह—उम्र! उम्र से आपका क्या मतलब है, दीवान जी? डाक्टर घोष कहते थे कि अग्रेजी मे कहावत है कि आदमी उतनी ही उम्र का माना जाना चाहिये जितना वह अपने को समझता हो और औरत उतनी ही उम्र की समझी जानी चाहिये जितनी की वह दिखती हो। **(ज़ोर से हुक्का गुड़गुड़ा कर)** मुझे इस पैसठवे साल मे भी वैसा ही लगता है जैसा जब मै तीस पैतीस साल का था उस वक़्त लगता था। अगस्त मुनि का सा मेरा हाज़मा है और कुभकर्ण की सी नीद। आज भी मै शेर का शिकार कर सकता हूँ। देहात के दौरो मे बीस मील पैदल चल सकता हूँ। लेकिन घर से बाहर निकलने पाऊँ तब तो। **(हुक़्क़े का धूआँ छोड़ते हुए)** दीवानजी, सारा मामला अख्त्यारात का है, अख्त्यारात का। कुमार साहब खुद मुखत्यार होना चाहते थे। उन्होने मेरी उम्र, और इस उम्र मे मुझे आराम मिलना चाहिये, यह बहाना ढूँढ़ लिया। मै कैद मे रखा गया हूँ, कैद मे। अब कौन मुझे पूछता है? हफ्तो कुमार साहब तक मेरे पास नही आते। कौन काम मुझसे पूछ कर होता है? आप तक को पैन्शन दे दी गई।

प्रयागसिंह—सरकार, इन बातों की तरफ देखे ही नही। अपनी तबियत सँभाले। आराम से रहे। भजन करे।

अयोध्यासिंह—देखूँ ही नही! आँखे रहते देखूँ कैसे नही, दीवान साहब? देखना तो तब बन्द हो सकता है जब या तो आँखे फूट जायँ या जान निकल जाय। तबियत सँभालूँ! तबियत को क्या हुआ है? आराम मुझे पडे पड़े पत्ते गिनने मे नही मिलता और भजन करते हैं निकम्मे लोग।

प्रयागसिंह—फिर क्या किया जाय, हुजूर?

अयोध्यासिंह—**(धूआँ छोड़ते हुए, कुछ ठहर कर)** दीवान जी, डाक्टर घोष कहते थे कि मेरा दिमाग, दिल, फेफडे सब जवानो से अच्छे है। राजवैद्य गगाधर राव कहते थे कि मेरी नब्ज़ ऐसी चलती है, जैसी घोडे की। हकीम इब्राहीम कहते थे कि अस्सी साल की उम्र तक मुझे किसी कुश्ते की ज़रूरत नही। **(हुक्क़ा ज़ोर से गुड़गुड़ा कर)** ज्योतिषाचार्य करुणाशकर जी कहते थे कि मेरे ग्रह ऐसे है कि कलयुग मे जो एक सौ बीस साल की उम्र कही है, वह मैं पूरी पाऊँगा। और तांत्रिक कामरूप भट्टाचार्य कहते थे कि वे अपने तत्र शास्त्र से मुझे उससे भी आगे बीस साल तक और ज़िन्दा रख सकते है।

प्रयागसिंह—इन सब बातो से ज्यादा और खुशी की क्या बात हो सकती है।

अयोध्यासिंह—दो चार साल जीना होता तो दूसरी बात

थी, जब जितने साल बीते है उससे ज्यादा बिताना है तो इस तरह निकम्मी ज़िन्दगी कैसे बिताऊँ ? दीवान जी, घर वालो और बाहर वालों, सबसे, मुझे इस तरह निकम्मे बनाने का बदला लेने की तरकीब मैने सोच ली है। ऐसा नुसखा है कि सारा घर हिल जायगा और तमाम शहर मे तहलका मच जायगा। (हुक्का गुड़गुड़ाते हुए) कुमार साहब के सब गुलछर्रे ख़त्म हो ही जायँगे और कुमार साहब को घूमना पडेगा मेरे चारो तरफ। शहर के जो लोग कुमार की स्वाहा स्वाहा करने के लिये उसके बैठकख़ाने मे उसके दरबारी बने बैठे रहते है, उन्हे मेरी कदमबोसी के लिये इस कमरे मे हाज़िर रहना पडेगा। (धूआँ छोड़ते हुए) आपकी भी फिर वही पूछताछ शुरू होगी जो मेरे ज़माने मे थी।

प्रयागसिंह—(प्रसन्न होकर) इसकी कोई तरकीब है, हुज़ूर ?

अयोध्यासिंह—हाँ हाँ, देखिये, मै कल ही तो आपको बताता हूँ।

प्रयागसिंह—ऐसा ?

अयोध्यासिंह—कल सवेरे ही उस नुस्ख़े की करामात देखना।

[खड़े होकर इधर उधर टहलता है। प्रयागसिंह उसके पीछे पीछे घूमता है।]

यवनिका-पतन

मुख्य दृश्य

स्थान—राजा अयोध्यासिंह के मकान का कमरा
समय—प्रात काल

[दृश्य वैसा ही है जैसा उपक्रम में था। फर्क इतना ही है कि कमरे के दाहनी तरफ़ एक पलंग बिछा है जिसपर गले तक एक सफेद चादर ओढ़े अयोध्यासिंह लेटा है। स्वच्छ वस्त्रो में एक नौकर अयोध्यासिंह के पैर दाब रहा है। दो कुर्सियों पर काशीसिंह और प्रयागसिंह बैठे है। काशीसिंह की उम्र करीब ४० साल की है। वह ऊँचा पूरा, सुडौल शरीर का व्यक्ति है। रग गेहुआँ है, छोटी छोटी मूँछें है। कपड़े अंग्रेज़ी ढंग के शिकारी है। सिर खुला हुआ है।]

काशीसिंह—मै तो इधर एक हफ्ते से उनको देख न सका था, पर कल शाम तक तिबयत बिलकुल ठीक थी?

प्रयागसिंह—जी हाँ, बिलकुल ठीक। मै ठीक तबियत छोडकर घर गया था।

काशीसिंह—और आज इतनी खराब हो गई?

प्रयागसिंह—क्या कहा जाय।

अयोध्यासिंह—(कराहते हुए) बेटा, डाक्टर साहब आये?

काशीसिंह—(उठकर पलंग के नजदीक जाकर) आते ही होंगे, पिता जी, मोटर भेजे काफी देर हो गई।

अयोध्यासिंह—(**कराहते हुए**) जल्दी .जल्दी बुला, बेटा। कही ऐसा न हो कि जान निकलने पर डाक्टर आवे।

काशीसिंह—(**घबडाकर**) आप क्या कहते है, पिता जी, पर खैर दूसरी मोटर भेजता हूँ। (**जाने लगता है।**)

अयोध्यासिंह—वैद्य जी, हकीम जी, ज्योतिषी जी और तान्त्रिक जी को भी बुलाया है न?

काशीसिंह—(**जाते जाते रुककर**) हाँ, पिता जी, सबके यहाँ सवारियाँ गई है। (**जाता है।**)

अयोध्यासिंह—(**प्रयागसिंह से**) देखा कुमार साहब को, सब गुलछर्रे खत्म हो गये न? सवेरे शिकार को जा रहे थे। एक साल, पूरे एक साल, इस कमरे से बाहर न निकलने दूँगा।

[काशीसिंह का डाक्टर घोष के साथ प्रवेश। डाक्टर घोष करीब पैंतीस साल का ठिगना मोटा और साँवला मनुष्य है। अंग्रेजी पोशाक पहने है। जल्दी जल्दी पलंग के नजदीक जाता है। काशीसिंह और प्रयागसिंह भी उसके पीछे पीछे जाते हैं।]

घोष—(**पलंग के नजदीक जाकर**) गुड मॉर्निंग, राजा साहब, आप बीमार हो गिया?

[तीनो कुर्सियो पर बैठते है।]

अयोध्यासिंह—(**कराहते हुए**) ओह! ओह!

घोष—(तेठासकोप निकालते हुए) कोई खास ठो तकलीफ है, राजा साहब?

अयोध्यासिंह—कुछ पूछिये मत, डाक्टर साहब। सिर फटा जाता है। कलेजा खिचा जाता है। पेट मे भाले चल रहे है। बदन का हर जोड टूटा जाता है। (करवट बदलकर बड़ी ज़ोर से कराहता है।)

घोष—(तेठासकोप कान में लगाते हुए) आप थोडा सीधा ठो हो जाइगा?

[अयोध्यासिंह सीधा हो जाता है। नौकर पैर दाबना छोड़कर एक तरफ खड़ा हो जाता है। डाक्टर चादर उठा कर कुरता ऊँचा करके तेठासकोप से छाती देखता है। राजवैद्य गगाधर राव का प्रवेश। गंगाधर राव की उम्र क़रीब ४५ वर्ष की है। वह साधारण क़द और शरीर का मनुष्य है। सफ़ेद अँगरखा और धोती पहने है। सिर पर मराठी पगड़ी लगाये है। उसे देखकर काशीसिंह उसके नजदीक आता है। दोनो एक दूसरे को हाथ जोड़ते है।]

काशीसिंह—पिता जी की तबियत एकदम बहुत बिगड़ गई, महाराज।

गंगाधर राव—(हाथ हिलाते हुए) यह अस्वस्थता अवश्यमेव विलक्षण सवाद आहे। द्वय दिवस पूर्व हमारी भेट हुई रही, उस काल के बीच स्वस्थ रहे, सर्वथा स्वस्थ।

काशीसिंह—कल रात तक तबियत ठीक थी, वैद्यराज

जी, आज सवेरे से ही बिगडी है, लेकिन बहुत बिगड़ गई, महाराज ।

[दोनों पलंग के नजदीक की कुर्सियो पर बैठ जाते हैं ।]

घोष—अब आप बैक ठो हमारा तरफ करिये ।

[अयोध्यासिंह कराहते हुए करवट लेता है। घोष तेठासकोप से पीठ देखता है । हकीम इब्राहीम का प्रवेश । यह करीब ५५ वर्ष का लंबा पूरा, मोटा मनुष्य है । रंग सॉवला है। छोटी मूँछें और लंबी दाढ़ी है। बाल काले हैं, पर उनकी जड़ें सफेद; जिससे मालूम होता है कि दाढ़ी और मूँछों पर खिजाब किया गया है। रेशमी छीट की शेरवानी और सफेद पैजामा पहने है। सिर पर तुर्की टोपी है। हकीम इब्राहीम को देखकर काशीसिंह उसके नजदीक आता है। दोनो एक दूसरे को एक हाथ से बन्दगी करते हैं ।]

इब्राहीम—राजा साहब की तबियत नासाज हो गई, कुमार साहब ?

काशीसिंह—हाँ, हकीम साहब, और बहुत ज्यादा ।

इब्राहीम—उनकी तो इतनी अच्छी तन्दुरुस्ती है कि उनकी अलालत एक अजीबो गरीब खबर है ।

काशीसिंह—कल रात तक वे बिलकुल अच्छे थे ।

[तीनों पलंग के नजदीक की कुर्सियो पर बैठते हैं ।]

घोष—(तेठासकोप को कान से निकालते हुए) कोई खास ठो बात तो नेई है। (गंगाधर राव और इब्राहीम की

तरफ़ घूम कर) गुड मॉर्निंग, कविराज, गुडमॉर्निंग, हकीम।

[गंगाधर राव हाथ जोड़ता है और इब्राहीम एक हाथ से बन्दगी करता है।]

गंगाधर—हृद्गति चचल आहे, डाक्टर?

घोष—कुच, कुच, पर ज्यादा ठो नेई।

[घोष कुरसी पर बैठ कर थरमामीटर निकालता है। अयोध्यासिंह गंगाधर राव और इब्राहीम का अभिवादन करता है।]

अयोध्यासिंह—(कराहते हुए) ओह! ओह! मै तो मर रहा हूँ, वैद्यराज जी, हकीम साहब।

[घोष थरमामीटर अयोध्यासिंह के बग़ल में लगाता है।]

गंगाधर राव—अशुभ न ब्रूयात्। राजा साहब, आप अत्यन्त द्रुत गति से पुन. स्वास्थ्य लाभ करहिंगे।

इब्राहीम—शव तक तन्दुरुस्त हो जायँगे, आज ही शब तक, राजा साहब।

[घोष थरमामीटर निकाल कर देखता है। गंगाधर राव उठकर तीनों उँगलियों से दोनो हाथ की नब्ज़ देखता है। फिर इब्राहीम सिर्फ एक तर्जनी उँगली को भुजा की तरफ़ सीधी लबी रखकर दोनों हाथ की नब्ज़ देखता है। अयोध्या-सिंह कराहता है।]

घोष—नो टेम्प्रेचर, राजा साहब।

अयोध्यासिंह—टेम्प्रेचर न होगा, पर मरा तो जाता हूँ।

घोष—ओ! सब ठो ठीक हो जाइगा, सब ठो ठीक।

गंगाधर राव—अवश्यमेव।

इब्राहीम—बिला शक।

अयोध्यासिंह—ओह! पेट मे तो भाले चल रहे है, भाले।

[तीनो पेट दाबकर देखते हैं। अयोध्यासिंह कराह कराह कर पलंग पर हिलता है। घोष, गंगाधर राव और इब्राहीम पलंग के नजदीक की कुर्सियो पर से उठकर उससे दूर की बाई तरफ की कुर्सियो पर बैठते हैं। काशीसिंह और प्रयाग-सिंह उनके निकट की दूसरी दो कुर्सियों पर बैठते है। अयोध्यासिंह बार बार करवटें बदलते हुए कराहता है। नौकर फिर से उसके पैरो को दबाना शुरू करता है।]

घोष—(गंभीरता से) इट्स ए सीरियस केस!

काशीसिंह—(घबड़ाहट से) सीरियस केस!

गंगाधर राव—(सिर हिलाकर) अवश्यमेव।

प्रयागसिंह—(चिन्ताकुल) कोई डर है?

इब्राहीम—बिला शक, ख़ौफ है।

काशीसिंह—क्या बीमारी है, डाक्टर साहब?

घोष—ये केना ठो अबी डिफीकल्ट है, इसका लिये तो खून, पाखाना, पेशाब का जाँच कराना होगा, लेकिन पेशेन्ट का कन्डीशन ठो खराब है।

गंगाधर राव—नाडी वेगवती चौष्णा !

इब्राहीम—हाँ, नब्ज की हालत बिलाशक नाजुक है।

काशीसिंह—फिर क्या किया जाय ?

घोष—ट्रीटमेंट ठो शुरू करना होगा, एकदम। आपको ते करना है, ऐलोपैथिक, कविराजी, हकीमी, कौन सा ठो ट्रीटमेंट कराना है ?

काशीसिंह—(**कुछ सोचते हुए**) जब कुन्डीशन इतना सीरियस है, तब तीनो ही दवा एकदम शुरू करना ठीक होगा। (**कुछ ठहर कर**) मेरी राय तो यह है कि डाक्टर साहब इन्जकशन लगाये, वैद्यराज जी पेट मे खाने की दवा दे और हकीम जी मालिश वगैरह का इन्तजाम करे।

घोष—हो सकता।

गंगाधर राव—अवश्यमेव।

इब्राहीम—बिलाशक।

काशीसिंह—(**घोष से**) खून, पैखाना और पेशाब की जाँच आप कब करायेगे ?

घोष—इसका लिये हम तीनों का एक्सपर्ट डाक्टर्स को अबी भेज देगा।

काशीसिंह—इलाज को छोडकर बाकी इन्तजाम क्या क्या किये जायँ ?

घोष—बाकी इन्तजाम ?

काशीसिंह—जी हाँ, जैसे कमरे मे कोई खास बात

की जाय क्या? खाने को दिया जाय या नही, और दिया जाय तो क्या दिया जाय, वगैरह, वगैरह?

घोष—**(कमरे को चारो तरफ देखकर)** कमरा ठो ठीक हे, लेकिन गरमी का मोसिम हे। खश की टट्टी से फायदा होगा। क्यो कविराज, क्यो हकीम?

गंगाधर—अवश्यमेव। खस अत्यन्त लाभप्रद आहे।

इब्राहीम—बिलाशक फायदेमन्द, बहुत फायदेमन्द।

काशीसिंह—टट्टी अच्छी होगी या परदे?

घोष—परदा वुड बी बैटर।

काशीसिंह—उनकी बुनावट घनी हो या बिरली?

घोष—वह केसा बी हो सकता।

काशीसिंह—फिर भी इतना सीरियस केस है, जैसा आप कहेगे, बन जायगा।

घोष—थोडा बिरला होने से डेपनेस कम होगा।

काशीसिंह—एक खस की लाइन से दूसरी लाइन के बीच मे कितनी जगह छोडनी ठीक होगी?

घोष—**(कुछ सोचते हुए)** थ्री-फोर्थ इच। क्यो कविराज, क्यो हकीम?

गंगाधर राव—ठीक आहे, ठीक आहे।

इब्राहीम—बिलकुल ठीक।

काशीसिंह—और परदो को कितनी कितनी देर मे सीचना चाहिये?

घोष—(**कुछ सोचते हुए**) चार चार मिनिट मे। ये ठो बोत जरूरी है। कोई टट्टी भी सूख गिया तो कमरा का टेम्प्रेचर ठो विगड जावेगा।

काशीसिंह—सीचने के पानी मे बरफ मिलाना ठीक होगा ?

घोष—बोत अच्छा, बोत अच्छा। क्यो कविराज, क्यो हकीम ?

गंगाधर राव—अवश्यमेव। अवश्यमेव।

इब्राहीम—बिलाशक।

काशीसिंह—पलग परदो से कितने फुट और इच दूर रहना चाहिए ?

घोष—(**गंभीरता से सोचते हुए**) पाँच फुट चार इच ठो ठीक होगा। क्यों कविराज, क्यो हकीम ?

गंगाधर राव—ठीक आहे, ठीक आहे।

इब्राहीम—बिलकुल ठीक।

काशीसिंह—(**कुछ सोचते हुए**) और पखा जोर से खीचा जाना चाहिए, या धीरे धीरे ?

घोष—न बोत ठो जोर से न बोत ठो धीरे।

काशीसिंह—(**कुछ सोचते हुए**) एक मिनट मे कितने रिवोल्यूशन होना चाहिए ?

घोष—(**कुछ सोचकर**) कोई डेढ़ डजन ठो। क्यो कविराज, क्यों हकीम ?

गंगाधर राव—ठीक आहे ।

इब्राहीम—और क्या ?

काशीसिंह—(कुछ सोचते हुए) कमरे मे और कोई इन्तज़ाम ?

घोष—(विचारते हुए) यहाँ पर परफेक्ट पीस ठो रेना चाइये। कोई गुल गपाडा नेई ।

गंगाधर राव—हो, ॐ शान्ति. शान्ति शान्तिः ।

इब्राहीम—एकदम अमन ।

काशीसिंह—(कुछ सोचते हुए) अच्छा, खाने को दिया जाय या नही ?

घोष—क्यो कविराज, क्यो हकीम, हम तो समझता दे सकता ।

गंगाधर राव—अवश्यमेव ।

इब्राहीम—बिलाशक ।

काशीसिंह—क्या दिया जाय ?

घोष—(कुछ सोचते हुए) आप भात दे सकता, दाल दे सकता, रोटी बी दे सकता, परबल का वेजीटेबिल दे सकता । क्यो कविराज, क्यो हकीम ?

गंगाधर राव—अवश्यमेव ।

इब्राहीम—बिलाशक ।

काशीसिंह—कितने तोला भात, कितने माशे दाल, कितने वज़न के आटे की रोटी और कितने परवल ?

घोष—ये हकीम जी बतायगा।

इब्राहीम—(सोचते हुए) कोई दो तोले भात, नो माशे दाल और डेढ तोले आटे की रोटी। परवल दो। क्यो डाक्टर, क्यो वैद्य जी ?

घोष—ठीक।

गंगाधर राव—ठीक आहे।

काशीसिंह—परवल मे बीजें रहना चाहिये या निकाल दिये जाये ?

इब्राहीम—रह सकते है।

काशीसिंह—कितने बीजे तक दिये जा सकते है ?

इब्राहीम—(गंभीरता से सोचकर) एक दर्जन। क्यों डाक्टर, क्यो वैद्य जी ?

घोष—ठीक।

गंगाधर राव—ठीक आहे।

काशीसिंह—और रोटी पर घी लगाया जाय या नही ?

इब्राहीम—(विचार पूर्वक) मक्खन लगाइए।

काशीसिंह—उसके सामने की तरफ़ या पुश्त पर ?

इब्राहीम—(अत्यन्त गंभीरता से सोचते हुए) पुश्त पर ठीक होगा। क्यों डाक्टर, क्यो वैद्य जी ?

घोष—ठीक।

गंगाधर राव—ठीक आहे।

काशीसिंह—और पीने के लिये पानी ?

इब्राहीम—यह वैद्य जी बतायेगे।

गंगाधर राव—ग्रीष्मे सचीयते वायु अत. क्षीर नीर दीजिए।

काशीसिंह—याने ?

गंगाधर राव—विशुद्ध कूपजल एक मृत्तिका के पात्र मध्य अग्नि पर धरिए। जब अर्द्ध भस्म हो जाय तब शेष अर्द्ध को रजत पात्र मे शनै शनै शीतल कर सुवर्ण के चम्मच से तृषा के काल बीच दीजिये। क्यो डाक्टर, क्यो हकीम जी ?

घोष—ठीक।

इब्राहीम—बिलाशक ठीक।

काशीसिंह—और दूध दिया जा सकता है या नही ?

गंगाधर राव—अवश्यमेव। नूतन जनित गौ के धारोष्ण पय को पारद पात्र मे पिलाइए। अत्यन्त लाभजनित आहे। क्यो डाक्टर, क्यो हकीम जी ?

घोष—ठीक।

इब्राहीम—बिलाशक ठीक।

[सब लोग कुछ देर चुप रहते हैं। अयोध्यासिंह कराहता रहता है।]

घोष—अच्छा, तो हम जाकर अपना असिसटैन्ट भेजता। उसके साथ इजक्शन का दवा ठो। आधा आधा घन्टे में इजक्शन देना होगा।

काशीसिंह—हर आधे घन्टे में इजक्शन ?

घोष—र्साटनली, आप देखता नेई कन्डीशन कितना सीरियस !

काशीसिंह—और खून, पैखाना, पेशाब की जाँच करने वाले एक्सपर्ट्स को आप कब भेजेंगे ?

घोष—अबी, अबी ।

गंगाधर राव—हम औषधि प्रोषित करते हैं। प्रत्येक पन्द्रह क्षण पश्चात् एक मात्रा मधु के सग सुवर्ण पात्र बीच मिश्रित कर जिव्हा पर चटा दी जाये ।

काशीसिंह—हर पन्द्रह मिनिट पर ?

गंगाधर राव—अवश्यमेव, अवश्यमेव। रोग भीषण आहे ।

इब्राहीम—और मै मालिश के लिये दो रोगन भेजता हूँ। एक की मालिश दिमाग पर होगी और दूसरे की दिल पर। कुमार साहब, मालिश होनी चाहिए लगातार शाम तक, और इसलिये बहुत मुलायम हाथो से होनी चाहिए, जिससे कोई कल्लाहट वगैरह न हो ।

काशीसिंह—आप मालिश करने के लिये किसी को भेज सकेंगे ?

इब्राहीम—हाँ, मेरे पास मालिश करने वाली नर्सें हैं। एक साथ दो को मालिश करनी होगी। एक को दिमाग़ पर और दूसरी को दिल पर। फिर एक एक तो शाम तक कर न सकेंगी। एक एक घन्टे मे उन्हे बदलना होगा ।

काशीसिंह—अच्छी बात है, आप भेज दें।

[तीनों खड़े होते हैं। काशीसिंह और प्रयागसिंह भी खड़े होते हैं।]

प्रयागसिंह—फिर आप लोग कब तशरीफ लायेंगे?

घोष—शाम को।

गंगाधर राव—अवश्यमेव।

इब्राहीम—बिलाशक।

काशीसिंह—पर पहले ज़रूरत हुई तो पहले भी आना होगा।

घोष—जब आप चाहेगा फौरन आ जायगा।

गंगाधर राव—अवश्यमेव, अवश्यमेव।

इब्राहीम—बिलाशक, बिलाशक।

[तीनों का प्रस्थान। काशीसिंह और प्रयागसिंह अयोध्यासिंह के पलंग के पास आते हैं, जो अब तक उसी तरह करवट बदलता हुआ काँख रहा है।]

काशीसिंह—अब कैसी तबियत है, पिता जी?

अयोध्यासिंह—(कराहते हुए) ओ! मर रहा हूँ, बेटा, मर रहा हूँ! (कुछ रुककर) डाक्टर, वैद्य और हकीम ने क्या कहा?

काशीसिंह—कुछ नहीं, सबने कहा आप बहुत जल्दी अच्छे हो जायँगे।

अयोध्यासिंह—(कराहते हुए) और ज्योतिषी जी तथा

तान्त्रिक जी अब तक नही आये ?

काशीसिंह—आते ही होगे। मैंने उनसे कहला दिया था कि आपकी तबियत ठीक नही है, इसलिये आपके ग्रह देखकर, और अगर कुछ शान्ति कराना हो तो उस पर विचार करके, आवे, इसीलिए शायद देर हो गई हो, मैं अभी देखता हूँ। **(प्रस्थान।)**

अयोध्यासिंह—देखा, दीवान जी, एक ही नुस्खे मे कुमार साहब कैसे ठीक हो गये।

प्रयागसिंह—लेकिन, हुजूर, इलाज, बडा सख्त शुरू होने वाला है। बिना बीमारी के इतना सख्त इलाज कैसे बर्दाश्त होगा ?

अयोध्यासिंह—इसकी तुम फिक्र न करो; रोज इलाज बदलाऊँगा, इतना ही नही, आब हवा बदलने जाऊँगा और मेरी दुम बनकर जायँगे कुमार साहब। मेरे जीते जी मुझसे अख्त्यारात लेकर मुझे कैदी बनाकर शाहशाही करना चाहते थे, उसीका नतीजा भोगेंगे।

[काशीसिंह का करुणाशंकर और कामरूप भट्टाचार्य के साथ प्रवेश। करुणाशंकर क़रीब ६० साल का साधारण ऊँचाई का दुबला पतला, गौर वर्ण का व्यक्ति है। धोती पहने है और उपरना ओढ़े है। सिर खुला है। दाढ़ी मूछें और सिर पर बाल नहीं है, पर बहुत बड़ी श्वेत रंग की चोटी है, जो बँधी हुई है। मस्तक पर त्रिपुण्ड है। कामरूप लगभग

४० वर्ष का ठिगना मोटा और काला व्यक्ति है। आँखें लाल हैं। वस्त्र करुणाशंकर के सदृश हैं। सिर, मूछें, दाढ़ी के बाल काले है। प्रयागसिंह खड़े होकर उन्हें प्रणाम कर उनका स्वागत करता है। नजदीक आने पर अयोध्यासिंह दोनों को हाथ जोड़कर प्रणाम करता है। वे दोनों हाथ उठाकर आशीर्वाद देते हैं।]

करुणाशंकर—आयुष्मान। आयुष्मान।

कामरूप—जुग जुग जिइए।

अयोध्यासिंह—(कराहते हुए) आप लोगो को शायद मालूम नही है कि मै मर रहा हूँ, नही तो इस तरह का आशीर्वाद नही देते।

करुणाशंकर—सूँ कहो छो, राजा साब ? दो चार दिवस मा ही आरोग्यता थसे।

अयोध्यासिंह—आपने ग्रह देखे ?

करुणाशंकर—हाँ, देख ने आयो छू, श्रीमान, या मारे ही तो थोड़ो विलब थयो।

अयोध्यासिंह—(जोर से कराहते हुए) कैसे है ?

करुणाशंकर—भलाछे, भलाछे। कोई चिन्ता नी बात नई, थोडो उपाय अवश्य करावो पडशे। अभी कुमार साब सूँ सारी हकीकत कहूँ छूँ।

अयोध्यासिंह—और आप भी कुछ कराइए, तान्त्रिक जी।

कामरूप—हाँ, मै भी विचार करके आया हूँ। कुमार

साहब से सब कह देता हूँ। आप कोई चिन्ता न करे।

[करुणाशकर, कामरूप, काशीसिंह और प्रयागसिंह पलग से दूर पर बाँई तरफ की कुर्सियो पर बैठते है।]

काशीसिंह—कैसे ग्रह है, महाराज ?

करुणाशंकर—अत्यन्त निकृष्ट, कुमार साहब। राजा साब ने शनि मारकेश छे। शनि नी दशा छे। शनि मे शनि नो ही अन्तर छे। प्रत्यन्तर मे चन्द्र छै, वो भी बुरो। वर्ष ना ग्रह भी बुरा, मास ना भी बुरा, और गोचर ना भी बुरा।

काशीसिंह—(घबड़ाकर) तब ?

करुणाशंकर—सूँ चिन्ता छे। उपाय करनो पडशे। उपाय सूँ सब निकल जाशे।

काशीसिंह—उपाय पर आपने विचार किया ?

करुणाशंकर—हा, श्रीमान्, रुद्राभिशेष ने साथे सवा लक्ष महामृत्युजय नो जाप, शतचण्डी, लोह और चाँदी नो तुलादान सग एक सौ आठ गोदान।

काशीसिंह—तो अभी से सब इन्तज़ाम किया जाय, जिससे कल ही सब हो जाय, पडित जी।

करुणाशंकर—कल ही सब।

काशीसिंह—(कामरूप से) और आप क्या करेगे ?

कामरूप—मैने भी सब सोच लिया है। एक उलूक का वध कर उसकी आँख को अश्वत्थ वृक्ष की शाखा मे बाँधकर

उसका पैशाची पूजा करना होगा। फिर उसी वृक्ष के नीचे रणगिद्ध के मास से हवन करना होगा। तब व्याधि मिटेगी।

काशीसिंह—उसका इन्तजाम भी कल हो जाना चाहिये।

कामरूप—अवश्य हो जायगा।

काशीसिंह—चलिए, मै सब बातो के लिये अलग अलग आदमियो को मुकर्रर कर दूँ, जिससे कल तक सारा इन्तजाम होने मे आप लोगो को कोई दिक्कत न हो।

[तीनो का प्रस्थान। स्वच्छ वरदी में एक चपरासी का प्रवेश।]

चपरासी—हुजूर की तबियत पूछने के लिये म्युनिस्पैल्टी के प्रेसीडेन्ट और नगर सेठ साहब तशरीफ लाये है।

अयोध्यासिंह—(**मुस्कराकर**) देखा, दीवान जी, देखा, घर मे और बाहर, दोनो ही जगह नुसखा कैसा काम कर रहा है। जाइए, दोनो को ले आइए।

[प्रयागसिंह का प्रस्थान। अयोध्यासिंह शान्ति से लेटा रहता है। प्रयागसिंह का सर्दार निहालसिंह और सेठ गिरधारीलाल के साथ प्रवेश। निहालसिंह की अवस्था क़रीब ५० वर्ष की है। वह ऊँचा, पूरा, मोटा ताजा सिख है। रंग गोरा है। दाढ़ी मूछो के बाल आधे सफ़ेद हो गये है। कपड़े अंग्रेजी ढंग के है। सिर पर सफ़ेद साफ़ा है।

गिरधारीलाल की उम्र लगभग ४५ वर्ष की है। वह ठिंगना और मोटा आदमी है। वर्ण में साँवला है। सिर व मूछों के बाल कुछ कुछ सफ़ेद हो चले हैं। मस्तक पर मोटा रामानन्दी तिलक लगाये है। सिर पर मारवाड़ी पगड़ी है तथा शरीर पर सफेद अँगरखा और धोती। गले में जरी का दुपट्टा डाले है। इन्हें देखते ही अयोध्यासिंह फिर कराहकर करवट बदलने लगता है।]

निहालसिंह—(अयोध्यासिंह के पलंग के निकट जाकर) अरे, राजा साहब, बीमारी तो आप दे नेडे नई आय थी। बहादराँ दे नेडे बीमारी! इस तरा बीमारी तो नामर्दां...
......

गिरधारीलाल—(अयोध्यासिंह के पलंग के निकट जाकर बीच ही में) यो काँई हुयो, राजा शाब? आपरी तो बेमारी कदेई शुणी कोनी। कढेशूँ आ बीमारी हो गई! अवार तब्यत किशीक छै?

अयोध्यासिंह—(कराहते हुए) आह! सर्दार साहब! आह! सेठ साहब!

[निहालसिंह, गिरधारीलाल और प्रयागसिंह अयोध्यासिंह के पलंग के पास की कुर्सियों पर बैठते हैं।]

यवनिका-पतन

उपसंहार

स्थान—राजा अयोध्यासिंह के मकान का कमरा

समय—दोपहर

[दृश्य वैसा ही है जैसा उपक्रम और मुख्य दृश्य में था। फ़र्क इतना ही है कि पलंग उठा दिया गया है। कुर्सियों पर काशीसिंह और प्रयागसिंह बैठे हैं। दोनों सिर्फ कुरता और धोती पहने हुए हैं। सिर पर दोनो के सफ़ेद साफ़ा बँधा हुआ है। काशीसिंह की मूछें मुड़ी हुई हैं।]

काशीसिंह—दीवान जी, इतनी जल्दी यह पहाड़ मेरे सिर पर टूटेगा इसका मुझे सपने मे भी खयाल न था।

प्रयागसिंह—क्या कहूँ, सरकार।

काशीसिंह—मैं तो इधर कुछ दिनों से मिल न सका था, पर आपने कहा न कि परसो शाम तक वे बिलकुल अच्छे थे।

प्रयागसिंह—परसो शाम तक क्या, हुज़ूर, कल सुबह इलाज शुरू होने तक वे बिलकुल अच्छे थे।

काशीसिंह—**(आश्चर्य से)** इलाज शुरू होने तक बिलकुल अच्छे थे!

प्रयागसिंह—जी हाँ, और उन्हे मारा इस इलाज ने।

काशीसिंह—इलाज ने मारा! तुम भी क्या उन्ही के

मानिंद पागल हो गये हो। इलाज शुरू होने के थोडी ही देर बाद उन्होने चिल्लाना शुरू किया था कि मैं बिलकुल अच्छा हूँ, बिलकुल अच्छा हूँ, यह इलाज बन्द करो, नही तो मै मर जाऊँगा और उनके मरने के बाद तुमने वही कहना शुरू किया।

प्रयागसिंह—सरकार, वे ठीक कहते थे और मै भी ठीक कहता हूँ। इलाज ने उन्हे मार डाला।

काशीसिंह—इतने अच्छे डाक्टर, वैद्य और हकीम के इलाज ने उन्हे मार डाला! वे तो बीमारी के सबब इलाज होते होते पागल हो गये थे, उनकी बात मानकर उनका इलाज कैसे बन्द किया जाता, पर तुम तो बिना बीमारी के ही पागल हो रहे हो।

प्रयागसिंह—(**आश्चर्य से**) मै पागल हो रहा हूँ?

काशीसिंह—बेशक पागल हो रहे हो, नही तो तुम कभी ऐसी बात मुँह से निकाल सकते थे कि इलाज ने उन्हे मार डाला।

प्रयागसिंह—हुजूर, मै फिर कहता हूँ, इलाज ने उन्हे मारा, इलाज ने उन्हे मारा।

काशीसिंह—(**क्रोध से**) तब तुम्हे पागलखाने जाने की तैयारी करनी चाहिये। मै अभी डाक्टर घोष को बुलाकर तुम्हारी जॉच करा तुम्हे पागलखाने भेजने की तैयारी करता हूँ। (**प्रस्थान।**)

प्रयागसिंह—(पीछे पीछे जाते हुए चिल्लाकर) हुज़ूर...हुज़ूर...डाक्टर घोष । . डाक्टर घोष. . तो......

यवनिका-पतन

समाप्त

ईद और होली

पात्र, स्थान

मुख्य पात्र

राम—एक बच्चा (**उम्र ४ वर्ष**)

हमीदा—एक बच्ची (**उम्र ४ वर्ष**)

रतना—राम की माँ (**उम्र ४० वर्ष**)

खुदाबख्श—हमीदा का बाप (**उम्र ४५ वर्ष**)

स्थान—एक नगर

ईद और होली

पहला दृश्य

स्थान—एक गली

समय—सन्ध्या

[सकरी सी गली का एक हिस्सा दिखाई देता है, जिसके दोनों तरफ़ एक मंजले और दो मजले छोटे छोटे मकानों के बाहरी भाग दृष्टिगोचर होते हैं। गली के एक ओर सबसे नजदीक खुदाबख्श के एक मंजले मकान के सामने का कुछ हिस्सा दीख पड़ता है। मकान में जाने आने का एक छोटा सा दरवाज़ा है। गली के दूसरी तरफ सबसे नजदीक रतना के दो मंजले मकान के सामने का कुछ भाग दिखाई देता है। इस मकान में जाने आने का एक बड़ा सा दरवाज़ा है। खुदाबख्श और रतना के मकान एक दूसरे के ठीक सामने हैं और बीच में गली है। हमीदा खुदाबख्श के मकान के भीतर से निकल कर गली में आती है। हमीदा क़रीब चार वर्ष की छोटी सी बालिका है। रंग गेहुआँ है और देखने में साधारणतया सुन्दर है। छोटे छोटे फैले हुए बाल हैं। एक गुलाबी रंग का रेशमी पाजामा और हरे रंग का रेशमी कुरता पहने है।

कानों में चाँदी की बालिया हैं। हमीदा के हाथों में पत्ते का दोना है और उसमें मैदे की बनी हुई सिवइयाँ है।]

हमीदा—(रतना के मकान के नजदीक जाकर जोर से) श्राम ! श्रो श्राम !

[रतना के मकान से राम निकलता है। उसकी उम्र भी हमीदा के बराबर ही है, पर कद में वह हमीदा से कुछ ऊँचा और शरीर में भी कुछ मोटा है। रंग गेहुआँ है और देखने में बुरा नहीं है। एक सफ़ेद जाँघिया पहने है और उसके ऊपर वैसा ही कुरता।]

राम—(हमीदा को देखकर) श्रो, हम्मू।

हमीदा—हाँ, श्राम। श्राद ईद, ईद। (सिवइयाँ दिखाते हुए) जे।

राम—जे त्या है, हम्मू ?

हमीदा—ईद ती छिमइया।

राम—ईद ती छिमइयाँ ?

हमीदा—हाँ, श्राम, ईद ती छिमइयाँ। मीथी, मीथी।

[दोनों रतना के मकान के नजदीक गली के एक किनारे पर बैठ जाते हैं।]

हमीदा—हम तुम दोनो थाय।

राम—दोनो थाँय ?

हमीदा—(सिवइयाँ राम के मुँह की तरफ़ ले जाते हुए) हाँ, श्राम, दोनो थाँय।

[हमीदा राम को अपने हाथ से सिवइयाँ खिलाती है, फिर खुद खाती है। रतना अपने मकान के बाहर निकलती है। वह करीब ४० साल की गेहुएँ रंग की साधारण ऊँचाई और शरीर की स्त्री है। वेष भूषा से विधवा जान पड़ती है।]

रतना—(जोर से) राम ! ओ राम !

राम—(उसी तरह बैठे हुए सिवइयाँ खाते खाते) हाँ, माँ।

रतना—(राम के नजदीक आते और राम तथा हमीदा को क्रोध से देखते हुए) फिर उस मलेच्छा के साथ खा रहा है। भिष्ट कही का।

राम—अले, माँ, छिमइयाँ है, छिमइयाँ, मीथी, मीथी। ईद ती है, ईद ती, माँ।

[रतना नजदीक पहुँचकर राम का हाथ पकड़ती है। हमीदा बैठी बैठी खाती रहती है। खुदाबख़्श अपने मकान के बाहर निकलता है। उसकी उम्र क़रीब ४५ वर्ष की है। रंग साँवला है। वह ऊँचा पूरा, मोटा ताजा व्यक्ति है। ईद के कारण धुला हुआ सफ़ेद पाजामा और चिकन का कुरता तथा उस पर हरे रंग की रेशमी सदरी पहने है। सिर पर हरे रंग का ही बड़ा-सा रेशमी साफ़ा बाँधे है।]

रतना—(खुदाबख़्श को न देख हमीदा की तरफ़ क्रोध से घूरते हुए गरज कर) हरामज़ादी, सौ बार कहा मेरे लडके के साथ न खेला कर। अपना छुआ, अपना जूठा, खिलाती है, मलेच्छा कही की।

[हमीदा पर रतना की घुड़की का कोई असर नहीं पड़ता और उसका खाना जारी रहता है।]

खुदाबख्श—(उसी तरफ नजदीक आते हुए) बस बहुत हुआ, बहुत हुआ, खबरदार, अगर ज़बान चूकी तो।

रतना—(खुदाबख्श की तरफ देखते हुए) बाह्मन का धरम भिष्ट कराता है और कहता है खबरदार, जबान चूकी तो। उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।

खुदाबख्श—(हमीदा को गोद में उठाते हुए) मै औरत के मुँह नही लगना चाहता। काफ़िर कही की।

रतना—औरत भी तेरे मुँह नही लगना चाहती। **(राम को गोद में उठाते हुए)** अपनी शाहजादी को अपने बस मे रख।

खुदाबख्श—क्यो तेरा लडका भरष्ट होता है?

रतना—मेरा लड़का तेरे घर नही गया था। तेरी लड़की आई थी।

खुदाबख्श—(हमीदा को गोद में उठाये अपने घर की तरफ जाते हुए) अब कभी पेशाब करने भी न आयगी।

रतना—(राम को गोद में उठाये अपने घर के अन्दर जाते हुए) वही अच्छा है, धरम तो बचा रहेगा।

खुदाबख्श—(घर में जाते जाते घृणा से) काफ़िर और मज़हब।

रतना—(भीतर से) मलेच्छ। मलेच्छ।

[दोनों अपने अपने बच्चों के साथ अपने अपने घरों के अन्दर चले जाते हैं। नेपथ्य में 'मारो मारो' कोलाहल होता है। खुदाबख्श बाहर आता है। गली में कुछ मुसलमान लाठियाँ लिये दौड़ते हुए आते हैं।]

खुदाबख्श—क्या हुआ, बिरादरान।

एक आगन्तुक—झगडा।

खुदाबख्श—हिन्दू मुसलमानो मे ?

दूसरा आगन्तुक—हाँ, हाँ, और किसमे होगा ?

[आगन्तुक दौड़ते हुए दूसरी तरफ चले जाते हैं। खुदाबख्श जल्दी से घर के अन्दर जाता है और एक लाठी लेकर आता है तथा उसी तरफ़ चला जाता है जिस तरफ़ दूसरे मुसलमान गये थे। नेपथ्य में कोलाहल बढ़ता है। हमीदा अपने घर से निकलती है और रतना के मकान के भीतर जाती है। नेपथ्य में कोलाहल होता रहता है। खुदाबख्श एक हाथ में तेल से भींगे हुए चिथड़े और दूसरे हाथ में एक मशाल लिये हुए आता है। रतना के मकान के इधर उधर वे चिथड़े रख मकान में आग लगाने का प्रयत्न करता है।]

खुदाबख्श—(क्रोध से दाँत पीसते हुए) मलेच्छ ! मलेच्छ ! हम मलेच्छ ! ले गालियों का नतीजा, ले। तेरा राम, तेरा मकान, तेरा सब कुछ खाक मे मिला दूँ तब तो

मेरा नाम खुदाबख्श । जा, दोजख मे जा, मय खानदान और दौलत के जा, काफिर कही की ।

[नेपथ्य का कोलाहल और बढ़ता है ।]

यवनिका-पतन

दूसरा दृश्य

स्थान—रतना के मकान की छत

समय—रात्रि

[लंबी छत है। पीछे की तरफ मकान की दीवाल है और सामने की ओर ईंट चूने की रेलिंग। रेलिंग के नीचे भी दीवाल है। दाहिनी और बाईं तरफ से आग की लपटें और धुँआँ उठ रहा है। बीच बीच में दाहिनी और बाँईं तरफ़ से आग के कुछ कण छत पर आते हैं। छत पर राम और हमीदा खड़े हुए बात कर रहे हैं। नेपथ्य में बीच बीच में कोलाहल सुनाई देता है।]

हमीदा—ईद ते बादे बदते हैं, आम ।

राम—(आग की लपटों की ओर इशारा कर) औल ईद ते छाथ होली बी दल रही है, हम्मू ।

हमीदा—हाँ, औल होली ता दाना बी हो लहा है, आम ।

राम—ईद ते बादे बद लहे हैं, होली ता दाना हो लहा है।

हमीदा—मैंने तो तुधे ईद ती छिमइयाँ थिलाई थी, आम। तू मुधे होली ती मिथाई नईं थिलायदा ?

राम—होली दल दाने पर मेरे घल मे मिथाई बनेदी, हम्मू।

[आग की लपटें धीरे धीरे नजदीक आने लगती हैं।]

राम—अले होली तो पाछ पाछ आती जाती है।

हमीदा—कैछी अच्छी, लाल लाल, पीली पीली।

[आग के कण और नजदीक आने लगते हैं।]

हमीदा—**(कणों को पकड़ने का प्रयत्न करते हुए)** जुदनू, आम, जुदनू।

राम—नहीं, छोना, हम्मू, छोना।

[नेपथ्य में जोर से 'हम्मू! हम्मू!' शब्द होता है।]

हमीदा—अब्बा पुताल लहे हैं, आम, अब्बा।

[नेपथ्य में जोर से 'राम! राम!' शब्द होता है।]

राम—माँ बुला लही है, हम्मू, माँ।

[नेपथ्य में फिर जोर से 'हम्मू! हम्मू!' शब्द होता है।]

हमीदा—**(जोर से)** हाँ, अब्बा!

नेपथ्य से—अरी कहाँ है, हम्मू! कहाँ ?

हमीदा—(मुस्कराकर राम से) आम, अब्बा मुधे धूँध लहे है।

नेपथ्य से—(जोर से) राम! राम!

राम—(जोर से) हाँ, माँ!

नेपथ्य से—(जोर से) अरे कहाँ है, राम, कहाँ?

राम—(मुस्कराकर हमीदा से) हम्मू, माँ मुधे धूँध लही है।

नेपथ्य से—(जोर से घबड़ाहट के स्वर से) हम्मू! हम्मू! कहाँ है, बोल तो?

हमीदा—(ताली बजाकर नाचते हुए जोर से) आम ती छत पल, अब्बा, आम ती छत पल।

नेपथ्य से—राम! राम! कहाँ है, छत पर है?

राम—(हमीदा के साथ ताली बजाकर नाचते हुए) हाँ, माँ, छत पल ही तो हूँ।

नेपथ्य से—या ख़ुदा!

नेपथ्य से—हे भगवान!

[राम और हमीदा उसी तरह ताली बजाकर नाचते रहते हैं। आग की लपटें और नजदीक आती हैं। सामने की दीवाल पर दीवाल की कारनिस पकड़कर कठिनाई से ख़ुदाबख़्श चढ़ता हुआ दीख पड़ता है। धीरे धीरे ख़ुदाबख़्श छत पर पहुँचता है।]

हमीदा—(ख़ुदाबख़्श को देखकर हर्ष से चिल्लाकर

उसकी तरफ़ आते हुए) ओ ! अब्बा ! अब्बा !

खुदाबख्श—(क्रोध से) कमबख्त, तू यहाँ क्यों आई ?

हमीदा—(मुस्कराते हुए) थेलने तो, अब्बा, आम ते छात थेलने तो ।

खुदाबख्श—(अपने साफे को उतार रेलिंग से बाँधते हुए घृणा से) मरने को, बेशऊर ।

[खुदाबख़्श साफ़े को रेलिंग से बाँध हमीदा को गोद में उठाता है ।]

हमीदा—औल आम तो इछती अम्मा ले दायदी?

राम—मै अपने पैलो छे छीदी छे उतल आता हूँ ।

[राम छत की दाहिनी तरफ़ जाने लगता है, जिधर से आग की लपटें आ रही हैं ।]

खुदाबख्श—हाँ, जा, अपने पैरो से सीढी से उतर कर आ जा ।

[राम उसी तरफ बढ़ता है ।]

खुदाबख़्श—(उसी तरफ़ देखते हुए जोर से) ठहर ! राम ! ठहर !

[राम जो आग की लपटों के बहुत ही नजदीक पहुँच गया है, रुक जाता है । खुदाबख़्श दौड़कर उस तरफ़ जाता और उसे दूसरी गोद में उठा रेलिंग में बँधे हुए अपने साफे के नजदीक आकर हमीदा और राम को अपनी दोनों भुजाओं से अपने दोनो तरफ़ के पसवाड़ों में दाब हाथों से साफ़े को

पकड़ नीचे उतरने का प्रयत्न करता है। दोनों तरफ से आग की लपटें खुदाबख़्श के नजदीक पहुँच जाती है।]

यवनिका-पतन

तीसरा दृश्य

स्थान—गली

समय—प्रात काल

[दृश्य वैसा ही है जैसा पहले दृश्य में था। अन्तर इतना ही है कि रतना के मकान का बहुत सा हिस्सा जल गया है। आग अब बुझ गई है। रतना के मकान के नजदीक ही गली के एक किनारे पर राम और हमीदा बैठे हुए है। दोनो के बीच में मिठाई का एक दोना रखा है और दोनों उस दोने से मिठाई खा रहे हैं। खुदाबख़्श और रतना का प्रवेश।]

खुदाबख़्श—(दोनों बच्चों को मिठाई खाते देख मुस्करा कर रतना से) बहन, राम फिर भरष्ट हो रहा है।

रतना—(मुस्कराते हुए) नही, भाई, सच्चा धरम सीख रहा है।

खुदाबख़्श—शर्त यही है कि बड़े होने पर भी इसी मज़हब को माने।

[दोनों कुछ देर चुप रहकर एकटक बच्चो की तरफ

देखते हैं। बच्चों की पीठ उनकी तरफ़ रहने के कारण बच्चे उन्हें नहीं देख पाते। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

रतना—भाई, तुमने राम की जान बचा कर जो जस मुझपर किया है उसे मैं. . .. .

ख़ुदाबख़्श—(बीच ही में) मैंने? नही, बहन, मैंने तो राम की जान लेने के लिये ऐसी कोई बात नही जो उठा रखी हो। उस परवरदिगार ने उसकी जान बचाई। **(रतना की तरफ देखते हुए)** बहन, जब मैं छत पर उसे छोड, और हमीदा को लेकर, आने का इरादा कर रहा था, बल्कि राम को आग से ख़ाक होते हुए ज़ीने से उतरकर आने की सलाह देकर हमीदा को ले उतरने का इरादा कर रहा था, उस वक्त....उस वक़्त ...बहन.... **(चुप हो जाता है।)**

रतना—(ख़ुदाबख़्श की तरफ देखते हुए) हाँ, उस वखत, भाई?

ख़ुदाबख़्श—उस वक़्त....उस वक्त... मैं ऐसा ...मैं ऐसा कर ही न सका। जैसे किसी ने मुझे ऐसा न करने के लिये मजबूर कर दिया। ....बहन.... बहन.. .यह ख़ुदा का पैगाम था, ख़ुदा का पैगाम।

[ख़ुदाबख़्श चुप हो जाता है। रतना उसकी तरफ़ देखती रहती है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

ख़ुदाबख़्श—(कुछ ठहर कर) ख़ुदा ने राम को मेरे

हाथ से बचवा कर तुम्हारे मकान जलाने के मेरे गुनाह को मुआफ कर दिया।

रतना—मलेच्छ ने काफिर का मकान जलाया था, भाई खुदाबख्श ने बहन रतना का नहीं।

खुदाबख्श—इन बच्चों ने, बहन, इन बच्चो ने हमें मलेच्छ और काफिर से भाई और बहन बना दिया।

रतना—बच्चे कदाचित मैली आतमाओ को पवित्तर करने की भगवान की देन हैं।

[राम और हमीदा, जो अब मिठाई खा चुके है, उठते और खुदाबख्श और रतना की तरफ़ घूमते हैं।]

राम—(रतना को देख कर उसी तरफ़ दौड़ते हुए) माँ ! माँ !

हमीदा—(खुदाबख्श को देखकर उसी ओर दौड़ते हुए) अब्बा ! अब्बा !

[राम को खुदाबख्श और हमीदा को रतना गोद में उठाते हैं।]

रतना—क्यों बेटा, हम्मू को मिठाई खिलाई ?

राम—हाँ, माँ, इछने तल मुधे ईद ती छिमइयाँ थिलाईं थी, आद मैंने इछे होली ती मिथाई थिलाई है।

[खुदाबख्श और रतना हँस पड़ते हैं।]

यवनिका-पतन

समाप्त

मानव-मन

पात्र, स्थान

मुख्य पात्र

कृष्णवल्लभ—एक व्यापारी

पद्मा—कृष्णवल्लभ की पत्नी

भारती—पद्मा की सखी

स्थान—एक नगर

मानव-मन

उपक्रम

स्थान—कृष्णवल्लभ के मकान का बरामदा

समय—प्रात काल

[बरामदा आधुनिक ढंग का है और उसी तरह सजा भी है। पीछे की दीवाल दिखती है और दो तरफ खंभों पर डाटें। दीवाल गुलाबी रंग से रंगी है। उसपर श्रीनाथ जी, यमुना जी और श्रीकृष्ण की अनेक लीलाओं के चित्र टँगे है। डाटों में से बग़ीचे का कुछ हिस्सा दिखाई देता है जो उगते हुए सूर्य के प्रकाश से रंग रहा है। बरामदे के सीलिंग से बिजली की बत्तियाँ झूल रही है और ज़मीन पर, जो संगमरमर से पटी है, अनेक सोफ़े, कुर्सियाँ और टेबिलें सजी है। एक कुर्सी पर पद्मा बैठी हुई है और अपने सामने की टेबिल पर रखी हुई एक खुली चिट्ठी ध्यान से पढ़ रही है। पद्मा करीब २१, २२ साल की साधारण क़द और सुडौल शरीर की सुन्दर स्त्री है। रंग गोरा है। रेशमी साड़ी, ब्लाउस और रत्नजटित आभूषण पहने है। मस्तक पर लाल टिकली है। और उसीके नीचे दोनों भवो के बीच

में श्रीनाथ जी का पीला चरणामृत लगा हुआ है। भारती का प्रवेश। उसकी अवस्था करीब ४० वर्ष की है। वह लम्बे कद की दुबली पतली साधारण तथा सुन्दर स्त्री है। रंग गेहुआँ है। सूती साड़ी और शलूका पहने है। वेष-भूषा से विधवा जान पड़ती है।]

भारती—(पद्मा के निकट आते हुए) बड़े ध्यान से क्या पढ़ रही हो, बहन?

पद्मा—(चौंककर) ओ! भारती बहन, (खड़े होकर) आओ, बैठो, बहन।

[भारती और पद्मा दोनो कुर्सियों पर बैठ जाती हैं।]

भारती—क्या पढ़ रही थी?

पद्मा—उनकी चिट्ठी आई है।

भारती—तभी इतनी ध्यानावस्थित थी कि मेरी बोली सुनकर भी चौक पड़ी।

पद्मा—उनका पत्र मुझे ध्यानावस्थित करने को काफ़ी है, यह मै मानती हूँ, पर ध्यान मग्न होने का एक और भी सबब था।

भारती—क्या?

पद्मा—उस पत्र के समाचार।

भारती—क्यो, उनके मित्र की तबीयत कैसी है?

पद्मा—वैसी ही है, क्षय ऐसी बीमारी नही, जो जल्दी अच्छी हो जाय, या बिगड़ जाय।

भारती—फिर वहाँ से और क्या समाचार आ सकते हैं ?

पद्मा—सुन लो, पत्र ही सुना देती हूँ। (**पत्र उठाकर पढ़ते हुए**) "तुम्हे यहाँ का एक हाल पढकर आश्चर्य हो सकता है, पर इस जमाने मे इस तरह की चीज़े कोई ताज्जुब की बात नही है....

भारती—किस तरह की चीजे ?

पद्मा—वही तो पढती हूँ, सुनो। (**पत्र पढ़ते हुए**) "इस दफा भाभी जी का विचित्र किस्सा है। बृजमोहन की तबियत वैसी ही होते हुए भी, उनके पलग पर पडे रहने पर भी, इधर उधर हिलने डुलने की ताकत न होने पर भी, भाभी जी का पुराना प्रोग्राम फिर लौट आया है। नित्य प्रात काल एक घटा टब और शावर बाथ मे लगता है। फिर बाल सँवारने, पाउडर लगाने, लिपस्टिक और नेल पेन्ट को काम मे लेने मे काफी वक़्त लग जाता है। रोज़ नई साड़ी और ब्लाउस पहना जाता है। हर दिन शाम का समय क्लब में जाता है और अगर किसी दिन कोई गार्डन पार्टी या डिनर या डान्स का न्योता आ गया तब तो रात को भी लौटने का कोई निश्चित वक्त नही रहता। बृजमोहन को सम्हालते है डाक्टर और जहाँ तक भाभी का सबंध है वहाँ तक एक दफ़ा बृजमोहन की तबीयत पूछ लेने

से उनके कर्तव्य की समाप्ति हो जानी है।" **(पत्र टेबिल पर रखकर भारती की तरफ देखते हुए)** कहो, बहन, पत्र के समाचार ध्यानावस्थित कर देने के लायक है या नही ?

भारती—(गंभीरता से) तुम्हे इन समाचारो से अचम्भा हुआ है ?

पद्मा—अचम्भा ! बडे से बडा अचम्भा जो दुनिया मे हो सकता है।

भारती—वृजमोहन जी कितने दिन से बीमार है ?

पद्मा—कोई दो साल हो गये होंगे।

भारती—और उनकी पत्नी का और उनका बीमारी के पहले कैसा सम्बन्ध था ?

पद्मा—अच्छे से अच्छा। दोनो कॉलेज के प्रेमी थे और शादी प्रेम के परिणाम स्वरूप हुई थी। तभी तो भाभी जी का यह व्यवहार और भी आश्चर्य पैदा करता है।

[भारती चुपचाप कुछ सोचने लगती है। पद्मा उसकी ओर देखती है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

भारती—कृष्णवल्लभ जी पहले पहल वृजमोहन जी को देखने गये है ?

पद्मा—नही, एक दफ़ा उनकी बीमारी के शुरू में गये थे।

भारती—उस समय भाभी जी का क्या हाल था ?

पद्मा—इसके ठीक विपरीत । उस वक्त वृजमोहन जी की बीमारी उनके दिवस की चिन्ता और रात्रि का स्वप्न थी । उनकी दिनचर्या वृजमोहन जी के नजदीक बैठे बैठे चौबीसो घटे गुजारना था । डाक्टरो और नर्सों के रहते हुए वे ही उन्हे दवा देती थी, वे ही उनका टेम्प्रेचर लेती थी। वे ही अपने हाथो उनका सारा काम करती थी । तभी तो . . .तभी तो अब भाभी जी के व्यवहार से ताज्जुब होता है, । (**कुछ ठहर कर**) तुम्हे इससे अचम्भा नही होता, बहन ?

भारती—(गम्भीरता से) नही ।

पद्मा—नही ?

भारती—नही, बहन, बरदाश्त करने की भी हद्द होती है।

पद्मा—बरदाश्त की हद्द होती है ?

भारती—जरूर। सहन-शक्ति सीमा-रहित नही है ।

पद्मा—ऐसे मामलो मे भी ?

भारती—हरेक मामले मे ।

पद्मा—क्या कहती हो, बहन, क्या कहती हो ? पति बीमार हो, खाट पर पडा हो, उठने बैठने, हिलने डुलने की भी ताकत न हो और पत्नी इस तरह की वेष-भूषा करे, इस तरह के गुलछर्रे उडाये ! कहाँ गया भाभी जी का उनके प्रति प्रेम ? कहाँ गई भाभी जी की उनकी वह सेवा जो बीमारी के शुरू मे थी ?

भारती—तुम्हारी भाभी जी दो वर्षों तक उस तरह अपनी जिन्दगी नही बिता सकती थी जिस तरह उन्होने वृजमोहन जी की बीमारी के शुरू मे विताना आरम्भ किया था ।

पद्मा—तब तो शायद वे यह भी चाहती होगी कि वृज-मोहन जी का. . . .वृजमोहन जी का जीवन ही. . . . . जीवन ही समाप्त हो जाय ?

भारती—सम्भव है ।

पद्मा—(**उत्तेजना से**) वह स्त्री नही, सुना बहन, सच्ची स्त्री नही। पति की बीमारी मे, बीमार पति की सेवा मे, दो वर्ष नही अगर सारा जीवन भी बीत जाय तो स्त्री को रो धोकर नही, पर शान्ति से उसे बिता देना चाहिये ।

भारती—यह कहना जितना सरल है, करना उतना ही कठिन है ।

पद्मा—नई रोशनी की औरतो के लिये होगा, जिन्हे न धर्म पर विश्वास है और न भगवान पर भरोसा, जिनके लिये विवाह धार्मिक सस्कार नही पर एक इक़रारनामा है, जिनके एक जीवन मे ही एक नही अनेक शादियाँ हो सकती है, एक नही अनेक पति मिल सकते है ।

भारती—मैं समझती हूँ सभी के लिये ।

पद्मा—(**ताने से**) क्या अपने अनुभव से कहती हो ?

भारती—(**गम्भीरता से**) सोच सकती हो। (**कुछ**

ठहर कर) बहन, मै नई रोशनी की नही हूँ। विवाह को इकरारनामा न मान कर सच्चा धार्मिक सस्कार मानती हूँ। पति को अपना सर्वस्व मानती थी। जब उन्हे लकवा हुआ तब मै भी खाना, पीना, नीद, आराम सब कुछ छोड़कर उनकी सेवा मे दत्तचित्त हुई। उनकी बीमारी ही मेरी दिवस की चिन्ता और रात्रि का स्वप्न हो गई। वह मानसिक दशा बहुत दिन तक रही भी। वे तीन वर्ष तक बीमार रहे, पर आखिर आखिर मे मै भी ऊब उठी थी।

पद्मा—और तुम आखिर आखिर मे यह भी चाहने लगी थी कि उनका जीवन....उनका जीवन समाप्त हो जाय?

भारती—(कुछ सोचते हुए) कह नही सकती, जब उनकी तकलीफ बहुत बढी तब कई बार यह बात मन मे उठती थी कि उन्हे इतनी तकलीफ न सहना पडे तो ही अच्छा है, सम्भव है यह बात यथार्थ मे उनके लिये न उठकर, अपने ही छुटकारे के लिये उठती हो। बहन, तुम्हारी भाभी जी भी वृजमोहन जी की बीमारी के शुरू मे यह कभी न चाहती होगी कि उनका जीवन समाप्त हो जाय, उन्होने उनके अच्छे करने मे कोई बात उठा न रखी होगी, परन्तु जब उन्हे यह दीख पडने लगा होगा कि उनका अच्छा होना अब असम्भव है तब ...तब...

पद्मा—(क्रोध से) बहन, बहन, वह कुलटा होगी, वह

व्यभिचारिणी होगी । किसी भी हालत मे, किसी भी परिस्थिति मे, कोई हिन्दू स्त्री, कोई सच्ची हिन्दू पत्नी, अपने पति, अपने आराध्यदेव के सम्बन्ध मे ऐसी बात जाग्रत अवस्था मे तो क्या स्वप्न मे भी नही सोच सकती, चाहे उसका सारा जीवन नष्ट हो जाय, सारी जिन्दगी बर्बाद हो जाय ।

भारती—बहन, तुम जो कहती हो वह आदर्श है। अपने सारे सुखो की तिलाञ्जलि देकर कोई स्त्री अगर अपने को अपने पति में इस प्रकार विलीन कर सके, कोई प्रेमी यदि अपने निजत्व को अपने प्रेमी को इस प्रकार समर्पण मे दे सके तो वह मानवी नही देवी है, वह मनुष्य नही देवता है, लेकिन, बहन, यह मानव-मन . . . मानव-मन . . . मानव-मन . . . ।

[दोनों गम्भीरता से एक दूसरी की तरफ़ देखती है ।]

यवनिका-पतन

मुख्य दृश्य

स्थान—कृष्णवल्लभ के मकान मे उसके सोने का कमरा

समय—दोपहर

[कमरे के तीनों तरफ़ की दीवालें दिखती है जो आसमानी रंग से रंगी हुई है। पीछे की दीवाल में कई दरवाजे

और खिड़कियाँ है, जिनमें से उसके बाहर की बालकनी का कुछ भाग और बग़ीचे के दरख्तो का ऊपरी हिस्सा तथा आकाश दिखाई देता है, जिससे जान पड़ता है कि कमरा दुमंजिले पर है। दाहिनी तरफ़ की दीवाल में दो दरवाज़े और एक खिड़की है। इनमें से एक दरवाज़ा खुला हुआ है। इससे स्नानागार का कुछ हिस्सा दिखाई देता है। बाँई ओर की दीवाल में भी दो दरवाज़े और एक खिड़की है। इनमें से भी एक ही दरवाज़ा खुला है, जिससे नीचे जाने के ज़ीने का कुछ भाग दिखता है। दीवाल पर श्रीनाथ जी, यमुना जी, और श्रीकृष्ण की लीलाओ के कई चित्र लगे है। कमरे की छत से बिजली की बत्तियाँ और एक सीलिंग फ़ैन झूल रहे है। ज़मीन पर कालीन बिछा है, जिसके बीचों बीच चाँदी के पायो का एक पलंग बिछा है। पलंग के पास ही एक टेबिल रखी है। जिस पर दवा की शीशियाँ, थरमामीटर, एक टाइमपीस घड़ी, और नोट बुक इत्यादि रखी है। पलंग के आसपास कुछ कुर्सियाँ ओर कुछ टेबिलें और रखी है। पलंग पर कृष्णवल्लभ रुग्ण अवस्था में लेटा है। उसकी उम्र क़रीब ३० वर्ष की है। वह साधारण उँचाई और गोरे रंग का व्यक्ति है, पर बीमारी के कारण अत्यन्त कृश हो गया है। मुख पर पीलापन और आँखों के चारो तरफ कालिमा आ गई है। सिर के बाल अग्रेज़ी ढंग से कटे है और दाढ़ी मूँछ मुड़ी हुई है। वह गले तक एक ऊनी शाल

ओढ़े हुए है। उसीके नजदीक की एक कुर्सी पर पद्मा बैठी हुई है। पद्मा की वेष-भूषा एकदम सादी हो गई है। मस्तक की टिकली और उसके नीचे का चरणामृत उसी तरह लगा है जैसा उपक्रम में था। उसके मुख पर शोक और चिन्ता का साम्राज्य छाया हुआ है।]

कृष्णवल्लभ—(खांसकर) दो वर्ष हो गये न, प्रिये? दो वर्ष पहले की इसी महीने की इसी तारीख को पहले पहल बुखार आया था।

पद्मा—हां, प्राणनाथ, दो वर्ष हो गये।

कृष्णवल्लभ—वृजमोहन दो वर्ष से कुछ ही ज्यादा तो बीमार रहा?

पद्मा—आप न जाने क्या क्या सोचा करते हैं।

कृष्णवल्लभ—(**फिर खासते हुए**) क्यों, प्यारी, यह कैसे न सोचूँ? जो क्षय उसे था वही मुझे है, और वहाँ से लौटने के थोडे दिन बाद ही हो भी गया।

पद्मा—इससे क्या होता है, क्या इस बीमारी के रोगी अच्छे नही होते?

कृष्णवल्लभ—वृजमोहन तो नही हुआ और मै भी नही हो रहा हूँ।

पद्मा—आप हो जायँगे।

कृष्णवल्लभ—अभी भी तुम्हे आशा है? प्रिये, आशा की जगह न होते हुए भी कई दफ़ा मनुष्य आशा को मन

मे ठूँसने का बलात्कार करता है। इस तरह की आशा अपने आपको धोखा देने की कोशिश करना है। यह झूठी आशा है; अस्वाभाविक आशा है।

पद्मा—(ज़ोर से) क्या कहते है, नाथ, क्या कहते है, मुझे आशा नही विश्वास, पक्का विश्वास है, कि आप अच्छे हो जायँगे।

कृष्णवल्लभ—(**पद्मा की तरफ करवट लेकर खाँसते हुए**) और तो अच्छे होने के कोई आसार नही है, हाँ तुम्हारी तपस्या मुझे अच्छा कर दे तो दूसरी बात है।

[पद्मा कोई उत्तर नही देती। उसकी आँखों में आँसू भर आते हैं।]

कृष्णवल्लभ—प्यारी, तुम मानवी नही देवी हो। इन दो सालो मे तुमने मेरे लिये क्या नही किया, न पेट भर खाया, न नीद भर सोई, पूजा, पाठ, जप, दर्शन तक छोड दिये। चौबीसो घटे मेरे पलग के पास। कहाँ कहाँ ले जाकर मेरी आब-हवा बदलवाई। दो वर्ष के इस जीवन मे किसी प्रकार का भी, कोई भी, सुख किसे कहते है वह तुम नही जानती।

पद्मा—(**आँखों में आँसू भर कर**) आपके अच्छे होते ही मेरे सारे सुख दूने होकर लौट आयेगे।

कृष्णवल्लभ—(**इकटक पद्मा की ओर देखते हुए**) और, प्रिये, और, प्रिये, अगर मै अच्छा न हुआ तो?

पद्मा—यह कल्पना करने की भी बात नही है।

[कृष्णवल्लभ और पद्मा कुछ देर चुप रहते है। निस्तब्धता रहती है।]

कृष्णवल्लभ—**(अपने दुबले हाथ ऊनी चादर से बाहर निकालकर पद्मा का हाथ अपने हाथ मे लेते हुए)** प्राण-प्यारी, यह जानते हुए भी कि दुनिया मे सबसे निश्चित बात मरना है, कोई मरना नही चाहता। मै भी मृत्यु का आह्वान नहीं कर रहा हूं। मै जीना चाहता हूँ। तुम्हारे साथ वे सब सुख भोगने का इच्छुक हूँ जो दो वर्ष पहले प्राप्त थे। **(खाँसने के कारण चुप हो जाता है। कुछ ठहर कर)** सावन की उठती हुई घटाएँ और उनमे चमकती हुई बिजली, उन घटाओ का गर्जन और मन्द मन्द बरसती हुई फुहार, उसमे पपीहे की पीहू और मोर का केका तथा उस वायु-मण्डल मे तुम्हारे साथ झूलते हुए झूले की मुझे अब जितनी याद आती है उतनी स्वस्थ दशा मे कभी नही आती थी। **(खाँसी के कारण फिर चुप हो जाता है। कुछ ठहर कर)** वसन्त मे खिले हुए फूलो की रग बिरगी क्यारियाँ, उनके दर्शन और उनकी सुगन्ध, मन्थर गति से चलती हुई मलयानिल और कोकिल की कुहू और उस वातावरण मे हम दोनो की अठखेलियाँ, तथा गुलाल और अबीर की उड़ान का अब जितना स्मरण आता है उतना जब मै अच्छा था तब मुझे न आता था। **(खाँसते खाँसते**

फिर रुक जाता है। कुछ ठहर कर) प्राणेश्वरी, मै वे सारे सुख, सारे आनन्द फिर भोगना चाहता हूँ, लेकिन. . . लेकिन प्रिये, . **(चुप हो जाता है)**

पद्मा—(आँखें पोछते हुए) लेकिन कुछ नही, हृदयेश्वर, आपके अच्छे होते ही हम वे सुख फिर भोगेगे।

[कृष्णवल्लभ कोई उत्तर नही देता। थकावट के कारण पद्मा का हाथ छोड़कर आँखें बन्द कर लेता है।]

पद्मा—(खड़े होकर) क्यो, थकावट मालूम होती है ?

कृष्णवल्लभ—यो ही थोडी सी।

पद्मा—मैने कई दफा कहा आप ज्यादा न बोला करे।

कृष्णवल्लभ—तुमसे बोलकर, पुराने सुखो की याद कर, जो थोडा सा आनन्द मिल जाता है, उसे भी खो दूँ ?

[पद्मा कोई जवाब नही देती। कृष्णवल्लभ भी कुछ नही बोलता। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

कृष्णवल्लभ—प्रिये, एक बात जानती हो ?

पद्मा—क्या, नाथ ?

कृष्णवल्लभ—मेरे मन मे जब जब यह उठता है कि मै अच्छा न होऊँगा तब तब मेरे सामने एक चित्र खिंच जाता है।

पद्मा—आपके मन मे ऐसी बात ही नही उठनी चाहिये।

कृष्णवल्लभ—उसे न मै रोक सकता हूँ और न तुम। **(खाँसता है। कुछ रुककर)** मै तुमसे एक प्रार्थना करता हूँ।

पद्मा—प्रार्थना? प्राणेश्वर, आप हमेशा आज्ञा दे सकते है।

कृष्णवल्लभ—पर तुम मानती कहाँ हो?

पद्मा—मैं आपकी आज्ञा नही मानती?

कृष्णवल्लभ—और सब बातो मे मानती हो, पर एक मामले मे नही।

पद्मा—किस मे?

कृष्णवल्लभ—मेरे हृदय मे जो कुछ उठता है उसे नही सुनती। हमेशा मेरी बात पूरी होने के पहले मुझे रोक देती हो। नतीजा यह निकलता है कि कह सुन कर मन की निकाल लेने से जो शान्ति मिलती है उससे भी मै वञ्चित रह जाता हूँ।

पद्मा—तो आपकी वाहियात बातें भी सुना करूँ, उन बातो के बीच मे भी आपको न रोकूँ?

कृष्णवल्लभ—प्रिये, तुम अनुमान नही कर सकती, बीमार की कल्पनाओ का; तुम अनुभव नही कर सकती उस शान्ति का जो उसे उन कल्पनाओ को अपने सबसे बड़े प्रेमी, अपने सर्वस्व के सामने व्यक्त करने मे मिलती है।

पद्मा—(**लम्बी साँस लेकर**) अच्छी बात है हृदय पर पत्थर रखकर जो कुछ आप कहेंगे अब सब कुछ सुन लिया करूँगी।

कृष्णवल्लभ—(**कुछ ठहर कर**) मै तुम से कह रहा था

कि जब जब मेरे मन मे यह उठता है कि मै अच्छा न होऊँगा तब तब मेरे सामने एक चित्र खिंच जाता है। जानती हो किसका ?

पद्मा—वृजमोहन जी का होगा।

कृष्णवल्लभ—नही।

पद्मा—तब ?

कृष्णवल्लभ—भाभी का।

पद्मा—(उत्तेजित होकर) उस कुलटा का, उस पापिनी का, जिसने उनकी बीमारी मे भी अपने गुलछर्रे नही छोड़े, जिसने उनके मरते ही दूसरी शादी करने मे देर न की ?

कृष्णवल्लभ—प्रिये, भाभी न कुलटा थी और न पापिनी।

पद्मा—उससे बडी कुलटा और उससे बडी पापिनी न मैंने देखी और न सुनी है।

कृष्णवल्लभ—पहले मै भी ऐसा समझता था पर अब नही समझता।

पद्मा—तो अब आप उसे बड़ी साध्वी, बड़ी धर्मात्मा समझते है ?

कृष्णवल्लभ—कुलटा और पापिनी तो नही समझता। **(खाँसता है। कुछ रुककर)** एक बात और कहूँ ?

पद्मा—सब कुछ सुनने का तो मैंने वचन दे ही दिया है।

कृष्णवल्लभ—अगर तुम वैसी होती तो मुझे आज अपनी बीमारी का इतना दुख न होता।

पद्मा—(**आँखों में आँसू भर कर**) नाथ, आप यह क्या कह रहे हैं ? क्या कह रहे है ?

[**कृष्णवल्लभ कोई उत्तर न दे कर खाँसने लगता है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।**]

कृष्णवल्लभ—प्रिये, कभी कभी मुझे अपने से ज्यादा तुम्हारी चिन्ता हो जाती है। जब जब मेरे मन मे उठता है कि मै अच्छा न होऊँगा, तब तब मेरे जीने की इच्छा तो और प्रबल हो ही जाती है, तुम्हारे साथ भोगे हुए सुख भी याद आने लगते है, और उन्हे फिर से भोगने के लिये भी मै अधीर हो उठता हूँ, तुम्हे छोडकर जाना पड़ेगा शायद इसलिये जाने का मुझे इतना दु.ख होता है, पर इन सब बातो के सिवा जिस चीज़ से मै सबसे ज्यादा तलमला उठता हूँ, वह है तुम्हारी इस वक़्त की अवस्था, मेरे बाद तुम्हारा क्या होगा, इसकी कल्पना। काश तुम भी भाभी के समान हो जाती तो मै इस फिक्र से तो... ......

[**कृष्णवल्लभ को खाँसी का जोर से एटैक होता है। खाँसते खाँसते वह बैठ जाता है। पद्मा घबड़ाकर उसकी पीठ सुहलाती है। कुछ देर में उसकी खाँसी रुकती है और वह एकदम थककर लेट जाता है तथा आँखें बन्द कर लेता है। जीने से चढ़कर स्वच्छ वस्त्रों में एक मुनीम का प्रवेश।**]

मुनीम—श्रीनाथ द्वारे के समाधानी वहाँ के छप्पन भोग

का निमत्रण और श्रीनाथ जी का बीडा लेकर पधारे है। यही सेवा मे आना चाहते है।

कृष्णवल्लभ—(धीरे धीरे) मेरे बडे भाग्य! ऐसे वक्त श्रीनाथ जी का बीडा! उन्हे फौरन ले आइये, मुनीम जी।

मुनीम—जैसी आज्ञा। (प्रस्थान)

कृष्णवल्लभ—(धीरे धीरे) श्रीनाथ द्वारे मे छप्पन भोग है और मेरी बदकिस्मती तो देखो, मुझे ही दर्शन न होगे इतना ही नही, तुम भी न जा सकोगी।

[मुनीम के साथ समाधानी का प्रवेश। समाधानी करीब ५० वर्ष का ठिगना और मोटा आदमी है। शरीर पर लम्बी बगलबन्डी पहने है। सिर पर उदयपुरी पाग बाँधे है और गले में दुपट्टा डाले है। उसके हाथो में एक लिफाफा और वल्लभकुली बीड़ा है। कृष्णवल्लभ उठने का प्रयत्न करता है। पद्मा उसे सहारा देकर उठाती और पीछे तकिया लगाकर बैठाती है। वह समाधानी के हाथ जोड़ता है और खड़े होकर पद्मा भी।]

समाधानी—(नजदीक आते हुए) आयुष्मान, श्रीमान। सौभाग्य अचल होय, श्रीमती।

[नजदीक पहुँचकर समाधानी अपने हाथ का लिफाफ़ा और बीड़ा कृष्णवल्लभ के हाथों में देता है। कृष्णवल्लभ उन्हें सिर व आँखो से लगाकर हृदय से लगाता है और फिर टेबिल पर रख देता है। सब लोग कुर्सियों पर बैठते है।]

समाधानी—श्रीमान की अस्वस्था के समाचार सूँ महाराज श्री कूँ अत्यन्त खेद भयो। सो कूँ या हेतु पठयो है कि श्रीमान कूँ आशीर्वाद सहित छप्पन भोग को निमंत्रण देऊँ और निवेदन करूँ कि श्रीनाथ जी आगे सुधि करत हैं।

कृष्णवल्लभ—महाराज श्री के अनुग्रह के लिये कृतज्ञता के मेरे पास शब्द नहीं हैं, समाधानी जी। मुझ से तो उस घर के अनगिनती वैष्णव हैं और इतने पर भी महाराज श्री की मेरे पर यह कृपा! **(खाँसता है। कुछ रुककर)** समाधानी जी, महाराज श्री की इस अनुकम्पा से मुझे रोमांच हो रहा है।

समाधानी—आपके से अगणित वैष्णव! क्या कहे हैं, श्रीमान? आपसे तो आप ही हैं।

कृष्णवल्लभ—**(आँखों में आँसू भरकर)** कैसी मेरी बद-क़िस्मती कि जिस छप्पन भोग के दर्शन की अभिलाषा वर्षों से थी उसके मौक़े पर मेरा यह हाल है।

समाधानी—श्रीनाथ जी आपको शीघ्र स्वस्थ करिहैं। श्रीमान न पधार सकें तो श्रीमती जी।

कृष्णवल्लभ—**(पद्मा की तरफ़ देखकर)** ये....हाँ, ये ज़रूर जा सकती हैं। और अगर ये जायँ तो मुझे तो उससे जितनी खुशी होगी उतनी किसी दूसरी चीज से हो नहीं सकती। **(कुछ खाँसकर)** छप्पन भोग का क्या कार्य-क्रम है, समाधानी जी?

समाधानी—पहले वर्ष भर के उत्सवन के मनोरथ होयँगे और अन्त मे प्रभु छप्पन भोग आरोगेगे। (**पद्मा से**) श्रीमती जी, आप अवश्य पधारे। महाराज श्री ने आज्ञा करी है कि श्रीमान न पधार सके तो आपके पधारवे सूँ महाराज श्री कूँ परम हर्ष होयगो। आप पधारकर श्रीमान के स्वस्थ होयबे की प्रभु के सन्निधान मे प्रार्थना करे। श्रीनाथ जी श्रीमान कूँ शीघ्र ही स्वास्थ्य प्रदान करहिंगे।

[पद्मा कोई जवाब नही देती। कृष्णवल्लभ पद्मा की ओर देखता है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

कृष्णवल्लभ—(**मुनीम से**) मुनीम जी, समाधानी जी थके माँदे आये है। आपको अतिथि-आलय मे अच्छी तरह ठहराइए। महाराज की आज्ञा पर हम लोग विचार करेगे। (खाँसता है)

मुनीम—जैसी आज्ञा।

[मुनीम और समाधानी उठते है।]

कृष्णवल्लभ—आज शाम को फिर दर्शन देने की कृपा कीजियेगा।

समाधानी—जैसी आज्ञा, श्रीमान।

[कृष्णवल्लभ और पद्मा हाथ जोड़ते है। समाधानी हाथ उठाकर आशीर्वाद देता है। मुनीम और समाधानी का प्रस्थान। कृष्णवल्लभ खाँसता है और लेटने लगता है। पद्मा उठकर टिकने के तकिये हटा उसे सहारा देकर

लेटाती और फिर कुर्सी पर बैठती है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

कृष्णवल्लभ—प्रिये !

पद्मा—प्राणनाथ !

कृष्णवल्लभ—तुम्हारी जाने की इच्छा है ?

पद्मा—आपको इस हालत मे छोडकर ?

कृष्णवल्लभ—बहुत दिन का काम तो है नही।

पद्मा—लेकिन मै तो एक मिनिट के लिये भी आपको नही छोड़ सकती।

कृष्णवल्लभ—प्राणप्यारी, अर्धकुम्भ पर जब हम हरिद्वार न जा सके थे तब हमने कुम्भ पर जाने का निश्चय किया था। कुम्भ के मौके पर ही मै बीमार पडा। **(खाँसता है। कुछ ठहर कर)** तुम्हें बहुत समझाया तुम नही गईं। अब श्रीनाथ जी के छप्पन भोग का उत्सव है। हर दफ़ा ऐसे मौके नही आते।

पद्मा—लेकिन, प्राणनाथ, मै आपको कैसे छोड़ सकती हूँ ?

कृष्णवल्लभ—डाक्टर दोनों वक़्त आते है, तुम्हारी गैरहाज़िरी मे नर्स का इन्तज़ाम हो जायगा। श्रीनाथ जी का छप्पन भोग है, प्राणप्यारी, महाराज श्री ने कृपा कर समाधानी के हाथ निमन्त्रण भेजा है, श्रीनाथ जी ने सुधि ली है, महाराज श्री ने आज्ञा दी है।

[पद्मा कोई उत्तर नहीं देती। कृष्णवल्लभ खाँसता है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

कृष्णवल्लभ—पन्द्रह बीस दिन से ज्यादा नहीं लगेंगे, प्रिये।

[पद्मा फिर भी कोई उत्तर नहीं देती। कृष्णवल्लभ पद्मा की तरफ देखता है। कुछ देर फिर निस्तब्धता रहती है।]

कृष्णवल्लभ—प्रिये, मेरी एक प्रार्थना मानोगी?

पद्मा—फिर वही बात, नाथ? प्रार्थना? आप आज्ञा दें।

कृष्णवल्लभ—(खाँसकर) तो मैं आज्ञा देता हूँ, प्राण-प्यारी, तुम जाओ; श्रीनाथ द्वारे ज़रूर जाओ; ज़रूर।

[पद्मा कोई जवाब नहीं देती। उसकी आँखों में आँसू भर आते हैं।]

कृष्णवल्लभ—प्रिये, श्रीनाथ जी के सन्निधान में मेरे स्वस्थ होने के लिये, अपने सौभाग्य के लिये, प्रार्थना.... प्रार्थना करना, प्राणप्यारी। (आँसू भर आते हैं।)

[पद्मा रो पड़ती है। कृष्णवल्लभ को फिर जोर से खाँसी का एटैक होता है।]

यवनिका-पतन

उपसंहार

स्थान—कृष्णवल्लभ के मकान का बरामदा

समय—सन्ध्या

[दृश्य वैसा ही है जैसा उपक्रम में था। उदय होते हुए सूर्य के स्थान पर डूबते हुए सूर्य की किरणें बाहर के उद्यान को रंग रही हैं। एक तरफ़ पद्मा के दो सूट केस, होल्ड ऑल, टिफ़िन कैरियर, सुराही इत्यादि सामान बँधा हुआ रखा है। पद्मा अपने सामान को देख रही है। उसने फिर से रेशमी साड़ी, ब्लाउज़, रत्न जटित आभूषण धारण कर लिये हैं। उसका मुख प्रसन्न तो नहीं कहा जा सकता, लेकिन उसपर उस तरह का शोक और चिन्ता का साम्राज्य नहीं है, जैसा मुख्य दृश्य में था। भविष्य के सुख की एक प्रकार की उत्कण्ठा उसके मुख पर दीख रही है। भारती का प्रवेश। वह वैसी ही दिखती है जैसे उपक्रम में थी।]

पद्मा—(भारती के आने की आहट पाकर उस तरफ देख तथा भारती को आते हुए देखकर उसी तरफ़ बढ़ते हुए) ओ, भारती बहन, आओ, बैठो, बहन।

[भारती और पद्मा दोनो कुर्सियों पर बैठ जाती हैं।]

भारती—श्रीनाथ द्वारे जा रही हो, बहन?

पद्मा—(दाहिनी तरफ से बगीचे की ओर देखते हुए) हाँ, वहाँ छप्पन भोग का उत्सव है, वे मुझे भेज रहे हैं।

भारती—वे तुम्हे भजकर बिलकुल ठीक काम कर रहे है और तुम जाकर भी सर्वथा उचित बात कर रही हो।

पद्मा—(भारती की तरफ देखकर) ऐसा ?

भारती—बिलकुल। छप्पन भोग के अवसर पर तो वल्लभकुल सम्प्रदाय मे वर्ष भर के सभी उत्सवो के मनोरथ होते है न ?

पद्मा—हॉ !

भारती—तुम्हे और कृष्णवल्लभ जी को वर्षा और वसत बहुत प्रिय थे। श्रीनाथ द्वारे मे सावन का हिण्डोलोत्सव, वसन्त का फूलडोल, और भी अनेक उत्सवों के दर्शन, नित्य-प्रति होने वाले रास और गायन आदि से दृश्येन्द्रिय और श्रवणेन्द्रिय को तृप्ति मिलेगी। महाप्रसाद से जिह्वा को शान्ति प्राप्त होगी। अधिकाश इन्द्रियाँ सन्तुष्ट हो जाँयगी। हर तरह से मन बहलेगा। इहलोक और परलोक दोनो सुधरेगे।

पद्मा—(भर्राये हुए स्वर में) बहन....बहन....

भारती—बहन, बरदाश्त करने की भी हद होती है। सहन-शक्ति सीमा-रहित नही है। बीमार के साथ बिना किसी बीमारी के कोई बहुत दिन तक बीमार से भी बदतर हालत मे नही रह सकता। मृत के साथ जीवित अपने को मृत नही समझ सकता। आदर्श

की बात दूसरी है। बहन, मानव....मानव-मन...
यह मानव-मन......

यवनिका-पतन

समाप्त

मैत्री

पात्र, स्थान

पात्र

निर्म्मलचन्द्र

विनयमोहन

शान्तिप्रकाश

स्थान—एक नगर

मैत्री

उपक्रम

स्थान---निर्म्मलचन्द्र के मकान का बैठकख़ाना

समय---प्रात काल

[बैठकख़ाने के तीन तरफ़ की दीवालें दिखती है, जो सफेद कलई से पुती है। पीछे की दीवाल में तीन खिड़कियाँ है, जो खुली हुई है। इनसे बाहर के छोटे से बग़ीचे का कुछ हिस्सा दिखाई देता है, जो डूबते हुए सूर्य की सुनहरी किरणो से रंग रहा है। दोनों ओर की दीवालो के सिरे पर एक एक दरवाजा है। बाँई तरफ़ की दीवाल का दरवाजा एक दूसरे कमरे में खुला है, जिससे उसका कुछ भाग दिखाई देता है। इस कमरे में एक पलग तथा कुछ कुर्सियाँ, कपड़े टाँगने की खूँटियो का स्टैन्ड आदि रखे है, जिससे यह कमरा सोने का कमरा जान पड़ता है। दाहनी तरफ़ की दीवाल का दरवाजा बाहर के बग़ीचे में खुला है जिससे बग़ीचे का कुछ हिस्सा दीख पड़ता है। बैठकख़ाना की जमीन पर दरी बिछी हुई है। उसके ऊपर पीछे की दीवाल से सटा हुआ एक तख़त रखा है, जिस पर गद्दा बिछा है और उस पर

तकिये लगे हैं। बीच में एक गोल टेबिल है, जो टेबिल क्लाथ से ढकी है। इस टेबिल के चारो ओर बेत से बुनी हुई कुछ कुर्सियाँ रखी है। ठकजाने की सीलिंग से बिजली की दो बत्तियाँ झूल रही हैं। मकान और मकान की सजावट देखने से जान पड़ता है कि मकान किसी मध्यम श्रेणी के व्यक्ति का है। तख्त पर निर्मलचन्द्र और विनयमोहन बैठे हुए है। दोनो की अवस्था करीब २४, २५ वर्ष की है। रंग दोनो का गेहुआ है। दोनो साधारण ऊँचाई और शरीर के व्यक्ति है। दोनों के बाल अंग्रेजी ढग से कटे है। निर्म्मलचन्द्र के छोटी छोटी मूँछें है और विनयमोहन है क्लीनशेव्ड। दोनो सफेद कुरता और धोती पहने हुए है।]

निर्म्मलचन्द्र—विनय!

विनयमोहन—निर्म्मल!

निर्म्मलचन्द्र—क्यो, विनय, अब तक की अपनी जिन्दगी के लिये तो हम दोनो अंग्रेजी के इस सेन्टेन्स का उपयोग कर सकते है न—'आवर लाइफ इज ए रैग्युलर फीस्ट।'

विनयमोहन—बेशक। और, निर्म्मल, इसका सबब?

निर्म्मलचन्द्र—हमारा साथ।

विनयमोहन—और उसमे निर्म्मल की निर्म्मलता।

निर्म्मलचन्द्र—विनय की विनय नही?

विनयमोहन—निर्म्मलता बिना विनय नही रह सकती।

निर्म्मलचन्द्र—विनय बिना निर्म्मलता नही।

विनयमोहन—(मुस्कराकर) निर्म्मल और विनय एक दूसरे के बिना रह ही नही सकते।

[दोनो हँस पड़ते है।]

निर्म्मलचन्द्र—क्यो, विनय, ऐसी मैत्री कही देखी?

विनयमोहन—देखी क्या, सुनी भी नही।

निर्म्मलचन्द्र—सुनी क्या, कही के लिटरेचर तक में नही पढी।

विनयमोहन—हम लोगो ने अपनी मैत्री की तारीफ कितनी दफा की होगी?

निर्म्मलचन्द्र—हमे इससे जितना आनन्द मिलता है उतना किसी दूसरी बात से मिलता ही नही।

विनयमोहन—गनीमत यही है कि किसी दूसरे के सामने हम यह नही करते।

निर्म्मलचन्द्र—दूसरे कर देते है, इसलिये हमे इसकी ज़रूरत ही नही पडती।

[दोनो फिर हँस पड़ते है।]

विनयमोहन—तुम्हे यह चौबीसवाँ साल है न?

निर्म्मलचन्द्र—जो तुम्हे है वही मुझे।

विनयमोहन—और हमारे साथ को हो गये बीस वर्ष।

निर्म्मलचन्द्र—चौबीस हो गये यह भी कह सकते हो।

विनयमोहन—यो तो फिर सैकडो, हज़ारो, लाखो और करोडो कहने पड़ेगे।

निर्म्मलचन्द्र—हा, क्योकि अगणित जन्मो के साथ बिना ऐसी मैत्री कब हो सकती है ।

विनयमोहन—जो कुछ हो, जब से होश है, तभी से संग है ।

निर्म्मलचन्द्र—और वह ऐसा वैसा नही, चौबीसो घन्टो का ।

विनयमोहन—निर्म्मल, हमारी बालक्रीडा, हमारे स्कूल और कालेज के दिन, आज तक का सारा जीवन हमारी निधि है ।

निर्म्मलचन्द्र—मैने कहा न 'आवर लाइफ इज़ ए रैग्युलर फीस्ट ।'

विनयमोहन—और, निर्म्मल, जिन बातो की मुझमे कमी है, वे तुम मे है और जिनकी तुम मे कमी है वे मुझ मे है ।

निर्म्मलचन्द्र—सच तो यह है कि हम दोनो मिलकर एक होता है ।

विनयमोहन—अब तक हमारे जीवन का सुख, हमारी सफलता सब कुछ हमारे साथ, हमारी मैत्री के कारण है ।

निर्म्मलचन्द्र—और हमारा भविष्य भी इसी पर निर्भर है ।

विनयमोहन—हाँ, दुनिया के संघर्ष में तो अब हमारा प्रवेश होगा ।

निर्म्मलचन्द्र—उस संघर्ष में अपने और अपने देश के उत्कर्ष के लिये यही मैत्री, यही साथ, हमारा ध्रुव नक्षत्र होगा।

[दोनों कुछ देर को चुप हो जाते हैं।]

निर्म्मलचन्द्र—एक बात जानते हो, विनय?

विनयमोहन—क्या, निर्म्मल?

निर्म्मलचन्द्र—चीन के महापुरुष कन्फ्यूशियस का एक उपदेश आज तक मेरे सामने रहा है और भविष्य में भी रहेगा।

विनयमोहन—कौनसा?

निर्म्मलचन्द्र—'दिन में तीन बार अपने आपको जाँच कर देखो कि तुमने अपने सच्चे मित्र के लिये सचाई और ईमानदारी से सब कुछ किया है या नहीं।'

विनयमोहन—और जानते हो मेरे सामने क्या रहा है और रहेगा?

निर्म्मलचन्द्र—क्या?

विनयमोहन—किसी देश की एक प्रावर्ब।

निर्म्मलचन्द्र—कौनसी?

विनयमोहन—'जिस प्रकार अग्नि को प्रज्वलित रखने के लिये ईंधन की ज़रूरत रहती है उसी तरह मैत्री रूपी अग्नि को जीवित रखने के लिये मित्र के प्रति त्याग रूपी आहुति की।'

निर्म्मलचन्द्र—(विनयमोहन की तरफ एक टक देखते हुए गद गद स्वर से) विनय!

विनयमोहन—(उसी प्रकार एक टक निर्म्मलचन्द्र की ओर देखते हुए) निर्म्मल!

यवनिका-पतन

मुख्य दृश्य

स्थान—निर्म्मलचन्द्र के मकान का बैठकखाना

समय—सन्ध्या

[दृश्य वैसा ही है जैसा उपक्रम में था। कमरे का सब सामान करीब करीब वैसा ही है। दीवालो पर कांग्रेस नेताओ के चित्र लग गये है। निर्म्मलचन्द्र और विनयमोहन तख़्त पर बैठे हुए है। अब दोनो खादी के कुरते और धोती पहने हुए है। दोनो की अवस्था कुछ बढ गई है, जो उनकी बढ़ी हुई मूँछो से मालूम होती है। दोनो के मुख पर अशान्ति दृष्टिगोचर होती है। निर्म्मलचन्द्र खिड़की से बाहर बगीचे की तरफ़ देख रहा है और विनयमोहन दाहनी ओर की दीवाल के दरवाजे से बाहर की तरफ़। कुछ देर निस्तब्धता रहती है। कुछ देर बाद विनयमोहन खड़े होकर दाहनी तरफ़ के दरवाजे की ओर जाता है। निर्म्मलचन्द्र विनयमोहन की

तरफ देखता है। विनयमोहन कुछ देर उस दरवाजे पर खडे खड़े बाहर की तरफ़ देखता है फिर लौटकर अपने स्थान पर बैठ जाता है। निर्म्मलचन्द्र उसके लौटते ही उसकी तरफ़ से दृष्टि हटा कर फिर खिड़की से बाहर की ओर देखने लगता है।]

निर्म्मलचन्द्र—(बाहर की तरफ देखते हुए) क्यो, विनय, प्रतीक्षा का टाइम निकालने मे इतनी मुश्किल पड रही है?

विनयमोहन—(दाहनी तरफ के दरवाजे की तरफ़ ही देखते हुए) नही, ऐसी तो कोई बात नही है।

[दोनो फिर चुप हो जाते है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

विनयमोहन—(निर्म्मलचन्द्र की ओर दृष्टि घुमाकर) हम लोगो की बातचीत तो कभी खत्म ही न होती थी, आज हो गई क्या?

निर्म्मलचन्द्र—(विनयमोहन की तरफ़ देखकर) हमारी बात कभी खत्म हो सकती है?

विनयमोहन—फिर चुप क्यो हो?

निर्म्मलचन्द्र—(फिर खिड़की से बग़ीचे की तरफ देखते हुए) और तुम तो बहुत बोल रहे हो?

[विनयमोहन कोई उत्तर न देकर फिर दाहनी तरफ़ की दीवाल के दरवाजे से बाहर की ओर देखने लगता है। कुछ देर फिर निस्तब्धता रहती है।]

निर्म्मलचन्द्र—विनय, एक बात पूछूँ?

विनयमोहन—(निर्म्मलचन्द्र की तरफ देखते हुए) यह पूछने की ज़रूरत है?

निर्म्मलचन्द्र—(विनयमोहन की ओर दृष्टि घुमा) तुम इतने अधीर क्यो हो?

विनयमोहन—मै अधीर हूँ?

निर्म्मलचन्द्र—क्या मै तुम्हे इतने वर्षों के बाद इतना भी नही पहचान पाया हूँ?

विनयमोहन—और तुम वैसे ही हो, जैसे हमेशा रहते थे?

निर्म्मलचन्द्र—नही, मै भी वैसा नही हूँ, पर तुमसा अधीर भी नही।

विनयमोहन—तो हम दोनो ही जैसे थे वैसे नही है, यह तो निश्चित हो गया।

निर्म्मलचन्द्र—सच बात को मजूर करना ही चाहिये।

विनयमोहन—और इसका सबब?

निर्म्मलचन्द्र—म्युनिस्पैलटी की प्रेसीडेन्टी का चुनाव, क्यों?

[दोनों फिर चुप हो जाते हैं। कुछ देर तक निस्तब्धता रहती हैं।]

निर्म्मलचन्द्र—मानते हो न?

विनयमोहन—तुमने कहा न, सच बात को मजूर करना ही चाहिए।

निर्म्मलचन्द्र—धन्यवाद।

विनयमोहन—मुझे धन्यवाद !

निर्म्मलचन्द्र—(**कुछ मुस्कराकर**) अच्छा, भाई, वापस लेतां हूँ।

विनयमोहन—(**मुस्कराकर**) धन्यवाद।

निर्म्मलचन्द्र—(**मुस्कराकर**) बदला लेते हो! (**कुछ रुक कर**) खैर। (**फिर कुछ रुककर**) क्यो, विनय, तुम यह जानते हो कि या तो मै प्रेसीडेन्ट चुना जाऊँगा या तुम, फिर भी तुम इतने अधीर क्यो हो ?

विनयमोहन—और तुम भी यह बात जानते हो, फिर तुम भी वैसे ही क्यो नही हो जैसे हमेशा रहते थे ?

निर्म्मलचन्द्र—मै ? . .मै (**कुछ रुककर विचार करते हुए**) मै शायद इसलिये वैसा नही हूँ कि अगर मैं चुन गया और तुम न चुने गये तो . .तो तुम्हे. . . तुम्हें किसी तरह की .किसी तरह की ठेस. . .ठेस तो नही पहुँचेगी !

विनयमोहन—तुम्हारे चुने जाने पर मुझे ठेस पहुँचेगी ! निर्म्मल, तुम मेरे साथ अन्याय, घोर अन्याय, कर रहे हो।

निर्म्मलचन्द्र—हो सकता है। अच्छा अब तुम बताओ कि तुम इतने अधीर क्यो हो ?

विनयमोहन—मै ? (**कुछ विचार करते हुए**) मै भी शायद इसीलिये इतना अधीर हूँ कि कही मै चुन लिया गया और

तुम न चुने गये तो तुम्हारे हृदय पर तो कोई चोट न लगेगी ?

निर्म्मलचन्द्र—तो तुम भी मेरे साथ उसी तरह का अन्याय कर रहे थे जैसा मैं तुम्हारे साथ।

विनयमोहन—तो हम दोनो ने एक दूसरे के साथ अन्याय किया ?

निर्म्मलचन्द्र—घोर अन्याय !

विनयमोहन—इस पाप का प्रायश्चित्त ?

निर्म्मलचन्द्र—प्रायश्चित्त ? **(कुछ विचारकर)** यही प्रायश्चित्त है कि जो न चुना जाय वह यह सोचे कि जो चुना गया है, वह नही, पर यथार्थ मे जो नही चुना गया है, वह चुना गया है।

विनयमोहन—**(गद गद स्वर से)** निर्म्मल, तुमने सच्चा प्रायश्चित्त बताया।

निर्म्मलचन्द्र—विनय, तुम मे और मुझ मे अभी भी कोई अन्तर रह गया है ?

विनयमोहन—कदापि नही।

निर्म्मलचन्द्र—हम दोनो एक प्राण दो देह है।

विनयमोहन—अवश्य।

निर्म्मलचन्द्र—ऐसी मैत्री कही देखी ?

विनयमोहन—देखी क्या सुनी भी नही।

निर्म्मलचन्द्र—सुनी क्या, कही के लिटरेचर तक मे नही पढ़ी।

विनयमोहन—'श्रावर लाइफ इज़ ए रेग्युलर फीस्ट।'

निर्म्मलचन्द्र—श्राफ कोर्स, 'श्रावर लाइफ इज़ ए रेग्युलर फीस्ट।'

विनयमोहन—(एकटक निर्म्मलचन्द्र की श्रोर देखते हुए गद गद स्वर से) निर्म्मल!

निर्म्मलचन्द्र—(उसी तरह विनयमोहन की तरफ देखते हुए) विनय!

[शान्तिप्रकाश का दाहनी तरफ़ के दरवाजे से प्रवेश। शान्तिप्रकाश करीब ४० वर्ष का सॉवले रंग का कुछ ठिंगना श्रौर मोटा श्रादमी है। वह खादी की काले रंग की शेरवानी श्रौर खादी का सफेद चूड़ीदार पाजामा पहने है। सिर पर गान्धी टोपी श्रौर पैरो में फ़ीतेदार शू है। उसे देखकर निर्म्मलचन्द्र श्रौर विनयमोहन दोनो खड़े हो जाते है। दोनों के मुखो पर फिर से श्रशान्ति दिखाई देने लगती है। दोनो, दोनो हाथो से शान्तिप्रकाश का श्रभिवादन करते है। शान्तिप्रकाश भी हाथ जोड़ता है। श्रौर तीनों तख़्त पर बैठते है।]

निर्म्मलचन्द्र—कहिये, पार्टी ने क्या निर्णय किया?

शान्तिप्रकाश—(मुस्कराते हुए) श्राप दोनो तो चले श्राये।

विनयमोहन—हाँ, हम लोगो का पर्सनल सवाल था। इसलिये हमने न ठहरना ही मुनासिब समझा।

शान्तिप्रकाश—ठीक ही था। (कुछ रुककर) आपको पार्टी का निर्णय सुनकर शायद ताज्जुब होगा।

निर्म्मलचन्द्र
विनयमोहन —(एक साथ ही अधीरता से)—कैसा ?

शान्तिप्रकाश—(मुस्कराकर) पार्टी ने निश्चय किया है कि चूंकि आप दोनो की सेवाये एक सी है, इसलिये पार्टी आप दोनो को समान दृष्टि से देखती है, और दोनो मे से प्रेसीडेन्ट कौन हो, इसका निर्णय आप दोनो पर ही छोडती है।

निर्म्मलचन्द्र
विनयमोहन —(एक साथ ही) यह कैसे हो सकता है ?

शान्तिप्रकाश—क्यो, आप दोनो आपस मे तय कर ले और एक नाम पार्टी के पास भेज दे। मै तो समझता हूँ, बडी सरलता से निर्णय हो जायगा। आप दोनो को इसके निपटारा करने मे क्या दिक़्क़त हो सकती है ?

[निर्म्मलचन्द्र और विनयमोहन कुछ न कहकर एक दूसरे की तरफ़ देखते हैं और शान्तिप्रकाश कभी निर्म्मलचन्द्र की ओर तथा कभी विनयमोहन की तरफ। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

शान्तिप्रकाश—कल प्रातःकाल नौ बजे फिर पार्टी की मीटिंग है, आपका निर्णय पार्टी के पास उस वक़्त तक पहुँच जाना चाहिए।

निर्म्मलचन्द्र—(कुछ विचारते हुए) लेकिन शान्तिप्रकाश जी . . (चुप हो जाता है।)

विनयमोहन—(कुछ विचारते हुए) हाँ, शान्तिप्रकाश जी (चुप हो जाता है।)

शान्तिप्रकाश—(खड़े होते हुए) मुझे इस वक्त इजाज़त दीजिए, जिससे आप दोनो को एकान्त मे इस निर्णय करने के लिये समय मिल सके।

[निर्म्मलचन्द्र और विनयमोहन खड़े हो जाते है। शान्तिप्रकाश दोनों का अभिवादन कर जाने लगता है। दोनों बिना एक शब्द भी कहे उसे दरवाजे तक पहुँचाते और अभिवादन के साथ उसे रुख़सत कर धीरे धीरे वापस आ तख़्त पर बैठते है। दोनों में से एक, एक खिड़की से और दूसरा दूसरी खिड़की से बग़ीचे की तरफ देखने लगता है। कोई कुछ नही बोलता, परन्तु दोनों के मुखो से जान पड़ता है कि उनके हृदयों में तूफान का समुद्र लहरा रहा है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

निर्म्मलचन्द्र—विनय !

[विनयमोहन चौकसा पड़ता है मानो उसे किसी अपरिचित व्यक्ति ने सोते से जगाया हो।]

विनयमोहन—(भर्राये हुए स्वर में) हाँ, निर्म्मल।

निर्म्मलचन्द्र—अरे तुम तो चौक पड़े ?

विनयमोहन—(उसी प्रकार के स्वर में) नही तो।

[दोनों फिर चुप हो जाते हैं। कुछ देर फिर निस्तब्धता रहती है।]

विनयमोहन—निर्म्मल!

[इस बार निर्म्मलचन्द्र चौंक पड़ता है, मानो उसे किसी ने डरा दिया हो।]

निर्म्मलचन्द्र—(भर्राये हुए स्वर में) हां, विनय।

विनयमोहन—इस बार तुम चौंक पड़े, निर्म्मल।

निर्म्मलचन्द्र—(उसी स्वर में) ऐसा?

विनयमोहन—अवश्य।

[दोनों फिर चुप हो जाते हैं। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

निर्म्मलचन्द्र—(विनयमोहन की तरफ़ देखकर) देखो।

विनयमोहन—(थोड़ासा चौंकते हुए, निर्म्मलचन्द्र की ओर देख) कहो।

निर्म्मलचन्द्र—(अत्यन्त दबे हुए स्वर से) प्रेसीडेन्ट होना तुम मंजूर करो।

विनयमोहन—मैं? क्यों? तुम क्यों नहीं?

निर्म्मलचन्द्र—और मैं क्यों, तुम क्यों नहीं?

[दोनों फिर चुप रह जाते हैं और खिड़कियों से बाहर की तरफ देखने लगते हैं। फिर कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

विनयमोहन—(निर्म्मलचन्द्र की ओर देखकर) एक बात पूछूँ, निर्म्मल?

निर्म्मलचन्द्र—यह पूछने की आवश्यकता है ?

विनयमोहन—यह पद तुमने मुझे इतने दबे हुए स्वर से क्यो ऑफर किया ?

निर्म्मलचन्द्र—(**विनयमोहन की तरफ दृष्टि घुमाकर अपने स्वाभाविक स्वर में बोलने का प्रयत्न करते हुए**) दबे हुए स्वर से ?

विनयमोहन—क्या मै इतनी सालो के बाद तुम्हारा स्वर भी नही पहचानता ?

[**निर्म्मलचन्द्र कोई उत्तर नहीं देता। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।**]

विनयमोहन—निर्म्मल, तुम्हे मेरा अधैर्य खला था। जब मैंने तुमसे कहा कि तुम भी वैसे नही हो जैसे थे, और उसका कारण पूछा, तब तुमने कहा कि तुम शायद इसलिये वैसे नही हो कि अगर तुम चुन लिये गये और मै न चुना गया तो मेरे मन पर ठेस न पहुँचे। क्या मै पूछूँ कि मुझे प्रेसीडेन्टी ऑफर करते हुए तुम्हे इतना दुख क्यो हो रहा है ?

निर्म्मलचन्द्र—तुम्हे प्रेसीडेन्टी ऑफर करते हुए मुझे दुख हो रहा है ?

विनयमोहन—(**कठोर स्वर से**) तुम इस बात से इन्कार नही कर सकते।

निर्मलचन्द्र—(**कुछ ठहर कर घृणा भरे स्वर से**) तो क्या मैं भी पूछूँ कि पार्टी ने किसे प्रेसीडेन्ट चुना, और तुम्हे

चुना या नही, यह जानने के लिये तुम इतने अधीर क्यो थे ?

विनयमोहन—(दृढ़ता से) मै क्यो अधीर था और क्यों नही, इसका फैसला हो चुका है, लेकिन तुम्हारे प्रस्ताव मे क्यो दुख था, इसका निर्णय होना बाकी है ।

[निर्म्मलचन्द्र कोई उत्तर नही देता और खिड़की से बाहर की तरफ देखने लगता है। विनयमोहन निर्म्मलचन्द्र की ओर देखता है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है ।]

निर्म्मलचन्द्र—**(विनयमोहन की तरफ़ देखते हुए)** मेरे ऑफ़र मे क्यो दुख था, यह जानना चाहते हो ?

विनयमोहन—अवश्य ।

निर्म्मलचन्द्र—(दृढ़ता से) इसलिये कि मेरे प्रेसीडेन्ट होने से तुम्हे दुख होता, इसलिये कि तुम प्रेसीडेन्ट होने के लिये प्राण दे रहे हो ।

विनयमोहन—(क्रोध से) इसलिये नही, इसलिये कि मैं अगर प्रेसीडेन्ट हो गया तो तुम न हो पाओगे ।

निर्म्मलचन्द्र—(अत्यन्त क्रोध से) विनय !

विनयमोहन—**(और भी अधिक क्रोध से)** निर्म्मल !

[दोनों एक साथ लम्बी साँस लेकर खिड़कियों से बाहर देखने लगते है। कुछ देर फिर निस्तब्धता रहती है।]

निर्म्मलचन्द्र—**(बाहर की तरफ़ ही देखते हुए) एक** बात जानते हो ?

विनयमोहन—क्या ?

निर्म्मलचन्द्र—(अत्यन्त घृणा से) तुम मे इतने दोष है कि तुमसे प्रेसीडेन्टी एक दिन न चलेगी।

विनयमोहन—(और भी अधिक घृणा से) और तुम्हारे दोषो की तो गिनती ही नही है। तुमसे तो वह एक क्षण नही चल सकती।

निर्म्मलचन्द्र—(अत्यन्त क्रोध से चिल्लाकर) बस, विनय, बहुत हुआ।

विनयमोहन—(और भी ज्यादा क्रोध से गरजकर) मैंने भी बहुत बर्दाश्त कर ली।

[दोनो फिर चुप हो जाते है। और लम्बी साँसें लेने लगते है।]

विनयमोहन—(एकाएक खड़े होकर) अपने रूफ के अन्डर आपने मेरा काफी अपमान किया है। मै अब आपसे इजाजत चाहता हूँ।

[निर्म्मलचन्द्र कोई उत्तर नही देता और विनयमोहन जल्दी जल्दी दाहनी तरफ के दरवाजे से चला जाता है।]

यवनिका-पतन

उपसंहार

स्थान—निर्म्मलचन्द्र के मकान का बैठकखाना

समय—प्रातःकाल

[दृश्य वैसा ही है जैसा मुख्य दृश्य में था। निर्म्मलचन्द्र अकेला तख़्त पर बैठा हुआ ग़ौर से एक चिट्ठी पढ़ रहा है। विनयमोहन का एक चिट्ठी हाथ में लिये हुए प्रवेश।]

विनयमोहन—निर्म्मल, मै तुमसे क्षमा मागने आया हूँ।

निर्म्मलचन्द्र—(खड़े होकर) और मै तुमसे माफी मॉगने आ रहा था, विनय।

[दोनों तख़्त पर बैठ जाते हैं।]

विनयमोहन—(अपने हाथ की चिट्ठी निर्म्मलचन्द्र को देते हुए) इस चिट्ठी को पढोगे ?

निर्म्मलचन्द्र—(अपने हाथ की चिट्ठी विनयमोहन को देते हुए) और तुम इस चिट्ठी को देखोगे ?

[विनयमोहन निर्म्मलचन्द्र की चिट्ठी ले लेता है और निर्म्मलचन्द्र विनयमोहन की। दोनों चिट्ठियो को पढ़ते हैं चिट्ठियों को पढ़ने के बाद एक साथ।]

निर्म्मलचन्द्र—विनय !

विनयमोहन—निर्म्मल !

निर्म्मलचन्द्र—विनय, भगवान को साक्षी देकर कहता हूँ कि मै प्रेसीडेन्ट नही होना चाहता, और जैसा मैने पार्टी को अपनी चिट्ठी मे लिखा है, मै हृदय से चाहता हूँ कि यह पद तुम्हें मिले।

विनयमोहन—और, निर्म्मल, मै भी भगवान को साक्षी देकर कहता हूँ कि मै भी प्रेसीडेन्ट नही होना चाहता, और

जैसा मैंने पार्टी को अपने पत्र मे लिखा है, मै अन्त करण से चाहता हूँ कि यह पद तुम सुशोभित करो।

निर्म्मलचन्द्र—ऐसा कभी नही हो सकता।

विनयमोहन—तो जो तुम चाहते हो वह भी कभी नही हो सकता।

निर्म्मलचन्द्र—मेरा कहना नही मानोगे?

विनयमोहन—और तुम मेरा कहना न मानोगे?

निर्म्मलचन्द्र—जिद्द न करो।

विनयमोहन—तुम भी हठ न करो।

निर्म्मलचन्द्र—विनय!

विनयमोहन—निर्म्मल!

[दोनो चुप होकर एक दूसरे को देखते है।]

निर्म्मलचन्द्र
विनयमोहन } —(एक साथ) तब?

[कुछ देर फिर दोनो चुप रहते है।]

निर्म्मलचन्द्र
विनयमोहन } —(एक साथ) तुम्हे मजूर करना ही होगा।

[कुछ देर फिर दोनो चुप रहते है।]

निर्म्मलचन्द्र—देखो, विनय, मै अपने सम्बन्ध को इस प्रेसीडेन्टशिप से कही बडी चीज समझता हूँ।

विनयमोहन—और मै यह प्रेसीडेन्टशिप तो दूर रही, भारतीय साम्राज्य की प्रेसीडेन्टी, और भारतीय साम्राज्य

की प्रेसीडेन्टी भी दूर रही, अगर सारे ससार का फैडरेशन बने और उसकी प्रेसीडेन्टी मिले तो, उससे भी अपनी मैत्री को बडी चीज समझता हूँ।

निर्म्मलचन्द्र—क्षणिक आवेश की बात दूसरी है, मै इसे जानता हूँ, विनय।

विनयमोहन—जो तुमने कहा मै उसे दुहराता हूँ, निर्म्मल।

निर्म्मलचन्द्र—इसीलिये जो कुछ कल हुआ उसे देखते हुए मैं इस पद को कभी मजूर नही कर सकता।

विनयमोहन—तुमने मेरे मुख के शब्द छीन लिये। और मै कर सकता हूँ?

[दोनो चुप रहते हैं। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

निर्म्मलचन्द्र—विनय!

विनयमोहन—निर्म्मल!

[फिर दोनों चुप हो जाते है।]

निर्म्मलचन्द्र—विनय, एक प्राण होते हुए भी हमारी ... हमारी दो देह अवश्य हैं।

विनयमोहन—इसीलिये हम प्रेम का आनन्द भोग सकते हैं।

निर्म्मलचन्द्र—और लोलुपता का दुःख भी।

विनयमोहन—जो पद हमें लोलुपता के नजदीक ले जा सकता है.........

निर्म्मलचन्द्र—जो हम मे एक दूसरे से स्पर्द्धा, और स्पर्द्धा ही नही, ईर्षा की उत्पत्ति कर सकता है।

विनयमोहन—जो हमसे एक दूसरे के सामने झूठ बुलवा सकता है ....

निर्म्मलचन्द्र—जो हमे एक दूसरे के लिये क्रोध पैदा करा सकता है.........

विनयमोहन—जो हम से एक दूसरे के लिये अपशब्द बुलवा सकता है ....

निर्म्मलचन्द्र—जो हमे एक दूसरे के दोष दिखाकर एक दूसरे के लिये यह कहला सकता है कि....

विनयमोहन—कि तुमसे प्रेसीडेन्टी एक दिन न चलेगी.. .

निर्म्मलचन्द्र—एक क्षण न चलेगी . .

विनयमोहन—निर्म्मल, हमने एक दूसरे का उसके गुणो की अपेक्षा उसके दोषो के सबब अधिक प्यार किया है.... .

निर्म्मलचन्द्र—और .. और वे ही दोष, जिस पर लोलुपता के कारण हमे एक दूसरे के प्रति घृणा की ओर अग्रसर कर सकते है, उस पद को ... . .

विनयमोहन
निर्म्मलचन्द्र } —(एक साथ) हम दोनों मजूर नही कर सकते।

[दोनों फिर चुप हो जाते है।]

विनयमोहन—लिखो पार्टी को, दूसरी चिट्ठी।

निर्म्मलचन्द्र—सयुक्त, फौरन।

विनयमोहन—हम दोनो साधारण नागरिक रह कर भी अपना, समाज, देश और विश्व का उत्कर्ष कर सकते है।

निर्म्मलचन्द्र—और अपने प्रेम के द्वारा विश्व से प्रेम करना सीख उसकी सेवा कर सकते है।

विनयमोहन—(गद गद स्वर से निर्म्मलचन्द्र की ओर एक-टक देखते हुए) निर्म्मल!

निर्म्मलचन्द्र—(उसी तरह विनयमोहन को देखते हुए उसी स्वर से) विनय!

यवनिका-पतन

समाप्त